प्रकाशकीय

हमारे लोकजीवन में बहुत-सी मूल्यवान सामग्री जगह-जगह बिखरी ड़ी है। यदि उसका विधिवत् संग्रह किया जाय तो निस्सन्देह उससे मारे साहित्य की बहुत ही वृद्धि होगी।

इस माला का श्रीगणेश हमने यही सोचकर किया है कि हिन्दी के ाठकों को सुन्दर, सुरुचिपूर्ण तथा मनोरंजक लोककथाएँ प्राप्त हों। ली पुस्तक में हमने बुन्देलखण्डी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, निमाड़ी, मालवी, ग्रवधी, मगही, बाघेली, भोजपुरी, मैथिली, राजस्थानी तथा गढ़वाली ी बारह कहानियाँ मूल भाषा के साथ हिन्दी में दी हैं। दूसरे संग्रह में ज की लोककथाएँ, तीसरे में बुन्देलखण्डी की, चौथे में मालवी की, ौर पाँचवें में मैथिली की दी गई हैं। इस प्रकार एक-एक भाषा का क-एक स्वतन्त्र संग्रह इस माला में पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया ायगा। पाठक मूल भाषा का भी आनन्द ले सकें, इसलिए प्रत्येक संग्रह ; अन्त में एक-एक कहानी मूल भाषा में दे दी गई है।

हमें प्रसन्नता है कि इस माला की सभी पुस्तकों का बड़ा अच्छा ागत हुआ है। लोक-साहित्य के मर्मज्ञों ने तो उन्हें पसन्द किया ही , सामान्य पाठकों ने भी उन्हें सराहा है। हम आशा करते हैं कि यह था आगे निकलनेवाले संग्रह भी पाठकों को रुचिकर एवं मनोरंजक तीत होंगे और वे इस माला को प्रत्येक हिन्दी-भाषी परिवार में हुंचाने के कठिन, पर आवश्यक कार्य में मदद देंगे।

दूसरा संस्करण

पुस्तक का दूसरा संस्करण पाठकों के हाथों में पहुँच रहा है, इसका हमें र्ष है। हमें विश्वास है कि इस माला की सभी पुस्तकों का व्यापक प्रसार ोगा और पाठक इनके पठन-पाठन से लाभ उठावेंगे।

विषय-सूची

पुण्य की जड़ हरी

: १ :

विक्रमादित्य

एक राजा था। उसके एक बेटा था। नाम था उसका विक्रमादित्य। वह बड़ा प्रतापी और प्रतिभाशाली था। उसके पैदा होने के बाद से उसके माता-पिता के यहाँ दिन-दूनी और रात-चौगुनी धन और यश की वृद्धि होने लगी। विक्रमादित्य को राजा ने बड़े-बड़े पंडितों और विद्वानों से शिक्षा दिलवाई। उसकी योग्यता को देखकर उसके शिक्षक दंग रह जाते थे। प्रजा उसे बड़ा ही प्यार करती थी। बड़े होने पर वह दिन-रात इसी सोच में रहता था कि किस तरह उसके राज्य में सुख और शान्ति रहे। वह भेस बदलकर रोज घर से बाहर निकल जाता और राजकर्मचारियों की धृष्टता और बेईमानी का पता लगाता। पता लगने पर उन्हें प्यार से सच्चे रास्ते पर लाने की कोशिश करता। एक दिन उसने सोचा कि अपने राज्य का हाल ठीक चल रहा है, अब चलकर दूसरे किसी राज्य में देखा जाय कि वहाँ की प्रजा कैसे रहती है। उसने साधु का भेस बनाया और पास के राज्य में पहुँच गया। अपने माता-पिता को उसने इस बात का पता तक न दिया।

अगले दिन सवेरा होते ही माँ-बाप ने देखा कि राजकुमार गायब है तो बड़े दुखी हुए और चारों दिशाओं में उन्होंने राजकुमार को ढूंढ़ने के लिए दूत भेजे। बहुत कोशिश करने के बाद भी वे विक्रमादित्य का पता न लगा सके और

निराश होकर घर लौट आये। राजा भी संतोष करके बैठ गया और अपने बेटे के दिखाये हुए दया के रास्ते पर चलने का प्रयत्न करने लगा।

विक्रमादित्य की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। एक दूसरे राजा के दो लड़कियाँ थीं। वे रोज गंगा-स्नान करके सूर्य को जल चढ़ाती थीं और प्रार्थना करती थीं, "हे सूर्य भगवान्, हमें वर दो कि वीर विक्रमादित्य से हमारा विवाह हो!"

विक्रमादित्य भीख माँगते-माँगते उसी नगरी में आया। चारों ओर घूमा, पर किसीने उसे भीख नहीं दी। जिस दरवाजे पर जाता, सब कह देते, "ऐसे हट्टे-कट्टे होकर भीख माँगते शरम नहीं आती।"

दिन-भर का भूखा-प्यासा विक्रमादित्य हैरान होकर राज-दरबार में पहुँचा। वहाँ राजा से उसने फ़रियाद की कि इतने बड़े राज्य में ऐसा अंधेर है कि भिखारी को कोई एक टुकड़ा रोटी का भी नहीं देता।

राजा ने कहा, "मेरे राज्य में यह नियम है कि कोई आदमी बिना मेहनत के नहीं खा सकता। हाँ, लँगड़े-लूले या रोगी की बात दूसरी है। भीख माँगनेवाले को तो छः महीने की सज़ा दी जाती है।"

विक्रमादित्य ने मन-ही-मन राजा की प्रशंसा की और बोला, "राजन्, मैं अपराधी जरूर हूँ, पर यह अपराध मैंने जान-बूझ-कर नहीं किया। दया करके इस समय तो मुझे कुछ खाने को दिलवा दीजिये!"

राजा ने कहा, "भोजन तुमको ज़रूर दिया जायगा, पर पहले तुमको ये लकड़ियाँ फाड़नी पड़ेंगी।"

विक्रमादित्य ने कुल्हाड़ी उठाई और आनन-फानन में लक-ड़ियाँ फाड़ डालीं। राजा बड़ा खुश हुआ और उसने हुक्म दिया कि इस भिखारी को नहला-धुलाकर बढ़िया पोशाक पहनाई जाय और एक राजकुमार की तरह इसकी आवभगत की जाय।

विक्रमादित्य इस पर कैसे भी राजी न हुआ। बोला, "महाराज, आपकी कृपा के लिए धन्यवाद! पर मैं यहाँ ठहर नहीं सकता। अब वन में जाकर भगवान् का नाम लूंगा। जो कुछ वह देगा, उसीसे पेट भर लूंगा।"

इसके बाद विक्रमादित्य ने कोढ़ी का भेस बना लिया और पास के जंगल में पेड़ के नीचे पड़ रहा। थोड़ी देर में उधर होकर कुछ गडरिये भेड़ चराते हुए निकले। उन्होंने जब इस कोढ़ी को धूप से तपते देखा तो उसके रहने के लिए एक छोटी-सी झोपड़ी खड़ी कर दी। विक्रमादित्य वहीं रहने लगा। किसीने कुछ दिया तो खा लिया, नहीं तो भूखे ही सारा दिन बिता दिया।

इधर यह हो रहा था, उधर राजा की दोनों लड़कियाँ सूर्य भगवान् की पूजा करती रहीं, पर उन्हें कुछ फल न मिला। एक दिन जब वे गंगा-स्नान कर रही थीं तो सूर्य भगवान् ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिये और कहा, "इस प्रकार जल चढ़ाने से मुझे प्रसन्नता नहीं होती। अगर तुम वास्तव में मुझे प्रसन्न करना चाहती हो तो जाओ, किसी दीन-दुखिया की सेवा करो!"

लड़कियाँ जिस रास्ते से आती थीं, रोज ही कोढ़ी को देखती थीं और घिन से दूसरी ओर मुँह फेर लेती थीं। सूर्य भगवान् की सीख ने उनपर असर किया और उन्होंने निश्चय किया कि वे अपाहिज कोढ़ी की सेवा करेंगी। यह सोचकर वे दोनों कोढी के पास आई और उसके घावों को धोकर मरहम-पट्टी करने लगीं। कोढ़ी ने आशीर्वाद दिया, "भगवान् तुम्हारी मनोकामना पूरी करें!"

लड़कियाँ गद्गद होकर चली गईं। दूसरे दिन वे जब आईं तो कोढ़ी के लिए छत्तीसों प्रकार के भोजन से थाल सजाकर लाईं। कोढ़ी ने कहा, "देवियो, मैं इतने व्यंजन कैसे खा सकता हूँ? मेरे लिए तो तुम पाव-भर सत्तू और नमक ले आया करो।"

उस दिन से जब वे गंगास्नान को आतीं तो कोढ़ी के लिए सत्तू और नमक ले आतीं और उसे अपने हाथ से खिलातीं।

कोढ़ी अपने घावों पर सिन्दूर लगाये रहता था। एक दिन जब छोटी लड़की उसे सत्तू खिला रही थी तो कोढ़ी ने अपने शरीर से सिन्दूर पोंछकर अपने हाथ से उसकी माँग भर दी। विक्रमादित्य से विवाह करने के लिए उत्सुक लड़की एकदम रो पड़ी। बड़ी बहन ने समझाया, "बहन, कोई बात नहीं, रोती क्यों है? चल, अभी गंगाजी में धो लेना।"

छोटी लड़की ने कहा, "बहन, अब तो जो होना था सो हो चुका। अब यही मेरे पति हैं। मैं इन्हीं की सेवा करके अपना जीवन बिता दूंगी। तू जा, पिताजी के पास लौट जा!"

बड़ी बहन ने देखा कि छोटी बहन किसी तरह भी वहाँ से हिलने को तैयार नहीं है तो वह घर लौट गई और राजा से सारी बात कह सुनाई।

राजा ने अपने सिपाही भेजे, फिर खुद वहाँ आया, पर छोटी लड़की अपने निश्चय पर अटल रही। राजा अपने भाग्य को धिक्कारता हुआ लौट गया। वह रोज़ अपनी बेटी के लिए खाना भेजता, पर वह उसे छूती तक न थी। दिन-रात कोढ़ी की सेवा करती और मगन रहती। कभी-कभी विक्रमादित्य अन्तर्धान हो जाते तो वह बड़ी हैरान होती। बात असल में यह थी कि राजा की बड़ी लड़की भी विक्रमादित्य को वरने का संकल्प कर चुकी थी और जिस दिन से छोटी लड़की कोढ़ी के साथ रहने लगी, वह किसीको उसके शरीर से हाथ नहीं लगाने देती थी। सो विक्रमादित्य सेवा का प्रसाद बड़ी लड़की को भी देने के लिए कुछ देर को ग़ायब हो जाता था। छोटी लड़की जब जंगल में अकेली रह जाती तो बहुत डरती।

एक दिन वह कोढ़ी के पास बैठकर बहुत रोई। बोली, "तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले जाते हो? क्या मेरी सेवा में कोई चूक है? एक बार तुमने वरदान दिया था कि तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी, सो कभी पूरी नहीं हुई और मुझे विक्रमादित्य की जगह कोढ़ी पति मिला। मैंने उसे भी वरदान समझा और

तुम्हें ही सर्वस्व मानकर तन-मन-धन से तुम्हारी सेवा करने लगी। मेरे मन में इसके लिए कोई पश्चात्ताप नहीं है। पर मेरी तुमसे विनय है कि मुझे छोड़कर कहीं मत जाया करो। रोगी शरीर है, कहीं-कुछ हो गया तो मैं क्या करूँगी ?"

लड़की को इस तरह दुखी और परेशान देखकर विक्रमादित्य को दया आगई। उसने कहा "इसका जवाब मैं तुम्हें कल गंगा-स्नान के समय दूंगा।"

लड़की ने राम-राम करके रात काटी और सवेरे ही गंगा-स्नान को चल पड़ी। सूरज निकल रहा था। उसको जब वह जल चढ़ा रही थी, तो देखती क्या है कि उसका कोढ़ी पति खड़ा हुआ मुस्करा रहा है। देखते-देखते उसकी काया पलट गई और वह एक खूबसूरत राजकुमार बन गया। यह राजकुमार दूसरा कोई नहीं, वीर विक्रमादित्य ही था। राजकुमारी को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ। वह बार-बार आँखें मलती और राजकुमार की ओर देखती। विक्रमादित्य उसकी मनोदशा को समझ गया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला,"रानी, क्या अब भी मेरे ऊपर अविश्वास करती हो ? मैं ही तुम्हारा मन-चाहा पति विक्रमादित्य हूँ। जाओ, अब खुश होकर घर लौट जाओ।" यह कहकर विक्रमादित्य अन्तर्धान हो गया।

राजकुमारी जब लौटी तो वहाँ झोपड़ी का नाम-निशान भी बाकी नहीं था। झोपड़ी की जगह एक सुन्दर आलीशान महल बन गया। चारों ओर नौकर-चाकर राजकुमारी की हाजिरी बजाने को खड़े थे। महल में पहुँचने पर उसने देखा कि न वहाँ कोढ़ी था और न विक्रमादित्य ही। राजकुमारी की समझ में यह गोरख-धन्धा कुछ भी नहीं आया। विक्रमादित्य की बाट देखते-देखते उसकी आँख झपक गई। उसने देखा कि विक्रमादित्य उसके पास ही बैठा है। दोनों रात-भर हँस-हँस-कर बातचीत करते रहे। दूसरे दिन सवेरे राजकुमारी ने उठकर देखा कि फिर वही झोपड़ी है और वही कोढ़ी पति। उस दिन

से रोज रात को यही होता कि कोढ़ी विक्रमादित्य बन जाता और झोपड़ी महल। दिन निकलते ही फिर सब खेल खतम हो जाता।

रात को एक दिन विक्रमादित्य गहरी नींद में सो रहा था। राजकुमारी जाग रही थी। अचानक उसने महल की छत पर कोढ़ी की खाल टँगी देखी। वह चुपचाप महल से बाहर आई और घास-फूंस और लकड़ियाँ इकट्ठी करके उसने उस खाल में आग लगा दी। फिर महल में चुपचाप आकर सो गई। चार बजे विक्रमादित्य की आँख खुली। वह अपनी खाल तलाश करने लगा, पर वह कहीं भी न मिली। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते दिन निकल आया और राजकुमारी जाग गई। विक्रमादित्य ने पूछा, "तुमने कुछ चोरी की है?"

राजकुमारी ने हँसकर कहा, "हाँ, जो चीज माँगे से नहीं मिलती वह चुरानी ही पड़ती है। मैं तुम्हारी सब चाल समझ गई। बोलो, वचन दो कि अब मुझे तंग नहीं करोगे?"

विक्रमादित्य हँस पड़ा और वे दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

इधर छोटी बहन के दिन तो सुख से बीत रहे थे, पर बड़ी बहन का बुरा हाल था। इतने दिन सेवा की, फिर भी उसे मन-वांछित वर न मिला। राजा उसे कहाँतक क्वाँरी बिठाये रखता। उसने उसका विवाह एक दूसरे राजकुमार से पक्का कर दिया। विक्रमादित्य की आत्मा तड़पने लगी। वह बड़ी राजकुमारी की सहायता करने को आतुर हो रहा था। इतने में राजा ने अपनी छोटी लड़की को शादी का निमंत्रण भेजा। बहुत दिनों से वह माता-पिता से नहीं मिली थी, इसलिए बुलावे पर तुरन्त चल दी। विक्रमादित्य ने कहा कि मैं बाद में आऊँगा।

छोटी राजकुमारी के जाने के बाद विक्रमादित्य घर से निकल पड़ा और एक ग़रीब ब्राह्मण का भेस रखकर भीख माँगने लगा। संयोग की बात कि बड़ी राजकुमारी की बरात ने उसी बाग में पड़ाव डाला। लड़के के पिता की निगाह इस ग़रीब ब्राह्मण पर

पड़ी। वह उसकी सुन्दरता देखकर मुग्ध हो गया। वह अबतक घबरा रहा था, क्योंकि उसका लड़का काना था। उसने धोखे से शादी पक्की कर दी थी और अब वह सोच रहा था कि वहाँ काने लड़के को देखकर लोग क्या कहेंगे। वह इस ब्राह्मण के लड़के के पास पहुँचा और उसने सारी बात कह सुनाई। विक्रमादित्य तो सब जानता ही था, सो वह दूल्हा बनने को खुशी से तैयार हो गया। लड़केवाले ने सजा-धजाकर ब्राह्मण के उस लड़के को दूल्हा बनाकर पालकी में बिठा दिया।

फेरों के बाद विक्रमादित्य ने किया क्या कि घोड़े पर बिठा-कर बड़ी राजकुमारी को ले उड़ा। जब पता लगा तो घरातियों और बरातियों में शोर मच गया। पर हो क्या सकता था? लड़के का पिता अपना-सा मुंह लेकर बिना बहू के बरात वापस लौटा ले गया।

उधर विक्रमादित्य चलते-चलते गरीब ब्राह्मण के भेस में एक गाँव के पास आया और सराय में ठहर गया। दिन-भर का भूखा था, इसलिए उसे रात को नींद नहीं आई। जब बहुत बेचैनी हुई तो वह राजकुमारी से बोला, "मुझे बड़ी भूख लगी है, कुछ खाने को दो।" राजकुमारी बड़ी हैरान हुई कि उस समय खाने को क्या दे। उसने कोठे में इधर-उधर देखा तो एक जगह हँडिया में भूसी रक्खी हुई थी। उसने उसे सानकर एक मोटी-सी रोटी बनाई और दिये की लौ पर सेककर उसे दे दी। विक्रमा-दित्य ने आधी रोटी तो खा ली; आधी को हाथ में लेकर बोला, "हे धरती माता, तुम फट जाओ और मेरी रोटी सँभालकर रख लो। जब मैं माँगूं तब मुझे लौटा देना।"

उसका इतना कहना था कि धरती फट गई और वह रोटी उसमें समा गई। विक्रमादित्य इसके बाद बड़ी राजकुमारी को उसके पिता के यहाँ छोड़ आया।

राजकुमारी के लौटने की सुनकर काने लड़के का पिता फिर राजा के यहाँ पहुँचा और लड़की की बिदा करने के लिए

आग्रह करने लगा। राजा ने बेटी को बुलाकर उसे समझाया कि बेटी, तुम चली जाओ। लड़की का गुज़ारा बाप के घर में हमेशा नहीं हो सकता। उसे ससुराल जाना ही चाहिए। लेकिन लड़की ने हाथ जोड़कर कहा, "पिताजी, मेरी शादी इनके साथ नहीं हुई। इन्होंने आपके साथ कपट किया है। आप इनके लड़के से पूछ देखिये कि उसने शादी की रात को क्या खाया था।"

राजा ने यही किया, पर लड़का कुछ भी जवाब न दे पाया। लड़के के पिता ने जब यह हाल सुना तो उसे कुछ भी कहने का साहस न हुआ और वह उल्टे पैरों लौट गया।

इधर राजा ने डौंडी पिटवाई कि जिस लड़के ने मेरी लड़की के साथ शादी की है, वह डरे नहीं और सामने आकर शादी का सबूत दे। मैं उसे अपना सारा राज-पाट दे दूंगा। फिर क्या था, विक्रमादित्य ब्राह्मण के भेस में दरबार में जा पहुँचा और राजा के सामने सिर झुकाकर बोला, "राजन्, आपकी बेटी से ब्याह मैंने किया था।"

राजा ने कहा, "ठीक है; पर पहले यह बताओ कि तुमने ब्याह की रात को क्या खाया था ?"

विक्रमादित्य ने कहा, "महाराज, भूसी की रोटी खाई थी।"

इस उत्तर से राजकुमारी बहुत खुश हुई और फौरन दरबार में आगई। बोली, "पिताजी, यह ठीक कह रहे हैं।"

राजा ने कहा, "तुम चुप रहो। अभी इसे और सबूत देना होगा।"

ब्राह्मण के लड़के ने ज़मीन में पैर मारा और कहा, "धरती माता, आज मेरे सत्य की परीक्षा है, मेरी धरोहर मुझे लौटा दे!"

सारे सभासद खड़े थे। उन्होंने देखा कि ज़मीन में एक दरार हुई और आधी भूसी की रोटी ऊपर आगई। चारों ओर हर्षध्वनि होने लगी। राजा ने बड़ी धूमधाम से ब्राह्मण के साथ राजकुमारी को विदा कर दी और इस प्रकार विक्रमादित्य अपने महल में आगया।

दूसरे दिन विक्रमादित्य छोटी राजकुमारी की विदा करा लाया। वड़ी राजकुमारी ने जव छोटी राजकुमारी को देखा तो वड़ी हैरान हुई। विक्रमादित्य ने सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर दोनों वहनें वड़ी प्रसन्न हुईं।

इसके वाद विक्रमादित्य दोनों रानियों को साथ लेकर अपने पिता के राज में लौट आया। राजा अपने वेटे और वहुओं को देखकर वहुत खुश हुआ। विक्रमादित्य को अपने ससुर का भी राज्य मिल गया और वे अच्छी तरह रहने लगे।

: २ :

सती

एक सेठ के सात लड़के थे । सातों एक-से-एक बढ़कर रूपवान और बुद्धिमान थे। सेठ का एक गुरु था। सेठ जो काम करता उसीकी सलाह से करता था । वह क्या जानता था कि उसका गुरु जादूगर है ! उसने छह बेटों की शादी की, पर छहों बेटे सुहागरात को साँप के डसने से मर गये । जितना दान-दहेज मिला, वह भी सेठ के गुरु ने चालाकी से हड़प लिया। छठे बेटे की मृत्यु पर वह समझ गया कि हो-न-हो उसके बेटों के मरने में ज़रूर इस गुरु का हाथ है। अब एक बेटा बचा था। वह उसकी आशा, डूबते का सहारा और बुढ़ापे की लकड़ी था। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह गुरु के चंगुल में न फँसेगा और अपने बेटे की शादी आप तय करेगा।

सेठ छोटे लड़के की शादी के लिए लड़की की तलाश में निकल पड़ा। दूर-पास के गाँवों और नगरों में घूमा, पर उसको कोई लड़की पसन्द न आई। अन्त में थककर वह एक नदी के किनारे बैठ गया। वहाँ राजा की लड़की अपनी सखियों के साथ स्नान कर रही थी। राजकुमारी की सखियों में एक बनिये की और एक कुम्हार की लड़की भी थी।

राजकुमारी ने कुम्हार की लड़की से पूछा, "सखी, यदि तेरा पति मर जाय तो तू क्या करेगी ?"

कुम्हार की लड़की ने कहा, "राजकुमारी, भगवान् न करे कि ऐसा हो, पर अगर ऐसा हो गया तो मैं दूसरा आदमी कभी न करूँगी। मैं अपना रोजगार करके अपना पेट पाल लूंगी।"

फिर राजा की लड़की ने बनिये की बेटी से पूछा, "तेरा पति मर जाय तो तू क्या करेगी ?"

बनिये की बेटी ने उत्तर दिया, "बहन, मैं अपने पति को अपने सत् के ज़ोर से जिला लूंगी, पर तुम अपनी कहो कि तुम्हारा पति मर जाय तो तुम क्या करोगी ?"

राजकुमारी बनिये की लड़की के इस उत्तर से कुछ घबरा-सी उठी। वह अपने क्रोध और ग्लानि को दबाती हुई बोली, "मेरी क्या है, मैं तो राजा की बेटी ठहरी, चैन से बैठकर खाऊँगी।"

सेठ ये सब बातें सुन रहा था। वह बनिये की लड़की के साहस पर मुग्ध हो गया और उसके पीछे-पीछे चलकर उसके घर पहुँच गया। वह बनिये से बोला, "भाई, मैं तुम्हारी लड़की से अपने बेटे की शादी करना चाहता हूँ।"

बनिया बोला, "सेठजी, आप कैसी उलटी रीति कर रहे हैं। क्या आपको लज्जा नहीं आती कि आप लड़के के बाप होकर भी दर-दर भटक रहे हैं। जरूर आपके लड़के में कोई खोट होगी। मैं हर्गिज आपके लड़के से अपनी लड़की की शादी नहीं करूंगा।"

तब सेठ ने अपने दुर्भाग्य की बात विस्तार से बनिये को सुनाई। सुनकर बनिये को सेठ पर दया आई और वह लड़की देने को राजी हो गया। उसने अपनी बेटी को बुलाकर पूछा, "बेटी, इस शादी के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?"

लड़की ने कहा, "पिताजी, आपकी खुशी में मेरी खुशी है।"

इतने में सेठ का माथा ठनका। उसने सोचा, कहीं इसमें कुछ धोखा तो नहीं है। इस लड़की के सत् की परीक्षा लेनी चाहिए। उसने लड़की से कहा, "बेटी, तुम्हारी शक्ति का मुझे भरोसा कैसे हो ?"

लड़की ने कुछ गुस्से से उत्तर दिया, "मुझे परीक्षा देने की जरूरत नहीं है। आप जाइये।"

परन्तु उसी क्षण उसके मन में सेठ के प्रति दया उमड़ आई। बोली, "पिताजी, मैं जानती हूँ कि आप अपने छः बेटों की मृत्यु से बहुत दुखी हैं और इसीलिए ऐसी बातें कह रहे हैं। बात ठीक है कि दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है। आप किस तरह मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं ? कहिये तो इस सामने पड़ी लोहे की छड़ को मैं मोम का बना दूं और आज्ञा हो तो सूखी धरती पर गंगा बहा दूं।"

सेठ ने वह छड़ बनिये की बेटी के हाथ पर रख दी और कहा, "लो, बनाओ इसे मोम की।"

लड़की ने अपना आंचल फाड़ा और सत् से आग उत्पन्न कर दी। लोहे की छड़ को उसने उस आग में दे दिया। देखते-देखते कठोर लोहा मोम बन गया। लड़की ने कहा, "क्या दूसरी परीक्षा भी देनी बाकी है ?"

सेठ बड़ा लज्जित हुआ। बोला, "बस करो बेटी। मैं गलती पर था, मुझे क्षमा करो।

शादी पक्की हो गई और सेठ अपने नगर को वापस लौट आया। लड़की के कहने के अनुसार उसने ऐसा पक्का मजबूत कमरा बनवाया, जिसमें साँप तो क्या, चींटी भी प्रवेश न पा सके।

सेठ बड़ी धूम-धाम से बरात लेकर बनिये के यहाँ पहुँचा और यह देखकर उसे बड़ा संतोष हुआ कि निर्विघ्न फेरे पड़ गये। बहू की विदा कराके घर लौटा तो उसने लड़के और बहू को उसी कमरे में ठहरा दिया। सेठ का गुरु घात में बैठा था। उसने एक काले नाग को सेठ के लड़के को डसने के लिए भेजा। कमरे में घुसने की कोई जगह नहीं मिली तो वह नाग गुरु के पास लौट आया। गुरु को बड़ा क्रोध आया और उसने उस नाग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। अब उसने दूसरा सांप भेजा। बनिये की लड़की पहले जन्म में गंगानदी की बहन जमना थी। जब गंगा को मालूम हुआ कि यह सर्प उसकी बहन के पति का काल है तो वह तेजी से बढ़ने

लगी और उसने साँप का रास्ता रोक लिया। साँप निडर होकर जल के प्रवाह में घुस तो गया, पर वहाँ उसकी ऐसी दुर्गति हुई कि हार मानकर उसे लौटना पड़ा। जब वह गुरु के पास पहुँचा तो गुरु ने गुस्से में उसका भी काम तमाम कर दिया। अबकी बार उसने निश्चय किया कि वह खुद ही जायगा। उसने सूत से भी बारीक सांप का रूप धारण किया और किसी प्रकार सेठ के लड़के के कमरे में घुस गया। लड़का और वहू गहरी नींद में सोये हुए थे। लड़की की चोटी खाट से नीचे लटक रही थी। साँप उसीके सहारे चारपाई पर चढ़ गया। पर लड़की के सत् से कालरूप सर्प को भी ज्ञान उपजा और वह प्रतीक्षा करने लगा कि लड़का कुसूर करे तब वह काटे। वह लड़के के शरीर पर चक्कर काटने लगा। जैसे ही वह रेंगता हुआ लड़के के पैर पर पहुँचा कि उसने पैर से उसे झटक दिया। बस सर्प को बहाना मिल गया और उसने लड़के को काट लिया। सूत-सा पतला साँप अब खूब बड़ा बन गया था। उसे देखकर लड़का समझ गया कि मेरी मौत अब निकट ही है। वह अपनी वहू से बोला, "तू कैसी गहरी नींद में सो रही है। उठकर देख कि मेरे सारे शरीर में विष फैलता जा रहा है। जल्दी से कोई उपाय कर नहीं तो पछतायेगी।"

गुरु के जादू से लड़की की नींद नहीं टूटी और लड़का मर गया।

इसके बाद लड़की की आँख खुली तो देखा, उसका पति मरा पड़ा है। चारपाई के नीचे साँप को देखकर सारी बात उसकी समझ में आगई। उसने कमरे का दरवाजा खोला और सेठ से कहकर गंगानदी में नाव डलवाई। उसने अपने पति के शव को नाव पर रक्खा। साथ में एक काली बिल्ली ली और एक दूध से भरा मटका। उस नावमें बैठकर वह इन्द्र-पुरी को चल दी। उसी समय इन्द्रासन डोलने उठा, बादल गरजने लगे और बिजली कड़कने लगी। नाव खेते-खेते लड़की

एक गांव के निकट आई। वहां कुछ लोग नदी में नहा रहे थे। एक आदमी उस लड़की को देखकर बोला, "ऐ सुन्दरी, इस मुर्दे पर क्यों जान दे रही है ? मेरे साथ चलकर सुख से रह।"

लड़की को बड़ा क्रोध आया। उसने चुल्लू में गंगाजल लिया और उस आदमी को शाप देते हुए कहा, "दुष्ट, तू पत्थर का होकर यहीं मेरी बाट देखना।"

देखते-देखते वह पत्थर का हो गया। नाव आगे बढ़ गई। आगे चलकर लड़की ने देखा कि एक धोबिन कपड़े धो रही है। उसने काली बिल्ली को लाश की रखवाली के लिए नाव पर छोड़ दिया और खुद नाव से उतरकर उस धोबिन के पास पहुँची और उससे मौसी का रिश्ता जोड़ लिया। धोबिन के कोई सन्तान न थी। वह खुश होकर लड़की को अपने घर ले गई। चार-छ: दिन तो वह घर में रही, फिर एक दिन धोबिन से बोली, "मौसी, आज मैं भी तुम्हारे साथ कपड़े धोने घाट पर चलूंगी।"

धोबिन ने मना किया, पर वह न मानी। उसने ऐसे साफ़ कपड़े धोये कि धोबिन दंग रह गई। वह राजा इन्द्र के कपड़े धोती थी, सो जब कपड़े लेकर इन्द्रपुरी में पहुंची तो राजा इन्द्र ने पूछा, "ये कपड़े तेरे हाथ के धुले नहीं हैं। सच-सच बता, किसने धोये हैं।"

धोबिन ने इन्द्र के सामने झूठ बोलना उचित न समझा। वह हाथ जोड़कर बोली, "महाराज, मेरी बहन की लड़की आई हुई है। आपके कपड़े आज उसीने धोये हैं।"

राजा इन्द्र ने कहा, "अच्छा, कल तू उसे यहाँ लेकर आना।"

धोबिन ने जब यह बात लड़की से आकर कही तो वह बड़ी खुश हुई और इन्द्रलोक जाने को तैयार हो गई।

दूसरे दिन वह इन्द्रलोक पहुंची। राजा इन्द्र ने कहा, "हम तेरे काम से बहुत खुश हैं। तू चाहे सो माँग ले।"

लड़की ने कहा, "जो मांगू सो पाऊँ ?" इन्द्र ने कहा, "हां।" लड़की ने इन्द्र से तीन बार 'हां' कहलवा ली, तब अपनी बात कही, "मुझे धन-दौलत, राज-पाट, सुख-सम्पत्ति कुछ नहीं चाहिए। मैं आपसे अपने और अपनी छः जिठानियों के सुहाग की भीख मांगती हूँ।"

राजा इन्द्र वचन दे चुके थे। उन्होंने स्वर्गलोक से सेठ के छः बेटों की हड्डियां मंगवाई और उनपर अमृत छिड़क दिया। वे सब जिन्दा हो गये। अब राजा इन्द्र ने थोडा-सा अमृत लड़की को दिया और कहा कि इसे अपने पति पर छिड़क देना।

इन्द्र ने देखा कि अमृत लेकर भी वह लड़की वहीं खड़ी है। उन्होंने कहा, "बेटी, अब तू घर क्यों नहीं लौट जाती ?"

लड़की ने कहा, 'महाराज, मैं आज बहुत संतुष्ट हूँ, पर एक बात और रह गई है जो मेरे मन को शूल की तरह वेध रही है।"

इन्द्र ने पूछा, "वह क्या ?"

लड़की ने कहा, "भगवन्, क्या वह घात चलानेवाला गुरु योंही बच जायगा ?"

राजा इन्द्र को जब उस गुरु के कारनामे का पता लगा तो उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने यमदूतों द्वारा उसे पकड़ बुलाया। यमदूतों ने मार-मारकर उसकी चमड़ी उधेड़ डाली और उसके खून से लथपथ शरीर को पानी में बहा दिया। पानी में पड़ते ही वह काँतर बन गया। कुछ देर में एक बैल वहां पानी पीने आया और उस काँतर को निगल गया। घर पहुँचते ही बैल मर गया। घरवालों ने उसे गाँव के बाहर फिकवा दिया। वहां गिद्धों ने उसका सारा मांस नोंच खाया। काँतर वहीं पड़ी रही। इतने में बनिये की लड़की वहां पहुँची और उसने काँतर के ऊपर नमक छिड़क दिया। उसी समय एक चील उसे चोंच में दबाकर उड़ गई। उसने उसे एक राजा के आँगन में गिरा दिया। वहाँ गिरते

ही वह काँतर एक सुन्दर हार बन गई। वह हार दिन में तो हार रहता था और रात को आदमी बनकर राजकुमारी के साथ चौपड़ खेलता। वह जानता था कि वह लड़की जरूर मेरा पीछा करेगी। इसलिए उसने राजकुमारी को सिखा दिया कि कोई भिखारी आये तो और कुछ भी दे देना, पर हार मत देना। अगर कोई जिद ही पकड़ ले तो इस हार को आंगन में ओखली में डाल देना।

संयोग की बात कि सती लड़की जोगी का भेस रखकर उसी राजा के यहां भीख माँगने जा पहुँची। राजकुमारी ने थाल में भरकर मोतियों की भीख दी, पर जोगी ने नहीं ली। वह बोला, "देना है तो हार दो।"

राजकुमारी ने कहा, "हार को छोड़कर तुम कुछ भी मांग सकते हो।"

जोगी ने कहा, "ब्राह्मण का शाप आकाश पाताल तक भी तुम्हें नहीं छोड़ेगा। मैं कह चुका हूँ कि हार के अलावा मैं और कुछ नहीं ले सकता।"

राजकुमारी ने हार नहीं दिया और जोगी सात दिन तक भूखा-प्यासा उसके द्वार पर धरना दिये बैठा रहा। हारकर राजकुमारी ने वह हार आँगन में ओखली में डाल दिया। हार की जगह ओखली के चारों ओर सरसों के दाने बिखर गये। जोगी कबूतर बनकर सरसों चुगने लगा। एक सरसों बची। वह बिलाव बनकर कबूतर पर झपटा। कबूतर इन्द्रलोक को उड़ गया। बिलाव बाज बनकर कबूतर के पीछे-पीछे उड़ता गया। कबूतर को राजा इन्द्र ने अपने अंक में छिपा लिया और बाज को नरक में सड़ने के लिए डाल दिया।

राजा इन्द्र ने प्रसन्न होकर सती लड़की को सदा सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया और उसे उसके छः जेठों के साथ विदा किया।

इन्द्रलोक से वह धोबिन के घर आई और सारी बात

बताकर वह नाव पर पहुंच गई। उसने अपने पती के मृत शरीर पर अमृत छिड़का। वह पुनः जीवित हो गया।

सबको लेकर वह खुशी-खुशी अपने घर आई। उसके सास-ससुर रो-रोकर अंधे हो गये थे। जिठानियों का भी बुरा हाल था। जैसे ही वह घर पहुँची, सेठ और सेठानी की आँखों में फिर ज्योति आगई। उसकी सब जिठानियां अपने-अपने पतियों को पाकर बड़ी खुश हुई। सब मिलकर अच्छी तरह रहने लगीं।

: ३ :

बंदरिया राजकुमारी

एक जंगल में तीन साधु रहते थे। तीनों अपनी-अपनी विद्या में निपुण थे। वे हमेशा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश किया करते थे और इसी में कभी-कभी उनकी झड़प भी हो जाती थी। उनमें से एक साधु के पास एक ऐसी लकड़ी थी, जो हुक्म देते ही तरह-तरह के व्यंजन बनाकर तैयार कर देती थी। दूसरे साधु के पास एक उड़नखटोला था और तीसरे साधु के पास एक ऐसी रस्सी थी जो कहते ही सबको बांध देती थी। एक दिन इन्हीं तीनों चीजों को लेकर वे झगड़ रहे थे। पहला कहता था कि मेरी लकड़ी तुमसे ज्यादा काम की है। दूसरा कहता था कि मेरे उड़नखटोले के सामने तुम्हारी लकड़ी क्या है? तीसरा कहता था कि मेरी रस्सी तुम दोनों की चीजों से बढ़कर है। वाद-विवाद चल ही रहा था कि वहां एक राजकुमार आ पहुचा। तीनों उसकी ओर लपके। तैश के कारण तीनों की आँखें लाल हो रही थीं और शरीर कांप रहे थे। राजकुमार उन्हें देखकर डर गया, पर वहां से बचकर भागने का भी तो कोई रास्ता नहीं था। वह हिम्मत करके वहीं खड़ा हो गया और सोचने लगा कि मुसीबत कभी अकेली नहीं आती। घर से आफत का मारा निकला तो यहां भी मुश्किल सामने है। देखते-देखते तीनों साधु उसके पास आ गये। बोले 'तुम हमारा फैसला कर दो। जो तुम कहोगे सो हम मान लेंगे।"

राजकुमार ने कहा, "इतने उत्तेजित क्यों होते हो। पहले शान्ति से बात तो कहो, फिर फैसला भी हो जायगा।"

पहला साधु बोला, "मेरे पास यह लकड़ी है। इससे जो चाहो

व्यंजन बनवा सकते हो। 'भूखे भजन न होय गोपाला।' जब पेट भरा होता है तभी और बातें भी सूझती हैं। भूखा आदमी कुछ नहीं कर सकता। इसलिए मैं कहता हूं कि इन दोनों से मेरी चीज उत्तम है।"

अब दूसरे साधु की बारी थी। उसने कहा, "मेरे पास उड़नखटोला है। यह दुनिया की सैर करा सकता है। सैर-सपाटे के बिना भी कोई जिन्दगी है। हर समय खाने-ही-खाने की बात करना मूर्खता की निशानी है।"

तीसरा साधु बोला. "भाई, मैं तो कहता हूँ कि तुम सबसे अच्छी मेरी रस्सी है, जो मुसीबत मे काम आती है। जंगल में तो यह बहुत ही काम की है। कोई जंगली जानवर आया कि दूर से ही यह अपना असर दिखाती है। जहां खड़ा होगा, वहीं वह जानवर बंध जायगा। खाना-पीना और सैर-सपाटे तभी अच्छे लगते हैं, जब जिन्दगी में कोई खटका न हो। इसलिए मेरी राय तो यही है कि मेरी चीज़ सबसे बढ़िया है।"

राजकुमार ने मन-ही-मन सोचा कि हैं तो वास्तव में तीनों चीजें एक-से-एक बढ़कर। तीनों की अपनी-अपनी विशेषता है। क्यों न इनके झगड़े से लाभ उठाकर अपना काम बना लिया जाय? राजकुमार ने रस्सी ले ली और उसमें एक कंकड़ बांध कर ऐसा घुमाकर फेंका कि उसका पता न चला। उसने तीनों साधुओं से कहा, "जो कोई इस कंकड़ को सबसे पहले लाकर देगा उसीकी चीज सबसे बढ़िया समझी जायगी।"

इधर तो तीनों साधु कंकड़ की तलाश में भागे, उधर राजकुमार उनकी रस्सी और लकड़ी लेकर उड़नखटोले में बैठकर उड़नछू हो गया।

कंकड़ की तलाश करते-करते तीनों साधु हैरान हो गये। इसी बीच उन्हें अपनी-अपनी चीजों की याद आई। वे उल्टे पैरों लौट पड़े। जब अपनी जगह आये तो देखते क्या हैं कि वहां कुछ भी नहीं है। जिनके लिए आपस में झगड़ा हुआ था, वे ही

चीजें गायब थीं ! तीनों साधु अपनी किस्मत पर पश्चाताप करने लगे ।

यह राजकुमार अपनी भाभी के वर्ताव से तंग आकर घर से बाहर निकला था । वह इसे खाने-पीने तक के उलाहने देती थी । एक दिन राजकुमार बैठा भोजन कर रहा था कि भाभी ने कहा, "लालाजी, ऐसे मैं कबतक तुम्हारी खातिरदारी करूंगी, अपना घर बसाओ और मेरा पीछा छोड़ो ।"

राजकुमार उसी समय थाली छोडकर उठ खड़ा हुआ और यह कहकर घर से निकल-पड़ा कि अच्छा, अब तुम्हारे हाथ का भोजन कभी नहीं करूंगा ।

उड़ते-उड़ते राजकुमार एक नगर में पहुंचा । उसने अपना उड़नखटोला नीचे उतारा । उस नगर की राजकुमारी आदमी का मुँह नहीं देखती थी । राजकुमार ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसी से व्याह करूंगा । दिन भर तो वह खूब सोया और आधी रात को राजकुमारी के महल के पास पहुंच गया । महल के पूर्व की खिड़की खुली हुई थी । वह रस्सी के सहारे राजकुमारी के कमरे में पहुंच गया । राजकुमारी गहरी नींद में सो रही थी । राजकुमार ने अपना दुशाला उसे उढ़ा दिया और उसका दुशाला उतारकर खुद ने ओढ़ लिया । सवेरे जब राजकुमारी उठी तो बड़ी हैरान हुई । उसने दासियों को बुलवाकर दुशाले में आग लगवा दी । चारों ओर नगर में खबर फैल गई कि रात को महल में चोर आया था ।

राजा को बड़ी परेशानी हुई । सोचते सोचते उसे एक तरकीब सूझी । उसने एक कढ़ाव में स्याही भरवा कर पूर्व की खिड़की में रखवा दी जिससे चोर आये तो उसके कपड़े काले हो जायं और वह पकड़ लिया जाय ।

राजकुमार को राजा की इस चाल का कुछ पता नहीं था । वह दूसरी रात को भी बेधड़क पहली रात की ही तरह खिड़की पर पहुंच गया और धड़ाम से स्याही के कढ़ाव में जा गिरा ।

चुपचाप वह नीचे सरक आया। उसके सब कपड़े स्याही में भीग गए। डरते-डरते वह उसी समय धोबी के यहां पहुंचा और उसे जगाकर बोला, "ये कपड़े अभी धो दे। कल मैं इसी समय आकर ले जाऊंगा।"

धोबी नींद में था। 'हां' 'हूँ' करके फिर सो गया।

सवेरे राजकुमारी जब सोकर उठी तो उसने देखा कि कमरे की दीवार पर स्याही के छींटे पड़े हैं। उसे विश्वास हो गया कि जरूर रात को कोई कढ़ाव में गिरा है। राजा को जब सूचना मिली तो उसने सब आदमियों को पकड़ बुलाया। संयोग की बात कि धोबी वही स्याही में डूबा हुआ कुर्ता पहनकर राजा के सामने पहुंचा। अब तो यह निश्चय हो गया कि वही चोर है। राजकुमारी ने आज्ञा दी कि उसको नगर के बाहर पीपल के पेड़ से फांसी पर लटका दिया जाय और उसकी आंखें निकालकर उसके पास पहुंचाई जायं।

धोबी की समझ में कुछ न आया, पर वह राजा के सामने कारण पूछने की हिम्मत कैसे कर सकता था। उसने बहुत हाथ-पैर जोड़े, पर सब निष्फल।

राजकुमार को धोबी पर दया आ गई। उसने सबके सामने चिल्लाकर कहा, "राजन्, यह आदमी निर्दोष है। चोर मैं हूँ। मुझे जो चाहें, दण्ड दीजिए।"

राजकुमारी के पास जब यह खबर भेजी गई तो उसने कहा, "मुझे इससे कोई सरोकार नहीं कि चोर कौन है। आपकी निगाह में जो चोर साबित हो, उसे प्राणदण्ड मिले और उसकी आंखें निकलवाकर मेरे पास पहुंचा दी जायं। मैं और कुछ नहीं चाहती।"

राजकुमार ने राजा से कुछ देर की मोहलत मांग ली। वह अपना उड़नखटोला पीपल के पेड़ पर छिपाकर राजा के सामने हाज़िर हो गया।

राजा राजकुमार की ईमानदारी से बड़ा प्रसन्न हुआ, पर

राजकुमारी की दी हुई सजा को बदलने का साहस न कर सका।

जल्लाद राजकुमार को लेकर पीपल के पेड़ के नीचे आये। राजकुमार ने जल्लादों से कहा कि मरते समय पेड़ पर चढ़कर मुझे थोड़ी देर भगवान् का नाम ले लेने दो। जल्लादों ने सोचा कि पेड़ पर से बचकर यह कहां जायगा ? उन्होंने अनुमति दे दी। राजकुमार उड़नखटोला लेकर उड़ गया और जल्लाद देखते-के-देखते रह गये। अब वे बड़े घबराये कि राजकुमारी न जाने उन्हें क्या सजा देगी। वे एक सियाने के पास गये और बोले, "भैया, हमसे जो कुछ हमारे पास है ले लो, पर यह बता दो कि हम राजकुमारी के पास चोर की आंखें कैसे पहुंचावें ?"

सियाने ने कहा, "तुम भी मूरख हो। अरे, बकरी की आंखें निकालकर ले जाओ। राजकुमारी इतने ध्यान से थोड़े ही देखने बैठेगी।"

जल्लादों को बात जंच गई। उन्होंने सोच लिया कि ऐसा ही करेंगे और जो होगा सो देखा जायगा। वे बकरी की आंखें निकालकर राजा के पास ले गए। राजा ने राजकुमारी के कहने से उनको खूब इनाम दिया।

इधर जान बचाकर राजकुमार उड़नखटोले में बैठकर एक जंगल में आगया। वहां उसने एक अनार का पेड़ देखा, जिसपर पके हुए अनार लगे हुए थे। उसने उड़नखटोला उतारा और पेड़ पर चढ़कर अनार तोड़ने लगा। वह फल तोड़ कर खा भी न पाया था कि देखता क्या है कि वे ही तीनों साधु उसकी ओर चले आ रहे हैं। उसने सोचा कि अब नीचे उतरने में खैर नहीं है। वह पेड़ की खोह में छिप गया। साधु भी उसी वृक्ष के नीचे आये और बातचीत करने लगे। पके हुए फल देखकर उनका जी ललचाने लगा, पर फल इतने ऊंचे लगे थे कि वे उनतक पहुंच नहीं सके। तीन-चार फल चुपके से राजकुमार ने नीचे गिरा दिए। वे बड़े खुश हुए और बोले, "भगवान् की दया देखो कि हमें बिना मेहनत के ही फल मिल गये।"

एक साधु बोला, "मिल गये तो अच्छा ही हुआ, पर मैं ऐसी जड़ी जानता हूं, जिसे सुंघाने से मनुष्य वन्दर वनकर पेड़ की फुनगी पर पहुंच सकता है।"

दूसरा बोला, "मुझे ऐसी वूटी मालूम है, जिससे मैं वन्दर को फिर से आदमी वना सकता हूं।"

तीसरे साधु ने कहा, "तव तो वड़ा आनन्द है। मुझे वन्दर वना दो, मैं तुम्हें खूब अनार तोड़-तोड़कर खिलाऊंगा।"

पहले साधु ने अफसोस करते हुए कहा, "हाय, आज मेरी लकड़ी होती तो कितना अच्छा होता!"

दूसरे ने कहा, "अव पछताये होत का जव चिड़ियां चुग गई खेत।"

तीसरा वोला, "भैया झगड़ा करने का फल कभी अच्छा नहीं होता। न हम झगड़ते, न हमारी चीजें हमसे छूटतीं। सो भैया, अव मुझे धोका न देना। कहीं मैं वन्दर वनकर सारी जिन्दगी पेड़ों पर ही न उछलता-कूदता रहूं! मुझे आदमी जरूर वना देना।"

पहला वोला, "नहीं भाई, अव हम तीनों सदा मेल से रहेंगे।"

यह कहकर वह पासवाली झाड़ी से एक जड़ी उखाड़ लाया और तीसरे साधु को सुंघा दी। वह तुरन्त वन्दर वनकर पेड़ पर चढ़ गया और पके-पके अनार तोड़कर खुद खाने लगा और अपने साथियों को भी खिलाने लगा। नीचे आया तो दूसरे साधु ने एक दूसरी झाड़ी से जड़ी उखाड़ी और वन्दर को सुंघा दी। वह वन्दर से फिर साधु वन गया। इसके वाद वे तीनों आगे वढ़ गये। जव वे आंख से ओझल हो गये तो राजकुमार पेड़ से नीचे आया और उसने दोनों तरह की जड़ी-वूटियां तोड़कर अपनी जेव में रख लीं। रात को वह चुपचाप पूर्व की खिड़की से उसी राजकुमारी के कमरे में जा पहुंचा और उसे जड़ी सुंघा दी। जड़ी को सुंघाते ही राजकुमारी वन्दरिया वन गई। राजकुमार उसे उड़नखटोले में विठाकर उड़ा ले गया।

जंगल में पहुंचकर उसने आग जलाई और तापने लगा। बंदरिया को उसने थोड़ी दूर पर छोड़ दिया। खों-खों करके बन्दरिया सो गई। जब उसने देखा कि बंदरिया सो गई तो फिर उसे दूसरी जड़ी सुंघा दी। वह राजकुमारी बन गई। जंगल में चारों ओर शेर दहाड़ रहे थे। राजकुमारी डर के मारे जग पड़ी और चिल्लाने लगी। उसने देखा कि थोड़ी दूर पर आग जल रही है। वह उसी ओर दौड़ी और राजकुमार को देखकर बोली, "मुझे बचाओ। मुझे अकेले डर लगता है।"

राजकुमारी ने कहा, "राजकुमारी, मेरे पास आने की कोशिश न करो। मैं स्त्रियों का मुंह देखना पाप समझता हूं।"

जब राजकुमारी बहुत गिड़गिड़ाई तो राजकुमार को दया आ गई। उसने उससे वचन लिया कि वह उसके साथ विवाह करेगी।

मरती क्या न करती! बेचारी ने चट राजकुमार को विवाह का वचन दे दिया। राजकुमारी ने बातों-ही-बातों में राजकुमार से सारी बातों का भेद ले लिया। राजकुमार तो सो गया, राजकुमारी उसे सोता छोड़कर उड़नखटोले में बैठकर उड़ गई।

जगने पर राजकुमार उसकी सब चालाकी ताड़ गया। उसने जड़ी की बात राजकुमारी को नहीं बताई थी, सो वह जड़ी लेकर एक दिन रात को फिर राजकुमारी के कमरे में पहुंच गया और उसे बंदरिया बनाकर चुपचाप भाग आया। सारे नगर में शोर हो गया कि राजकुमारी बन्दरिया बन गई है। जो कोई उसके पास जाता वह खों-खों करके काटने दौड़ती।

राजा ने डौंडी पिटवा दी कि जो कोई राजकुमारी को बन्दरिया से राजकुमारी बना देगा, उसके साथ वह राजकुमारी का विवाह कर देगा और आधा राज दे देगा।

राजकुमार तो उस नगर में था ही। वह ब्राह्मण का भेस रखकर, तिलक-छापे लगाकर, खड़ाऊं पहने इधर-उधर घूम

रहा था। राजा के सिपाहियों से उसने कहा कि मैं एक मिनट में राजा की लड़की को बंदरिया से राजकुमारी बना सकता हूं।

सिपाही उस ब्राह्मण बने राजकुमार को राजा के सामने ले गये।

राजकुमार ने कहा, "राजन्, मैं अपनी विद्या राजकुमारी पर चलाऊंगा उस समय वहां कोई नहीं होना चाहिए।"

राजा मान गया और राजकुमार को एकान्त में राजकुमारी के पास भेज दिया। राजकुमार ने बबूल के कांटे मंगाकर उस कमरे में रखवा लिये और बंदरिया को उन कांटों पर लिटा दिया। बंदरिया और भी जोर से खों-खों करने लगी। उसका सारा शरीर कांटों से बिंध गया। वह निकल नहीं सकी। राजकुमार ने उसे जड़ी सुंघाई और वह राजकुमारी बन गई। राजकुमार ने उसे कांटों में ही पड़ा रहने दिया। राजकुमारी के प्रार्थना करने पर उसने कहा, "मैं स्त्री का स्पर्श नहीं करता।"

राजकुमारी अपने किए पर बड़ी लज्जित हुई और राजकुमार से बार-बार क्षमा मांगने लगी। तब राजकुमार ने बड़ी मुश्किलों से उसे कांटों से बाहर निकाला और राजा के आगे लेकर पहुँचा। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और राजकुमारी का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया। खूब दान-दहेज दिया और आधा राज उसे सौंप दिया।

राजकुमार राजकुमारी को लेकर भाभी के पास गया और बोला, "भाभी, मैंने घर बसा लिया है। अब तुम्हें मेरी खातिरदारी नहीं करनी पड़ेगी।"

भाभी बोली, "मैंने तो मजाक में कहा था। मुझे क्या मालूम था कि मेरी जरा-सी बात तुम्हें इतनी लग जायगी।"

इसके बाद राजकुमार अपनी रानी के साथ अच्छी तरह रहने लगा। बार-बार उसे चिढ़ाकर कहता, "तुम अब तो उड़न-खटोला चुराकर नहीं भागोगी?" राजकुमारी हँसकर कहती, "अब तो तुम मुझे बंदरिया नहीं बनाओगे?"

जंगल में पहुंचकर उसने आग जलाई और तापने लगा। बंदरिया को उसने थोड़ी दूर पर छोड़ दिया। खों-खों करके बन्दरिया सो गई। जब उसने देखा कि बंदरिया सो गई तो फिर उसे दूसरी जड़ी सुंघा दी। वह राजकुमारी बन गई। जंगल में चारों ओर शेर दहाड़ रहे थे। राजकुमारी डर के मारे जग पड़ी और चिल्लाने लगी। उसने देखा कि थोड़ी दूर पर आग जल रही है। वह उसी ओर दौड़ी और राजकुमार को देखकर बोली, "मुझे बचाओ। मुझे अकेले डर लगता है।"

राजकुमारी ने कहा, "राजकुमारी, मेरे पास आने की कोशिश न करो। मैं स्त्रियों का मुंह देखना पाप समझता हूं।"

जब राजकुमारी बहुत गिड़गिड़ाई तो राजकुमार को दया आगई। उसने उससे वचन लिया कि वह उसके साथ विवाह करेगी।

मरती क्या न करती! बेचारी ने चट राजकुमार को विवाह का वचन दे दिया। राजकुमारी ने बातों-ही-बातों में राजकुमार से सारी बातों का भेद ले लिया। राजकुमार तो सो गया, राजकुमारी उसे सोता छोड़कर उड़नखटोले में बैठकर उड़ गई।

जगने पर राजकुमार उसकी सब चालाकी ताड़ गया। उसने जड़ी की बात राजकुमारी को नहीं बताई थी, सो वह जड़ी लेकर एक दिन रात को फिर राजकुमारी के कमरे में पहुंच गया और उसे बंदरिया बनाकर चुपचाप भाग आया। सारे नगर में शोर हो गया कि राजकुमारी बन्दरिया बन गई है। जो कोई उसके पास जाता वह खों-खों करके काटने दौड़ती।

राजा ने डौंड़ी पिटवा दी कि जो कोई राजकुमारी को बन्दरिया से राजकुमारी बना देगा, उसके साथ वह राजकुमारी का विवाह कर देगा और आधा राज दे देगा।

राजकुमार तो उस नगर में था ही। वह ब्राह्मण का भेस रखकर, तिलक-छापे लगाकर, खड़ाऊं पहने इधर-उधर घूम

रहा था। राजा के सिपाहियों से उसने कहा कि मैं एक मिनट में राजा की लड़की को वंदरिया से राजकुमारी वना सकता हूं।

सिपाही उस ब्राह्मण बने राजकुमार को राजा के सामने ले गये।

राजकुमार ने कहा, "राजन्, मैं अपनी विद्या राजकुमारी पर चलाऊंगा उस समय वहां कोई नहीं होना चाहिए।"

राजा मान गया और राजकुमार को एकान्त में राजकुमारी के पास भेज दिया। राजकुमार ने वबूल के कांटे मंगाकर उस कमरे में रखवा लिये और वंदरिया को उन कांटों पर लिटा दिया। वंदरिया और भी जोर से खों-खों करने लगी। उसका सारा शरीर कांटों से बिंध गया। वह निकल नहीं सकी। राजकुमार ने उसे जड़ी सुंघाई और वह राजकुमारी वन गई। राजकुमार ने उसे कांटों में ही पड़ा रहने दिया। राजकुमारी के प्रार्थना करने पर उसने कहा, "मैं स्त्री का स्पर्श नहीं करता।"

राजकुमारी अपने किए पर वड़ी लज्जित हुई और राजकुमार से वार-वार क्षमा मांगने लगी। तव राजकुमार ने वड़ी मुश्किलों से उसे कांटों से वाहर निकाला और राजा के आगे लेकर पहुँचा। राजा वड़ा प्रसन्न हुआ और राजकुमारी का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया। खूव दान-दहेज दिया और आधा राज उसे सौंप दिया।

राजकुमार राजकुमारी को लेकर भाभी के पास गया और वोला, "भाभी, मैंने घर वसा लिया है। अव तुम्हें मेरी खातिरदारी नहीं करनी पड़ेगी।"

भाभी वोली, "मैंने तो मजाक में कहा था। मुझे क्या मालूम था कि मेरी जरा-सी वात तुम्हें इतनी लग जायगी।"

इसके वाद राजकुमार अपनी रानी के साथ अच्छी तरह रहने लगा। वार-वार उसे चिढ़ाकर कहता, "तुम अव तो उड़न-खटोला चुराकर नहीं भागोगी?" राजकुमारी हँसकर कहती, "अव तो तुम मुझे वंदरिया नहीं वनाओगे?"

: ४ :

लखटकिया

एक राजा था। उसके तीन वेटे थे और तीनों वेटों की तीन वहुएं थीं। एक दिन राजा शिकार को गया। वहां उसे सनीचर देवता मिला। वह राजा से वोला, "राजा, राजा! मैं तेरे घर अभी आऊं या साल भर वाद?"

राजा ने कहा, "मैं कल अपने वहू-वेटों से सलाह करके तुम्हें वताऊंगा।"

सनीचर ने कहा "अच्छी वात है।"

राजा अनमना होकर घर लौटा तो वडे वेटे ने पूछा, "पिताजी आप उदास क्यों हैं?"

राजा दुखी होकर वोला, "वेटा, आज मुझे सनीचर मिला था। पूछता था कि अभी आऊं या साल भर वाद। मैंने कह दिया कि अपने घरवालों से पूछकर जवाव दूंगा।"

वड़ा राजकुमार वोला, "ठीक किया पिताजी, कल जव वह पूछे तो कह दीजिये कि साल भर वाद आये।"

दूसरे और तीसरे वेटे ने भी साल भर वाद ही आने का समर्थन किया।

राजा ने सोचा, चलो, साल भर के लिए तो आफत टली। राजा अपनी छोटी वहू को वहुत प्यार करता था। इसलिए उसने सोचा कि उससे भी चलकर पूछ लिया जाय।

छोटी वहू के सामने जव यह वात कही तो वह वोली, "पिताजी, जव शनीचर को आना ही है तो साल भर वाद के लिए क्यों कहा जाय! जो कुछ विपदा आयगी उसे सहना ही पड़ेगा। इसलिए मैं तो कहती हूं कि देर करने से क्या लाभ है? जाकर उससे

कह दीजिये कि अभी आ जाय ।"

राजा को छोटी बहू की बात जंच गई और वह शनीचर की तलाश में निकल पड़ा । शनीचर तो जंगल में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर ही रहा था । राजा को देखते ही बोला, "कहो महाराज, क्या निश्चय किया ?"

राजा ने उत्तर दिया, "भैया, निश्चय क्या करना है ! तुम्हें आना तो है ही, इसलिए अभी आ जाओ ।"

शनीचर बड़ा प्रसन्न हुआ । राजा का घर पहुँचना था कि वहां शनीचर का डेरा तन गया । हाथी-घोड़े, फौज-फर्रा, सब बिक गया, खजाना लुट गया और राजा इतना कंगाल हो गया कि पेट को रोटी मिलनी भी दूभर हो गई । अपने देश में भीख भी कैसे मांगता ? उसने सोचा कि अब यहां से चल देने में ही खैर है । राजा रानी, तीनों बेटे और तीनों बहुओं को लेकर परदेश को निकल पड़ा ।

चलते-चलते वे एक शहर के पास पहुंचे । भीख कभी मांगी होती तो मांगते । चिन्ता में वे सब पेड़ के नीचे बैठ गये । भूख के मारे प्राण सूख रहे थे और पास में फूटी कौड़ी भी नहीं थी । छोटी बहू की मां ने उसे विदा करते वक्त सात लाल दिये थे, वे उसने अभी तक छिपा रखे थे । अब उससे न रहा गया और एक लाल निकालकर उसने अपने ससुर के हाथ पर रख दिया । बोली, "पिताजी, चिन्ता करने से क्या बनेगा । यह लाल ले जाइये और किसी सेठ के यहां गिरवीं रखकर खाने-पीने का सामान ले आइये । कुछ दिन तो कट ही जायंगे ।"

राजा लाल लेकर चला गया । न बाबा आये न घंटा बाजे । छोटी बहू ने दूसरा लाल अपने बड़े जेठ को दिया, पर वह भी न लौटा । इसी तरह दूसरा जेठ और उसका पति भी लाल लेकर चम्पत हो गये ।

अन्त में पांचवां लाल उसने सास को दिया, पर वह ही क्यों लौटती ! उसकी भी नीयत बिगड़ गई । अब उसके पास बचे दो

लाल। वे भी उसने एक-एक करके अपनी जेठानियों को दे दिये। गरीबी में स्वार्थी हो जाना कोई असम्भव बात नहीं है। वे दोनों भी उसे जंगल में असहाय छोड़कर चलती बनीं।

छोटी बहू के पास अब कुछ भी नहीं था। वह बड़ी घबराई और भगवान् से कहने लगी कि मैं क्या जानती थी कि सभी मुझे जंगल में इस तरह भटकने को छोड़ जायंगे। अब तू ही मेरा सहारा है। चाहे मार, चाहे तार।

रोते-रोते उसे एक तरकीब सूझी। उसने क्या किया कि एक राजकुमार का भेस बनाया और उस नगर के राजा के दरबार में गई।

राजा ने जब उसे देखा तो उसकी सुन्दरता से उसकी आंखें चुंधिया गई। सोचा, कोई राजकुमार मुसीबत का मारा है। पूछा, 'कुमार, तुम कौन हो और यहां क्यों आये हो?"

राजकुमार ने उत्तर दिया, "महाराज, मैं एक परदेसी हूं और नौकरी की तलाश में आपके दरबार में आया हूं।"

राजा ने पूछा, "पर काम क्या करोगे?"

राजकुमार बोला, "महाराज, ऐसा काम करूंगा जो आपके दरबारियों में से कोई भी न कर सके।"

राजा बोला, "तनख्वाह क्या लोगे?"

राजकुमार ने कहा, "लाख टका रोज।"

राजा ने मंजूरी दे दी, क्योंकि उसने सोचा कि काम भी ऐसा जोखिम का करेगा जो कोई न कर सके। राजा ने उस दिन से उसका नाम लखटकिया रख दिया।

लखटकिया मन-ही-मन बहुत खुश था, क्योंकि वह सोचता था कि न कोई असम्भव काम होगा और न मेरी जरूरत पड़ेगी और लाख टके मेरे रोज सीधे हो जायंगे।

लखटकिया बोला, "महाराज, मेरी एक शर्त और है।"

राजा बोला, "उस शर्त को भी कह डालो।"

लखटकिया ने कहा, "मैं आपके दरबार में रोज हाजिरी

बजाने नहीं आऊंगा। जब आपका काम पड़ेगा तभी आपकी सेवा में हाजिर हो जाया करूंगा।"

राजा ने कहा, "मंजूर।"

बस, अब क्या था। लखटकिया एक खूब बढ़िया महल में रहने लगा। उसके चारों ओर दास-दासियों का जमघट लग गया, पर अन्दर जाने की किसीको इजाजत नहीं थी। बड़े-बड़े राजा उसके सामने मात खाने लगे। काम न धाम, सारे दिन चैन की बंसी बजती।

एक दिन की बात। आधी रात को छत पर किसी स्त्री का भयानक चीत्कार सुनाई दिया। आवाज बढ़ती ही गई, पर कोई भी छत पर जाने की हिम्मत न कर सका।

राजा ने हुक्म दिया, "बुलाओ लखटकिया को। वह पड़ा-पड़ा ऐश करता है। किस दिन काम आयगा?"

लखटकिया तुरंत राजा के सामने पहुंचा और सिर झुका-कर बोला, "महाराज, क्या आज्ञा है सेवक को?"

राजा ने कहा, "जरा पता तो लगाओ कि महल की छत पर कौन स्त्री डकरा रही है?"

लखटकिया का स्त्री-हृदय एकबारगी कांप उठा, पर वह अपनी कमजोरी कैसे दिखाता। नंगी तलवार लेकर भगवान का भरोसा कर वह छत पर जा पहुंचा। देखता क्या है कि एक मरा हुआ बालक अधर में लटक रहा है और एक डायन उछल-उछल कर उसतक पहुंचने की कोशिश कर रही है। उसका हाथ बालक तक पहुंचने में कुछ ही दूर रह जाता था। इसीलिए वह चिल्ला-चिल्लाकर रो रही थी।

हिम्मत करके लखटकिया ने पूछा, "माई, तुम आधी रात में इस तरह क्यों रो रही हो?"

रोते-रोते उसने उत्तर दिया, "बेटा, यह बालक मेरा इक-लौता बेटा है। मैं अन्तिम बार इसे जी भरकर हृदय से लगाना चाहती हूं। पर क्या करूं, कब से कोशिश कर रही हूं, मेरा

हाथ ही नहीं पहुंचता।"

लखटकिया उसे समझाते हुए बोला, "मां, शान्ति रखो। मैं नीचे लेट जाता हूं, तुम मेरे ऊपर खड़ी हो जाओ। जरा-सी तो कसर है! मेरे ऊपर खड़ी होकर बच्चे तक पहुंच जाओगी।"

लखटकिया नीचे लेट गया और डायन उसके ऊपर खड़ी हो गई। बजाय बच्चे को छाती से लगाने के वह उसका कलेजा निकालकर खाने लगी। लखटकिया तो पहले से ही सतर्क था। वह जानता था कि दाल में कुछ काला है। उसने तलवार का ऐसा वार किया कि डायन का एक पैर कट गया और वह नीचे गिर पड़ी। जैसे ही उठकर वह लदर-पदर लंगड़ाती हुई भागी कि उसका चीर लखटकिया के हाथ में आगया। आधा चीर फटकर लखटकिया के हाथ में रह गया। डायन गायब हो गई और उसके साथ उसका रोना भी।

लखटकिया काम पूरा करके अपने महल में गया और रातों-रात उसने उस चीर की एक चोली सी डाली। घर में आकर लखटकिया स्त्री का वेष बना लेता था। उसने यह मशहूर कर रखा था कि घर में मेरी बहू रहती है। किसीको उसके घर में घुसने का हुक्म नहीं था।

एक दिन क्या हुआ कि राजा की नाइन चोरी-चोरी वहां पहुंच गई। लखटकिया स्त्री के वेष में था। वह उससे निगाह बचाकर चलते समय खूंटी पर से लखटकिया की चोली चुरा कर ले गई।

राजा के महल में आकर उसने वह चोली राजकुमारी को दिखाई और बोली, "देखो तो लखटकिया की बहू कैसे-कैसे कपड़े पहनती है। पहनना तो दूर, ऐसा कपड़ा तुमने कभी आंख से भी न देखा होगा। तुम्हारे नौकर की घरवाली की यह मजाल कि तुमसे भी चढ़ती पोशाक पहने।"

इतना सुनना था कि राजकुमारी खटपाटी लेकर पड़ रही।

राजा ने उसे बहुत मनाया, पर वह न बोली। राजा ने फिर प्यार से कहा, "बेटी, तू इस तरह क्यों पड़ी है? अब तो हमारे राज्य में लखटकिया जैसा योग्य सेवक है। तू चाहे तो आसमान के तारे भी तुड़वाकर मंगा सकता हूं।"

राजकुमारी ने चोली निकालकर राजा के सामने रख दी और बोली, "लखटकिया की बहू कैसे अनमोल और अनोखे कपड़े पहनती है। मैं भी जबतक ऐसी चोली नहीं बनवा लूंगी, अन्न-जल नहीं करूंगी।"

राजा ने कहा, "अरे, यह भी कोई बड़ी बात है। ऐसी एक नहीं, हजार चोलियां बनवा लेना।" बड़ी खुशामद के बाद राजकुमारी ने भोजन किया।

राजा ने चारों दिशाओं में लोग भेजे, पर वैसा कपड़ा कहीं न मिला। अन्त में लखटकिया की बारी आई।

राजा ने उससे कहा, "लखटकिया, तुम्हारी बहू के पास जैसे कपड़े की चोली है वैसा ही कपड़ा तुम्हें राजकुमारी को लाकर देना होगा। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो समझ लेना कि तुम्हारा सर धड़ से अलग कर दिया जायगा।"

लखटकिया नाइन की चालाकी समझ गया, पर करता क्या? उसने राजा से एक साल की मोहलत मांगी।

वह घर से निकल पड़ा और चलते-चलते एक श्मशान में पहुंचा। वहां उसने देखा कि एक जवान लड़के की लाश रखी हुई है। आधी रात थी। चारों ओर गीदड़ और उल्लुओं की भयानक आवाज हो रही थी। राजा का हुक्म था कि लाश सवेरे से पहले न जलाई जाय। अब यही समस्या थी कि रात भर लाश की रखवाली कौन करे? लखटकिया तो जान हथेली पर रखकर निकला ही था। उसने जो लोग मुर्दा जलाने को आयें थे, उनसे कहा, "भाई, तुम लोग बेफिक्री से सो जाओ। मैं लाश को रात भर देखता रहूंगा।"

जब सब सो गये तो एक राक्षस लाश के पास आया। उसके

हाथ में दो लकड़ियां थीं। उसने एक लकड़ी मुर्दे के पांयते रखी, एक सिरहाने। फिर पांयते की लकड़ी सिरहाने रख दी और सिरहाने की पांयते। इतना करते ही मुर्दा जिन्दा हो गया। परन्तु थोड़ी देर में राक्षस ने लकड़ियों के फेर-बदल से उसे फिर मुर्दा कर दिया और अपनी लकड़ी उठाकर चल दिया।

लखटकिया तो वहां ताक लगाये बैठा ही था। जैसे ही राक्षस लकड़ी उठाकर चला कि उसने ऐसा वार किया कि राक्षस की दोनों बाहें कटकर नीचे गिर गईं। डर के मारे राक्षस वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। लखटकिया ने लकड़ियां उठाकर अपने पास रख लीं।

सवेरा होते ही मुर्दे को जलाने की तैयारी होने लगी। लखटकिया ने सबको रोक दिया और राक्षस से मिली लकड़ियों की सहायता से मुर्दे को जिन्दा कर दिया। सब लोग आश्चर्य-चकित रह गये। राजा ने जब यह सुना तो वह दौड़ा आया और प्रसन्न होकर लखटकिया को आधा राज्य दे दिया और अपनी बेटी की शादी उसके साथ करने को तैयार हो गया।

लखटकिया ने कहा, "राजन्, मैं एक बड़े भारी काम को पूरा करने के लिए घर से निकला हूं। काम पूरा करके लौटूंगा तो अवश्य आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।"

राजा का आशीर्वाद लेकर लखटकिया आगे बढ़ा। दरमंजिल दरमुकाम, दरमंजिल दरमुकाम, वह चलते-चलते एक घने जंगल में पहुंचा। थककर चूर हो गया था। सामने उसे एक मकान दिखाई दिया। सोचा, वहीं जाकर आराम करूंगा।

वह मकान भी निराला था। न खिड़कियां थीं, न दरवाजे। लखटकिया निराश होकर इधर-उधर चक्कर काटने लगा, पर कहीं से उसे घर में घुसने की जगह न मिली। शाम को छत पर से एक लड़की झांक रही थी। लखटकिया को देखकर बोली, "ऐ आदमी के बच्चे, तू यहाँ कहाँ? भाग जा यहाँ से। मेरे माँ-बाप आते होंगे। वे तुझे जिन्दा खा जायंगे।"

लखटकिया बोला, "देवी, जो कुछ होगा उसके लिए मैं तैयार हूं। मेरे लिए तो सब तरफ ही मौत है। अगर तुम्हारे माता-पिता के हाथ मेरी मौत लिखी है तो मुझे कोई चिन्ता नहीं। मैं इतना थक गया हूं कि एक कदम भी आगे नहीं चल सकता।"

यह लड़की लखटकिया पर मोहित हो चुकी थी। वह उसके प्राणों की रक्षा का उपाय सोचने लगी। उसने लखटकिया को मक्खी बनाकर दीवार से चिपका दिया। थोड़ी देर बाद डायन और राक्षस आये और नाक से सूं-सूं करते हुए बोले, "बेटी, मानस-गंध आ रही है।"

लड़की बोली, "पिताजी, क्या हुआ है आज आपको, अपनी बेटी का भी विश्वास नहीं है। यहां मानव की तो हस्ती ही क्या है, आपके डर से परिन्दा भी नहीं फटक सकता। आप आदमी का शिकार करके आये दीख पड़ते हैं, इसलिए मानस-गंध आपकी नाक में रम गई है।"

इतना सुनकर डायन और राक्षस दोनों लेट गये। डायन बोली, "जिसने मेरा चीर खींचा है, वह मुझे मिल जाय तो मैं उसे कच्चा ही चबा जाऊं।"

राक्षस बोला, "और जिसने मेरे हाथ काटे हैं, अगर मुझे मिल जाय तो टुकड़े-टुकड़े कर डालूं।"

मक्खी बना हुआ लखटकिया यह सब सुन रहा था। हाय राम! आज तो वह अपने दुश्मनों के ही घर में आ फंसा है। वह समझ गया कि यह वही डायन है जो रो रही थी और यह वही राक्षस है, जिसने मुर्दे को जिलाया था। अब तो डर के मारे उसकी जान सूख रही थी। राम-राम करके उसने रात काटी।

सवेरे उठकर डायन और राक्षस शिकार को चले गये। लड़की ने लखटकिया को फिर आदमी बना दिया और बोली, "तुम कितने सुन्दर हो। मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूं।"

लखटकिया बोला, "कैसी असम्भव बातें करती हो। भला

तुम्हारे माता-पिता मुझे जीवित छोड़ सकते हैं! वे तो मुझे कच्चा ही चबा जायेंगे।"

लड़की बोली, "तुम्हें नहीं मालूम कि वे मुझे कितना प्यार करते हैं। उन्होंने मुझे वचन दिया है कि मैं जिससे चाहूं विवाह कर सकती हूं। वे उसे कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचायेंगे।"

लखटकिया बोला, "पर मैं तो उनका दुश्मन हूं।"

लड़की ने कहा, "कोई भी क्यों न हो, वे वचन से बंधे हैं। वे मेरे पति का अहित नहीं कर सकते। बोलो, अब क्या आपत्ति है?"

लखटकिया चक्कर में पड़ गया। बोला, "परन्तु मैं अभी विवाह नहीं क़र सकता। मैं एक कठिन काम पूरा करने को घर से निकला हूं, उसे पूरा करने के बाद ही विवाह कर सकूंगा।"

लड़की बोली, "वह क्या काम है?"

लखटकिया ने "कहा, मुझे तुम्हारी माँ का चीर चाहिए। क्या तुम दिलवा सकती हो?"

लड़की बोली, "तुम तो बड़े ही भोले हो। जब मुझे ब्याह देंगे तो क्या तुम्हारी मनचाही चीज नहीं दे सकेंगे। देखो, मैं एक बात तुम्हें बताती हूं। जब मेरे माता-पिता मुझे तुम्हारे साथ विदा करेंगे तो वे तुमसे कहेंगे जो चाहे सो मांग लो। तब तुम बाँसुरी और उड़न-खटोला माँग लेना।"

लखटकिया बात काटते हुए बोला, "पर मुझे तो चीर चाहिए। मैं बाँसुरी और उड़न-खटोले का क्या करूंगा!"

लड़की ने कहा, "अरे, तुम तो बात समझने से पहले ही ले उड़े। वह बांसुरी मामूली बांसुरी नहीं है। वह जादू की है। अगर उस बांसुरी को चिथड़े-गुदड़ों पर भी फिरा दोगे तो जैसा चीर तुम चाहते हो वैसा ही बन जायगा।"

लखटकिया बड़ा प्रसन्न हुआ।

डायन और राक्षस के लौटने पर लड़की ने फिर लखटकिया को मक्खी बना दिया।

डायन बोली, "बेटी, आज तू कुछ उदास-सी दिखाई दे रही है।"

लड़की ने कहा, "नहीं तो। ऐसा तो कुछ भी नहीं है। पर आप नाराज न हों तो मैं एक बात कहूं।"

डायन बड़े प्यार से बोली, "बेधड़क होकर कह। तेरे लिए तो मैं असम्भव को भी सम्भव कर सकती हू ?"

राक्षस बोला, "हां बेटी, डर किस बात का है। तुमसे प्यारा हमारे लिए है ही कौन ?"

आश्वासन पाकर लड़की ने कहा, "मां, आपको अपने वचन की बात याद है न !"

डायन ने कहा, "वही तो कि तू जिससे चाहेगी विवाह कर सकेगी और हम लोग उसे कोई कष्ट न पहुंचायंगे।"

लड़की ने कहा, "हां, मैं ऐसा करूं तो आप उसे मारेंगे तो नहीं ?"

डायन और राक्षस ने एक स्वर से कहा, "कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।"

तीन वचन भरवाने के बाद लड़की ने लखटकिये को मक्खी से आदमी बना दिया और बोली, "यही मेरे होनेवाले पति हैं।"

डायन और राक्षस अपने शत्रु को देखकर दांत पीसने लगे, पर कर क्या सकते थे। अपनी बेटी को वचन जो दे चुके थे। उन्हें विवाह करने के लिए राज़ी होना पड़ा। विदा करते समय डायन लखटकिया से बोली, "बेटा, आज से तुम मेरे दामाद हो। जो चाहो मांग लो।"

लखटकिया ने कहा, "माँ, मुझे आपकी बाँसुरी चाहिए।"

डायन ने बाँसुरी दे दी।

राक्षस बोला, "बेटा, मुझसे भी जो जी चाहे माँग लो।"

लखटकिया ने उससे उड़न-खटोला माँग लिया और वहू को उड़नखटोले में बिठाकर उसी राजा के नगर में आया, जिसका बेटा जिन्दा किया था। वहाँ से भी राजकुमारी को

साथ लिया और उसी नगर में जा पहुंचा, जहाँ नौकरी करता था। सारे नगर में लखटकिया के लौटने का शोर मच गया।

लखटकिया ने राजा से कहला भेजा कि शहर भर के चिथड़े-गुदड़े बाहर मैदान में जमा करवा दें और राजासाहब सबको लेकर वहाँ तमाशा देखने आ जायं।

राजा के हुक्म की देर थी। देखते-देखते चिथड़ों का ढेर लग गया। लोग वहाँ तमाशा देखने को उमड़ पड़े। लखटकिया ने जैसे ही चिथड़ों के ऊपर बाँसुरी घुमाई कि थान-के-थान उसी तरह के चीर के बनते चले गये। लखटकिया ने एक थान राजा को भेंट किया और बाकी सब लोगों में बाँट दिये। लोग लखटकिया की प्रशंसा करने लगे और राजकुमारी तो खुशी के मारे सुध-बुध ही खो बैठी। राजा ने प्रसन्न होकर राजकुमारी का विवाह लखटकिया के साथ पक्का कर दिया।

लखटकिया ने कहा, "महाराज, मैं राजकुमारी के लिए एक बहुत सुन्दर महल बनवाना चाहता हूं। महल बन जाने के बाद ही मैं शादी करूंगा।"

राजा मान गया और महल बनाने के लिए उसने दूर-दूर से मजदूर बुलवाये। लखटकिया ने देखा कि उनमें उसके सास-ससुर, जेठ-जिठानी और पति भी मौजूद हैं। उसे बड़ा दुःख हुआ। लखटकिया को किसीने भी नहीं पहचाना। लखटकिया ने हुक्म दिया कि आज शाम को इन सात मजदूरों को छुट्टी के बाद रोक लिया जाय। वे घबराये कि अब और क्या मुसीबत आने वाली है। ईंट और गारा ढोते-ढोते तो सारी कमर टूट गई है। अब शनीचर देवता और न जाने क्या असर दिखायंगे।

लखटकिया ने देखा कि ससुर, जेठ और उसके पति की दाढ़ी और बाल बढ़े हुए हैं, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं। मजदूरी करते-करते हाथों में ठेकें पड़ गई हैं। पैरों में बुरी तरह बिवाई फट रही हैं। उसकी आँखों में आँसू आगये। उसने उनकी हजामत बनवाई और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने को

दिये और उनसे बिना काम लिये मजदूरी देने का आदेश दे दिया। बाद में उसने अपनी सास को हुक्म दिया कि तुम अन्दर जाकर मेरी वहू की सेवा-टहल करो।

महल के अन्दर तो वह स्त्री वेष में रहता ही था। उसने एक दिन अपनी सास से कहा कि मेरी जरा पीठ सहला दो।

पीठ सहलाते-सहलाते सास रोने लगी और उसकी हिच-कियाँ बंध गईं।

लखटकिया ने पूछा, "सच-सच बताओ, क्या बात है। इस तरह क्यों रोती हो?"

सास ने कहा, "तुम्हारी पीठ का मस्सा देखकर मुझे अपनी छोटी वहू की याद आ गई है। शनीचर के प्रकोप से हमारी अकल पर पत्थर पड़ गये और हम उसे धोखा देकर अकेली जंगल में भटकने को छोड़ गये। पता नहीं कि वह मरी है या जीती।"

सास का दुख देखकर लखटकिया से चुप न रहा गया और वह उनके चरणों में गिरकर वोली, "माँ, मैं ही वह आपकी छोटी वहू हूं।" सास ने वहू को छाती से लगा लिया।

इसके वाद उसने ससुर, जेठ-जेठानियों और अपने पति को भी बुलवा भेजा। वे अपने किये पर वड़े लज्जित थे। अपने पति को लेकर वह राजा के पास पहुँची और वोली, "महाराज, यह आपके दामाद हैं। मैं तो आपकी पुत्री हूं।" उसने आदि से लेकर अन्त तक सारा किस्सा राजा को कह सुनाया।

राजा ने राजकुमार के साथ अपनी वेटी का व्याह कर दिया और आधा राज्य दे दिया। जिन दो वहुओं को लखट-किया अपनी वहू वनाकर लाया था, वे भी छोटे राजकुमार की रानियाँ वनीं।

छोटा राजकुमार अपनी चारों रानियों और अपने परिवार को लेकर अपने राज्य में लौट आया। इसी समय एक वर्ष पूरा हो गया और शनीचर घवड़ाकर भाग गया। राजा सोकर उठे तो सव ठाठ पहले ही जैसे हो गये। सव लोग सुखपूर्वक रहने लगे।

: ५ :

सिंहलद्वीप की पद्मिनी

किसी जंगल में एक सुन्दर बगीचा था। उसमें बहुत-सी परियां रहती थीं। एक रात को वे उड़नखटोले में बैठकर सैर के लिए निकलीं। उड़ते-उड़ते वे एक राजा के महल की छत से होकर गुज़रीं। गरमी के दिन थे, चांदनी रात थी। राजकुमार अपनी छत पर गहरी नींद में सो रहा था। परियों की रानी की निगाह इस राजकुमार पर पड़ी तो उसका दिल डोल गया। उसके जी में आया कि राजकुमार को चुपचाप उठाकर उड़ा ले जाय, परन्तु उसे पृथ्वीलोक का कोई अनुभव नहीं था, इसलिए उसने ऐसा नहीं किया। वह राजकुमार को बड़ी देर तक निहारती रही। उसके साथवाली परियों ने अपनी रानी की यह हालत भांप ली। वे मज़ाक करती हुई बोलीं, "रानीजी, आदमियों की दुनिया से मोह नहीं करना चाहिए। चलो, अब लौट चलें। अगर जी नहीं भरा तो कल हम आपको यहीं ले आयंगी।"

परी रानी मुस्करा उठी। बोली, "अच्छा चलो। मैंने कब मना किया है? लगता है जिसने मेरे मन को मोह लिया है उसने तुमपर भी जादू कर दिया है।"

परियां यह सुनकर खिलखिला कर हँस पड़ीं और राजकुमार की प्रशंसा करती हुई अपने देश को लौट गईं।

सवेरे जब राजकुमार सोकर उठा तो उसके शरीर में बड़ी ताज़गी थी। वह सोचता कि हिमालय की चोटी पर पहुंच जाऊं या एक छलांग में समुन्दर को लांघ जाऊँ। तभी वजीर ने आकर उसे खबर दी कि राजा की हालत बड़ी खराब है और वह आखिरी सांस ले रहे हैं। राजकुमार की खुशी काफूर हो गई।

वह तुरंत वहां पहुंच गया। राजा ने आंखें खोलीं और राजकुमार के सिर पर हाथ रखता हुआ बोला, "बेटा वज़ीरसाहब तुम्हारे पिता के ही समान हैं। तुम सदा उनकी बात का खयाल रखना।"

इतना कहते-कहते राजा की आंखें सदा के लिए मुंद गईं। राजकुमार फूट-फूटकर रोने लगा। राजा की मृत्यु पर सारे नगर ने शोक मनाया। कहने को तो राजकुमार अब राजा हो गया था, पर अपने पिता की आज्ञानुसार वह कोई भी काम वज़ीर की राय के बिना नहीं करता था।

एक दिन वज़ीर राजकुमार को महल के कमरे दिखाने ले गया। उसने सब कमरे खोल-खोलकर दिखा दिये, लेकिन एक कमरा नहीं दिखाया। राजकुमार ने बहुत ज़िद की, पर वज़ीर कैसे भी राजी न हुआ। वज़ीर का लड़का भी उस समय साथ था। वह राजकुमार का बड़ा गहरा मित्र था। उसने वज़ीर से कहा, "पिताजी, राजपाट, महल और बाग-बगीचे सब इन्हींके तो हैं। आप इन्हें रोकते क्यों हैं!"

वज़ीर ने कहा, "बेटा, तुम ठीक कहते हो। सबकुछ इन्हीं-का है, लेकिन महाराज ने मरते समय मुझे हुक्म दिया था कि इस कमरे में राजकुमार को न ले जाना! अगर मैं ऐसा करूंगा तो राजा को बड़ा बुरा लगेगा।"

वज़ीर का लड़का थोड़ी देर तक सोचता रहा। फिर बोला, "लेकिन पिताजी, अब तो राजकुमार ही हमारे महाराज हैं। उनकी बात मानना हम सबके लिए जरूरी है। अगर आप राजा के दुःख का इतना ध्यान रखते हैं तो हमारे इन राजा के दुःख का भी तो ध्यान रखिये और दरवाजा खोल दीजिये। राजकुमार को दुखी देखकर हमारे राजा को भी शान्ति नहीं मिलेगी।"

वज़ीर ने ज्यादा हठ करना ठीक न समझा और चाबी अपने बेटे के हाथ पर रख दी। ताला खोलकर तीनों अन्दर पहुंचे।

कमरा बड़ा सुन्दर था। छत पर तरह-तरह के कीमती झाड़-फानूस लटक रहे थे और फर्श पर मखमल के गलीचे बिछे हुए थे। दीवार पर सुन्दर-सुन्दर स्त्रियों की तस्वीरें लगी थीं। यकायक राजकुमार की निगाह एक बड़ी सुन्दर युवती की तस्वीर पर पड़ी। उसने वजीर से पूछा कि यह किसकी है। वजीर को जिसका डर था, वही हुआ। उसे बताना ही पड़ा कि वह सिंहलद्वीप की पद्मिनी की है। राजकुमार उसकी सुन्दरता पर ऐसा मोहित हुआ कि उसी छिन उसने वजीर से कहा, "मैं पद्मिनी से ही व्याह करूंगा। जबतक पद्मिनी मुझे नहीं मिलेगी, मैं राज के काम में हाथ भी नहीं लगाऊंगा।"

वजीर हैरान होकर बोला, "राजकुमार, सिंहलद्वीप पहुंचना आसान काम नहीं है। वह सात समुन्दर पार है। वहां पहुंच भी जाओ तो शादी करना तो दूर, उससे भेंट करना भी असम्भव है। उसकी तलाश में जो भी गया है, लौटकर नहीं आया। फिर ऐसे अनहोने काम में हाथ डालने की सलाह मैं आपको कैसे दे सकता हूं?"

पर राजकुमार अपनी बात पर अड़ा रहा। वज़ीर का लड़का उसका साथ देने को तैयार हो गया। वे दोनों घोड़े पर सवार होकर चल दिये। चलते-चलते दिन डूब गया। वे एक बाग में पहुंचे और अपने-अपने घोड़े खोल दिये। हाथ-मुंह धोकर कुछ खाया-पीया। वे थके हुए तो थे ही, चादर बिछाकर लेट गये। कुछ देर बाद ही गहरी नींद में सो गये। आंख खुली और चलने को हुए तो देखते क्या हैं कि बाग का फाटक बन्द हो गया है और वहां कोई खोलनेवाला नहीं है।

बगीचे के बीचों-बीच संगमरमर का एक चबूतरा था। आधी रात पर वहां कालीन बिछाये गये, फूलों और इत्र की सुगंधि चारों ओर फैलने लगी। फिर चबूतरे पर एक सोने का सिंहासन रख दिया गया। कुछ ही देर में घर-घर करता हुआ एक उड़नखटोला वहां उतरा। उसके चारों पायों

को एक-एक परी पकड़े हुए थी और उसपर उनकी रानी विराजमान थी। चारों परियों ने अपनी रानी को सहारा देकर नीचे उतारा और रत्नजटित सोने के सिंहासन पर बिठा दिया। परीरानी ने इधर-उधर देखा और अपनी सखियों से कहा, "वह देखो, पेड़ के नीचे चादर बिछाये दो आदमी सो रहे हैं। उनमें से एक वही राजकुमार है। उसे तुरंत मेरे सामने लाओ।"

हुक्म करने की देर थी कि परियां सोते हुए राजकुमार को अपनी रानी के सामने ले आईं। राजकुमार की आंख खुल गई और वह परी की जगमगाहट से चकाचौंध हो गया। परियों को अपने आगे-पीछे देखकर उसे बड़ा डर लगा और हाथ जोड़कर बोला, "मुझे जाने दीजिये।"

परीरानी ने मुस्कराते हुए कहा, "राजकुमार, अब तुम कहीं नहीं जा सकते। तुम्हें मुझसे विवाह करना होगा।"

राजकुमार बड़ी मुसीबत में पड़ गया। बोला, "परीरानी, मैं क्षमा चाहता हूं। मैं सिंहलद्वीप की पद्मिनी की तलाश में निकला हूं। इस समय मैं विवाह नहीं कर सकता।"

परी ने कहा, "भोले राजकुमार, सिंहलद्वीप की पद्मिनी तक आदमी की पहुंच सम्भव नहीं है। वह दैवी शक्ति के बिना कभी नहीं मिल सकती। अगर तुम मुझसे विवाह कर लोगे तो मैं तुम्हें ऐसी चीज दूंगी, जिससे सिंहलद्वीप की पद्मिनी तुम्हें आसानी से मिल जायगी।"

राजकुमार यह सुनकर बड़ा खुश हुआ और बोला, "परी-रानी, मैं तुमसे जरूर शादी करूंगा, पर तुम्हें मेरी एक बात माननी होगी। मैं जब पद्मिनी को लेकर लौटूंगा तभी तुम्हें अपने साथ ले जा सकूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मेरी इस बात में कोई हेर-फेर नहीं होगा।"

परी ने प्रसन्न होकर अपनी अंगूठी उतारी और राजकुमार की उंगली में पहनाती हुई बोली, "यह अंगूठी जबतक तुम्हारे पास रहेगी कोई भी विपत्ति तुम्हारे ऊपर असर न करेगी।

इसके पास रहने से तुम्हारे ऊपर किसीका भी जादू-टौना नहीं चल सकेगा ।"

अंगूठी देकर परीरानी आकाश में उड़ गई । राजकुमार वजीर के लड़के के पास आकर सो गया । सवेरे उन दोनों ने देखा कि बगीचे का फाटक खुला हुआ है । वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर चल दिये । पद्मिनी से मिलने की राजकुमार को ऐसी उतावली थी कि वह इतना तेज़ चला की वजीर का लड़का उससे बिछुड गया । चलते-चलते राजकुमार एक ऐसे शहर में पहुंचा, जहां हर दरवाज़े पर तलवारें-ही-तलवारें टंगी हुई थीं । एक दरवाज़े पर उसने एक बुढ़िया को बैठे हुए देखा । उसे बड़े जोर की प्यास लगी थी । पानी पीने के लिए वह बुढ़िया के पास पहुंच गया । बुढ़िया झूठमूठ का लाड़ दिखाती हुई बोली, "हाय बेटा ! तू बड़े दिनों बाद दिखाई दिया है । तू तो मुझे पहचान भी नहीं रहा । भूल गया अपनी बूआ को ?"

यह कहते-कहते उसने राजकुमार को हृदय से लगा लिया और चुपचाप उसकी अंगूठी उतार ली । इसके बाद उसने राजकुमार को मक्खी बनाकर दीवार से चिपका दिया ।

उधर वज़ीर के लड़के को राजकुमार की तलाश में भटकते-भटकते बहुत दिन निकल गये । अन्त में उसे एक उपाय सूझा । वह परीरानी के बग़ीचे में पहुँचा और रात को एक पेड़ पर चढ़ गया । आधी-रात को परीरानी उसी चबूतरे पर उतरी । वह वज़ीर के लड़के की विपदा को समझ गई । उसने उसे अपने सामने बुलाकर कहा, "यहाँ से सौ योजन की दूरी पर एक जंगल है । उसमें तरह-तरह के हिंसक पशु रहते हैं । वहाँ ताड़ के पेड़ पर एक पिंजड़ा टँगा हुआ है । उसमें एक तोता बैठा है । उस तोते में उस जादूगरनी की जान है, जिसने तुम्हारे राजकुमार को मक्खी बनाकर अपने घर में दीवार चिपका रक्खा है ।"

वज़ीर के लड़के ने पूछा कि इतनी दूर मैं कैसे पहुँच सकता हूँ ?

परीरानी ने वज़ीर के लड़के को अपने कान की वाली उतारकर दी और कहा कि इसको पास रखने से तुम सौ योजन एक घंटे में तय कर लोगे। इसमें एक सिफ़त यह भी है कि तुम सबको देख सकोगे और तुम्हें कोई नहीं देख पावेगा। इस प्रकार तोते के पिंजड़े तक पहुँचने में तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी और तोते को मारना तुम्हारे बाँए हाथ का खेल होगा।

वज़ीर का लड़का वाली लेकर खुशी-खुशी जंगल की ओर चल दिया। पेड़ के पास पहुँचकर उसने पिंजड़ा उतारा और तोते की गर्दन मरोड़ डाली। इधर तोते का मरना था कि जादूगरनी का भी अन्त होगया। वज़ीर का लड़का वहाँ से जादूगरनी के घर पहुँचा। जादूगरनी की उंगली से जैसे ही उसने अंगूठी खींची कि राजकुमार मक्खी से फिर आदमी बन गया। वज़ीर के लड़के से मिलकर राजकुमार खुशी के मारे उछल पड़ा। वजीर के लड़के ने राजकुमार को सारा किस्सा कह सुनाया।

अब दोनों साथ-साथ पद्मिनि से मिलने चल दिये। चलते-चलते वे बहुत थक गये थे। रात भर के लिए वे एक सराय में रुक गये। राजकुमार सो रहा था। उधर से विमान में बैठकर महादेव-पार्वती निकले। दोनों बात-चीत करते चले जा रहे थे। यकायक महादेवजी बड़े उदास होगये। पार्वतीजी ने उनकी उदासी का कारण पूछा।

महादेवजी ने कहा, "पार्वती, इस नगर की राजकुमारी बहुत सुन्दर और गुणवती है। राजा उसकी शादी एक काने राजकुमार के साथ कर रहा है। अगर ब्याह होगया तो जनम-भर राजकुमारी को काने के साथ रहना पड़ेगा। मैं इसी सोच में हूं कि इस सुन्दरी को काने से कैसे छुटकारा दिलाऊँ ?"

पार्वतीजी ने नीचे सोये हुए राजकुमार की ओर इशारा करते हुए कहा, "देखिये जरा नीचे की ओर, कितना सुन्दर राजकुमार है। विमान उतारिये और राजकुमार को लेकर वर की जगह पहुँचा दीजिये।"

महादेवजी को यह युक्ति जँच गई। उन्होंने ऐसा ही किया। राजकुमार की शादी उस राजकुमारी से होगई। विदा के समय राजकुमार बड़े चक्कर में पड़ा। उसने कहा, "राजकुमारी, मैं सिंहलद्वीप की पद्मिनी की खोज में निकला हूं। उससे विवाह करने के बाद लौटते समय मैं तुम्हें साथ ले जाऊँगा। इस समय तो तुम मुझे जाने दो।"

राजकुमारी को राजकुमार पर विश्वास होगया। उसने उसे दो बाल दिये। एक सफेद और एक काला। राजकुमारी ने कहा कि काला बाल जलाओगे तो काला दैत्य आजायगा और जो कहोगे करेगा। सफेद बाल जलाने से सफेद देव प्रकट हो जायगा और सारी इच्छाएँ पूरी कर देगा।

राजकुमार बाल पाकर बड़ा खुश हुआ और राजकुमारी को लौटने का भरोसा देकर सिंहलद्वीप की ओर चल पड़ा। पहले उसने काला बाल जलाया। बाल के जलने की देर थी कि काला दैत्य राजकुमार के आगे आ खड़ा हुआ। राजकुमार पहले तो बहुत डरा, पर वह जानता था कि वह दैत्य उसका सेवक है। उसने हुक्म दिया, "जाओ, वज़ीर के लड़के को मेरे पास ले आओ।"

काला दैत्य उसी क्षण वज़ीर के लड़के को राजकुमार के पास ले आया। फिर बोला, "और कोई आज्ञा?"

राजकुमार ने कहा, "हम दोनों को पद्मिनी के महल में पहुँचा दो।"

कहने की देर थी कि वे पद्मिनी के महल के फाटक पर आगये। वहां एक हृष्ट-पुष्ट संतरी पहरा दे रहा था। उसने अन्दर नहीं जाने दिया। राजकुमार ने फिर काला

बाल जलाया। दैत्य हाजिर होगया। राजकुमार के हुक्म देते ही काले दैत्यों की पलटन आगई। उन्होंने रानी पद्मिनी के सिपाहियों को बात-की-बात में मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद दैत्य गायब होगये।

राजकुमार और वज़ीर का लड़का महल में घुसे। राजकुमार ने सफेद बाल जलाया। सफ़ेद देव आ गया। राजकुमार ने उससे कहा, "मैं पद्मिनी से विवाह करना चाहता हूँ। बरात सजा कर लाओ।"

जरा-सी देर में देव अपने साथ एक बड़ी शानदार बरात सजा कर ले आया। पद्मिनी के पिता ने जब देखा कि कोई राजकुमार पद्मिनी को शानशौकत से ब्याहने आया है और इतना शक्तिशाली है कि उसने उसकी सारी सेना नष्ट कर डाली है तो उसने चूं तक न की। राजकुमार का ब्याह पद्मिनी से हो गया।

अब राजकुमार पद्मिनी को लेकर अपने घर की ओर रवाना हो गया। रास्ते में से उसने उस राजकुमारी को अपने साथ लिया, जिसने उसे बाल दिये थे। इसके बाद वह परीरानी के बगीचे में आया। रात को सब वहीं ठहरे। आधी रात को परीरानी आई। राजकुमार उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला, "यह तुम्हारी ही कृपा का फल है, जो मैं पद्मिनी को लेकर यहाँ अच्छी तरह लौट आया। यह दूसरी राजकुमारी भी तुम्हारी ही तरह मुसीबत में मेरी सहायक हुई है। तुम इसे छोटी बहन समझकर खूब प्यार से रखना।"

परीरानी गद्गद कण्ठ से बोली "राजकुमार, तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी है। पद्मिनी के कारण ही हम दोनों को तुम्हारे जैसा सुन्दर राजकुमार मिला है। पद्मिनी आज से पटरानी हुई और हम दोनों उसकी छोटी बहनें।"

वे सब उड़नखटोले में बैठकर राजकुमार के देश में आगई। नगर भर में खूब आनंद मनाया गया और धूमधाम के साथ राजकुमार की तीनों रानियों के साथ सवारी निकाली गई।

: ६ :

हँसता-रोता मोर

किसी नगर में एक राजा राज करता था। एक दिन की बात कि राजा ने भरे दरबार में सबके सामने पान का बीड़ा फेंकते हुए कहा, "है कोई यहाँ ऐसा बहादुर जो ऐसा मोर ला सके, जिसके हँसने से रेशम के लच्छे निकलें और रोने पर मोती झड़ें ?"

दरबार में चारों ओर सन्नाटा छा गया। कोई आगे न बढ़ा।

राजा को बड़ा गुस्सा आया और वह पैर पटकते हुए अपने बेटों से बोला, "धिक्कार है तुम्हारे क्षत्रिय-खून को, जो तुम इस तरह गर्दन झुकाये हुए खड़े हो !"

राजकुमारों के मान को बड़ा धक्का लगा। उनका साहस जाग उठा। वे सब आगे आकर बोले, "पिताजी, हम सब मिलकर ऐसे मोर का पता जरूर लगावेंगे।"

राजा ने प्रसन्न होकर सातों राजकुमारों को छाती से लगाया और ढाल-तलवार देकर उन्हें आशीर्वाद के साथ विदा किया।

सातों राजकुमार मोर की तलाश में निकल पड़े। वे आगे बढ़ते जा रहे थे, पर वे खुद नहीं जानते थे कि कहां जाना है। मोर का कोई अता-पता भी तो नहीं था। चलते-चलते वे एक जंगल में पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक अजीब तरह की झोंपड़ी देखी, जो न तो जमीन पर टिकी थी और न आकाश को छू रही थी। दोनों के बीच में अधर लटक रही थी। बड़ा राजकुमार हिम्मत करके उसके पास पहुँचा तो झोंपड़ी नीचे सरकने लगी और राजकुमार के सिर से टकरा गई। राजकुमार डर के मारे भाग आया। धीरे-धीरे वह झोंपड़ी जमीन पर आगई। उसका द्वार खुला हुआ था, पर किसी राजकुमार की हिम्मत उसमें जाने को न हुई। सबसे

छोटा राजकुमार सीधा-सादा था। सबने फुसलाकर उसीको झोंपड़ी के अन्दर भेज दिया। वहाँ जाकर उसने देखा कि एक साधु समाधि लगाये बैठा है। उसके सारे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल उगे हुए हैं, दाढ़ी बढ़कर पैरों को छू रही है और सिर के बाल भी जमीन पर इधर-उधर लहरा रहे हैं। मूंछों के बालों का भी यही हाल था। राजकुमार कुछ देर चुपचाप वहाँ खड़ा रहा, पर साधुबाबा का ध्यान न टूटा। राजकुमार ने पानी से साधु का सारा शरीर साफ किया, कंघी से बाल सँवारे। इतने में वह देखता क्या है कि झोंपड़ी के एक कोने में मक्खन रक्खा हुआ है और एक कोने में कन्द-मूल-फल। उसने मक्खन लेकर साधु के माथे पर मलना शुरू किया। मक्खन मलते ही साधु की समाधि टूट गई। वह बोला, "बच्चा, तेरी सेवा से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। जो माँगे सो पावे।"

राजकुमार ने तीन बार साधु से यह कहलवा लिया कि वह जो कुछ माँगेगा, साधु उसकी इच्छा पूरी करेगा।

तब राजकुमार ने कहा, "मैं राजा का बेटा हूँ। पिताजी ने हम सब भाइयों को एक बहुत ही कठिन काम सौंपा है। आप उसे पूरा करने का कोई उपाय बताइये।"

साधु बोला, "वह कौनसा काम है?"

राजकुमार ने कहा, "बाबा, पिताजी के पास ऐसा मोर ले जाना है जो हँसे तो रेशम के लच्छे निकलें और रोये तो मोती झड़ें।"

साधु बोला, "बच्चा, यह काम कठिन ही नहीं, असम्भव है। खैर, कोई बात नहीं, मैं तुम्हें मोर को पाने का कुछ-न-कुछ उपाय जरूर बताऊँगा।"

साधु ने अंटी में से एक काजल की डिबिया निकाली और राजकुमार को देते हुए कहा, "लो, यह ले जाओ। इसके लगाने पर तुम सबको देख सकोगे और तुम्हें कोई नहीं देख पावेगा। भगवान् का नाम लेकर जाओ, वह सब भला करेंगे।"

: ६ :

हँसता-रोता मोर

किसी नगर में एक राजा राज करता था। एक दिन की बात कि राजा ने भरे दरबार में सबके सामने पान का बीड़ा फेंकते हुए कहा, "है कोई यहाँ ऐसा बहादुर जो ऐसा मोर ला सके, जिसके हँसने से रेशम के लच्छे निकलें और रोने पर मोती झड़ें?"

दरबार में चारों ओर सन्नाटा छा गया। कोई आगे न बढ़ा।

राजा को बड़ा गुस्सा आया और वह पैर पटकते हुए अपने बेटों से बोला, "धिक्कार है तुम्हारे क्षत्रिय-खून को, जो तुम इस तरह गर्दन झुकाये हुए खड़े हो!"

राजकुमारों के मान को बड़ा धक्का लगा। उनका साहस जाग उठा। वे सब आगे आकर बोले, "पिताजी, हम सब मिलकर ऐसे मोर का पता जरूर लगावेंगे।"

राजा ने प्रसन्न होकर सातों राजकुमारों को छाती से लगाया और ढाल-तलवार देकर उन्हें आशीर्वाद के साथ विदा किया।

सातों राजकुमार मोर की तलाश में निकल पड़े। वे आगे बढ़ते जा रहे थे, पर वे खुद नहीं जानते थे कि कहां जाना है। मोर का कोई अता-पता भी तो नहीं था। चलते-चलते वे एक जंगल में पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक अजीब तरह की झोंपड़ी देखी, जो न तो जमीन पर टिकी थी और न आकाश को छू रही थी। दोनों के बीच में अधर लटक रही थी। बड़ा राजकुमार हिम्मत करके उसके पास पहुँचा तो झोंपड़ी नीचे सरकने लगी और राजकुमार के सिर से टकरा गई। राजकुमार डर के मारे भाग आया। धीरे-धीरे वह झोंपड़ी जमीन पर आगई। उसका द्वार खुला हुआ था, पर किसी राजकुमार की हिम्मत उसमें जाने को न हुई। सबसे

छोटा राजकुमार सीधा-सादा था। सबने फुसलाकर उसीको झोंपड़ी के अन्दर भेज दिया। वहाँ जाकर उसने देखा कि एक साधु समाधि लगाये बैठा है। उसके सारे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल उगे हुए हैं, दाढ़ी बढ़कर पैरों को छू रही है और सिर के बाल भी जमीन पर इधर-उधर लहरा रहे हैं। मूंछों के बालों का भी यही हाल था। राजकुमार कुछ देर चुपचाप वहाँ खड़ा रहा, पर साधुबाबा का ध्यान न टूटा। राजकुमार ने पानी से साधु का सारा शरीर साफ किया, कंघी से बाल सँवारे। इतने में वह देखता क्या है कि झोंपड़ी के एक कोने में मक्खन रक्खा हुआ है और एक कोने में कन्द-मूल-फल। उसने मक्खन लेकर साधु के माथे पर मलना शुरू किया। मक्खन मलते ही साधु की समाधि टूट गई। वह बोला, "बच्चा, तेरी सेवा से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। जो माँगे सो पावे।"

राजकुमार ने तीन बार साधु से यह कहलवा लिया कि वह जो कुछ माँगेगा, साधु उसकी इच्छा पूरी करेगा।

तब राजकुमार ने कहा, "मैं राजा का बेटा हूँ। पिताजी ने हम सब भाइयों को एक बहुत ही कठिन काम सौंपा है। आप उसे पूरा करने का कोई उपाय बताइये।"

साधु बोला, "वह कौनसा काम है ?"

राजकुमार ने कहा, "बाबा, पिताजी के पास ऐसा मोर ले जाना है जो हँसे तो रेशम के लच्छे निकलें और रोये तो मोती झड़ें।"

साधु बोला, "बच्चा, यह काम कठिन ही नहीं, असम्भव है। खैर, कोई बात नहीं, मैं तुम्हें मोर को पाने का कुछ-न-कुछ उपाय जरूर बताऊँगा।"

साधु ने अंटी में से एक काजल की डिबिया निकाली और राजकुमार को देते हुए कहा, "लो, यह ले जाओ। इसके लगाने पर तुम सबको देख सकोगे और तुम्हें कोई नहीं देख पावेगा। भगवान् का नाम लेकर जाओ, वह सब भला करेंगे।"

झोंपड़ी से बाहर आते ही सब भाई राजकुमार के पीछे पड़ गये और पूछने लगे कि उसने अन्दर इतनी देर क्यों लगाई ?

राजकुमार ने डिबिया दिखाते हुए कहा, "भैया, इस झोंपड़ी में एक साधु रहते हैं। उन्होंने मुझे यह काजल की डिबिया दी है। इस काजल को जो कोई लगावेगा, वह किसीको नहीं दीखेगा।"

बड़ा राजकुमार बोला, "तब तो यह बड़ी करामाती डिबिया है। ला, इसे मुझे दे दे। तू बच्चा है, कहीं खो देगा।"

छोटे राजकुमार के मन में कोई छल-कपट नहीं था। उसने वह डिबिया बड़े भाई के पास रखवा दी। दिन भर के थके हुए थे। लेटते ही सो गये। बड़ा राजकुमार जागता रहा। उसने धीरे-धीरे सब भाइयों को जगाया और उनको साथ लेकर वहां से चल दिया। छोटे भाई को वहीं सोते छोड़ गया।

सवेरे जब छोटे राजकुमार की आंख खुली तो अपने भाइयों को गायब देखकर बड़ा घबराया। पर वह करता क्या ? मन में धीरज रखकर आगे चल दिया। कई दिन भटकने के बाद वह एक नगर में आया। उस नगर की राजकुमारी अनबोला थी। वहाँ डौंडी पिट रही थी कि जो कोई अनबोला राजकुमारी को बुलवा देगा, उसीके साथ उसकी शादी कर दी जायगी; पर न बुलवा सका तो उसे जेल में डाल दिया जायगा। राजकुमार ने जब यह सुना तो उसने सोचा की जल्दी में कोई काम करना ठीक नहीं। वह एक सराय में जाकर ठहर गया।

सराय की भटियारिन ने उसे देखकर कहा, "बेटा, तेरी-सी सूरत के छः राजकुमार यहां आये थे। अनबोला रानी को व्याहने चले थे, पर कोई न बुलवा सका। अब सब जेल में पड़े सड़ रहे हैं।"

राजकुमार ने कहा, "वे मेरे ही भाई हैं। मैं उन्हींकी तलाश में यहां आया हूँ। क्या वे अपना सामान यहीं छोड़ गये हैं ?"

भटियारिन ने कहा, "हाँ, सामान उनका अच्छी तरह से

रक्खा है।"

राजकुमार ने खुश होकर पाँच अशर्फियाँ भटियारिन के हाथ पर रख दीं। भटियारिन ने सारा सामान राजकुमार को दे दिया। उसमें काजल की डिबिया राजकुमार को मिल गई।

राजकुमार ने भटियारिन से पूछा, "तुम तो इस शहर में बहुत दिनों से रहती हो। तुम्हें यह भेद जरूर मालूम होगा कि अनबोला राजकुमारी को कैसे बुलवाया जा सकता है।"

भटियारिन की अंटी गरम हो चुकी थी और राजकुमार से उसे और भी ज्यादा धन की आशा थी। वह उसे एक कोठरी में ले गई और अन्दर से दरवाजा बन्द कर दिया। फिर बोली, "बेटा, अनबोला राजकुमारी शतरंज की बहुत अच्छी खिलाड़िन है। उसे कोई हरा नहीं सकता। जब हारने का मौका आता है तो अपनी सिखाई हुई बिल्ली को इशारा कर देती है। वह दीपक गिरा देती है और शतरंज के मोहरों को अंधेरे में लौट-पौटकर देती है। नतीजा यह होता है कि राजकुमारी जीत जाती है और उसके साथ खेलनेवाले को जेल के सींकचों में बन्द कर दिया जाता है।"

राजकुमार को जब यह भेद मालूम हुआ तो उसने एक चूहा पाला। चूहे को आस्तीन में छिपाकर वह महल की ड्योढ़ी पर आया और नगाड़े पर चोट की। राजा के आदमी समझ गये कि आज फिर कोई चिड़िया आ फँसी! वे उसे अन्दर ले गये और अनबोला रानी के पास पहुँचा दिया।

राजकुमारी के हुक्म से शतरंज खेलने का प्रबन्ध किया गया। कमरे में राजकुमारी और राजकुमार के अलावा कोई नहीं था। राजकुमार ने ऐसी होशियारी से खेल खेला कि राजकुमारी दंग रह गई। वह हारनेवाली थी कि उसने बिल्ली को इशारा किया। बिल्ली ने दीपक बुझा दिया और मोहरें उलट-फेर करने ही वाली थी कि राजकुमार ने चूहा छोड़ दिया। बिल्ली तुरंत चूहे पर झपट पड़ी। उसे मोहरे बदलने का ध्यान भी न रहा। अन-

बोला राजकुमारी राजकुमार से मात खा गई और गुस्से में भर कर बोली, "यह क्या हुआ ?" राजकुमार खुशी के मारे उछल पड़ा और बोला, "मारो नगाड़े पर चोट, अनबोला रानी बोल पड़ी ।"

नगाड़ा खूब जोर से पीटा गया। सारा शहर जान गया कि राजकुमारी बोल पड़ी। चारों ओर राजकुमार की प्रशंसा होने लगी। अनबोला राजकुमारी ने राजकुमार का तिलक किया। बोली, "अब मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगी ।"

राजकुमार ने कहा, "मैं जरूर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा, परन्तु कुछ दिनों के बाद। पहले तुम मेरे भाइयों को तुरन्त जेल से छोड़ दो ।"

छहों राजकुमार जेल से छूट गए। वे अपने छोटे भाई के भाग्य पर ईर्ष्या करने लगे। वे उससे बोले, "भैया, यहां ऐश और आराम में हमें समय नहीं खोना है। अब जल्दी चलकर मोर का पता लगाना चाहिए ।"

वे सब वहाँ से चल दिये। चलते-चलते बियाबान जंगल में पहुँचे। प्यास के मारे उनके प्राण निकले जा रहे थे। थोड़ी दूर पर उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया। छोटा भाई पानी लेने गया। जब वह कुंए की जगत पर खड़ा-खड़ा पानी खींच रहा था तभी उसके भाइयों ने उसके हाथ काट दिये और उसे कुंए में धकेल दिया। कुंए में पानी थोड़ा था। सो वह डूबा नहीं। सब भाई वहाँ से चम्पत हो गये। उधर से कुछ बंजारे जा रहे थे। आहट पाकर राजकुमार खूब ज़ोर-ज़ोर से गाने लगा। गाने की आवाज सुनकर बंजारे इधर-उधर ताकने लगे। उन्हें कहीं कोई दिखाई न दिया। अन्त में एक बंजारे ने कुएँ में झाँककर देखा। वह चीखकर पीछे हट गया, बोला "भैया, इसमें तो कोई भूत है ।"

दूसरा बंजारा हिम्मत करके झाँका तो राजकुमार ने कहा, "क्यों बेकार में डरते हो। मैं भूत-प्रेत नहीं, तुम्हारी ही तरह का आदमी हूं ।" फिर अपने कटे हुए हाथों को दिखाते हुए बोला,

"मेरे भाइयों ने मार हाथ काट डाले हैं। अब तो विश्वास करो कि मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।"

वंजारों को दया आगई और उन्होंने राजकुमार को बाहर निकाल लिया। राजकुमार उनके ढोरों की रखवाली करता और मस्त रहता। इसी प्रकार दिन बीतते गये और जाड़ा आ गया। ढोरों के खाने के लिए करव का ढेर लगा हुआ था। बेचारा राजकुमार उसीमें पड़कर सो जाता था। एक दिन अचानक रात को उसके कान में किसीके गाने की भनक पड़ी। उसकी आँख खुल गई। उसने देखा की करव के नीचे एक गड्ढा हो गया है और उसमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। उसने डिबिया में से निकालकर काजल लगाया और सीढ़ियों पर होकर नीचे उतरने लगा। नीचे जाकर उसने देखा कि एक बहुत बड़ी रंग-शाला है, मेहतर झाड़ू लगा रहे हैं, भिश्ती छिड़काव कर रहे हैं। उसके बीचोंबीच एक चबूतरे पर हीरे-जवाहरात से जड़ा हुआ सोने का सिंहासन रक्खा हुआ है। चारों ओर मखमल के गलीचे बिछे हुए हैं और सारा वातावरण इत्र की सुगन्ध से महक रहा है। सिंहासन पर एक बहुत ही तेजस्वी देवता बैठा है। उसके सामने अप्सराएँ नाच-गा रही हैं। वह चुपचाप एक कोने में बैठकर मजलिस का आनन्द लेने लगा। यकायक उसके जी में आई कि जरा काजल पोंछकर देखे तो कि वहाँ उसकी मौजूदगी का क्या असर होता है! उसने जैसे ही काजल पोंछा कि सिंहासन पर बैठा हुआ देवता आग-बबूला हो उठा और चीखकर बोला, "कौन है तू? क्या नहीं जानता कि देवताओं की मजलिस में आदमी नहीं आ सकते?"

राजकुमार ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "जानता हूँ देवाधिदेव! सबकुछ जानता हूँ। आप संगीत प्रेमी हैं। यहाँ ऊँचे दर्जे के संगीत और नाच का आयोजन हो रहा है, पर तबले के बिना इस मण्डली का वही हाल है, जैसे नमक के बिना भोजन का।"

देवता राजकुमार की बातों पर मुग्ध हो गया। बोला, "क्या

तुम किसी अच्छे तबलची को ला सकते हो ?"

राजकुमार ने कहा, "मैं कहाँ से ला सकता हूँ। मेरे हाथ होते तो मैं ख़ुद ही आपकी सेवा करता।"

देवता ने प्रसन्न होकर छोटे देवताओं को आज्ञा दी कि राजकुमार के हाथ लगा दिए जायं।

देखते-देखते उसके हाथ जुड़ गए, फिर क्या था। राजकुमार ने ऐसा तबला बजाया कि समां वँध गया। सभा खतम हुई तो राजकुमार चल दिया।

देवता ने उसे रोककर कहा, "जाता कहाँ है? हाथ तो वापस देता जा।"

राजकुमार हाथ देकर चला आया। उस दिन से राजकुमार रोज देवसभा में जाकर तबला बजाने लगा। देवता उसपर बहुत प्रसन्न था। एक दिन राजकुमार ने प्रार्थना की, "महाराज, हाथों के बिना मेरा जीना दूभर हो रहा है। रात तो रास-रंग में कट जाती है, पर दिन योंही जाता है। मेहनत-मजदूरी करके अपना पेट भी नहीं भर सकता। आप दया करके इन हाथों को मेरे ही पास रहने दीजिए।"

उस दिन देवता ने हाथ वापस नहीं लिये। दूसरे दिन राजकुमार वहाँ से चल दिया। चलते-चलते वह एक नगर में आया। उसने महल की छत की ओर देखा तो राजा की बेटी खड़ी अपने बाल सँवार रही थी। उसकी निगाह भी राजकुमार पर पड़ी। दोनों एक दूसरे पर मोहित हो गये। राजकुमार ने सुना कि यह राजकुमारी जिस आदमी से विवाह करती है वह उसी रात को काल का ग्रास हो जाता है। राजकुमार ने राजकुमारी से शादी करने का निश्चय किया और महलों में खबर भेज दी।

राजकुमारी ने राजकुमार को बुलवाया और कहा, "मुझे विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं है। पर तुम नहीं जानते कि मुझसे शादी करनेवाला दूसरा सवेरा नहीं देख पाता। तुम्हारे जैसे छः राजकुमार यहां आये थे और एक-एक करके वे सब

खत्म हो गये। मैं खुद बहुत दुःखी रहती हूँ, पर कर कुछ भी नहीं पाती। अपनी जान की खातिर तुम मुझसे शादी करने के प्रस्ताव को वापस ले लो।"

राजकुमार कैसे भी न माना और शादी होगई। रात को राजकुमारी गहरी नींद में सो गई, पर राजकुमार जागता रहा। वह काजल लगाकर दुर्घटना की प्रतीक्षा करने लगा। आधी रात पर उसने देखा कि राजकुमारी के मुंह से एक चमचमाती हुई काली नागिन लहराती हुई बाहर निकल रही है। जब वह पूरी बाहर आई तो जैसी उसकी आदत थी वह राजकुमार के पलंग पर रेंग गई। राजकुमार तो ताक में था ही। उसने तलवार निकालकर उसके तीन टुकड़े कर डाले और उठाकर उन्हें पीकदान में डाल दिया। इसके बाद वह लम्बी तानकर सो गया।

सवेरे राजकुमारी की आंख खुली तो राजकुमार की ओर उसने देखा भी नहीं, क्योंकि वह जानती थी कि मरे हुए पति को देखकर उसे दुःख ही होगा। पर खुर्राटों की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ी, बोली, "अरे, क्या यह सपना है? वह राजकुमार से लिपट गई। राजकुमार ने आंखें खोल दीं और कहा, "रानी, आज तो बड़े सुख की नींद आई।"

राजकुमारी को इस भेद का कुछ भी पता नहीं था। उसने राजकुमार से कहा, "आज मुझे अपना जी बड़ा हल्का-हल्का लग रहा है। सच बताओ तुम क्या जादू जानते हो, जिससे तुमने अपने प्राणों की रक्षा करके मुझे कलंक लगने से बचा लिया?"

राजकुमार ने पीकदान उठाया और नागिन के टुकड़े दिखाते हुए सारी बात राजकुमारी से कह सुनाई। राजकुमारी का रोम-रोम पुलकित हो उठा। वह राजकुमार को एक कोठरी में ले गई और उसने वहां उन राजकुमारों की हड्डियां दिखाईं जो उसके कारण नागिन के शिकार हो चुके थे।

राजकुमार चलने को हुआ तो राजकुमारी भी साथ चलने को तैयार हो गई। राजकुमार ने कहा, "मैं एक ऐसे मोर की

तलाश में निकला हूँ जो हँसे तो रेशम के लच्छे निकलें, रोये तो मोती झड़ें। उसकी मुझे पक्की जगह भी नहीं मालूम; तुम मेरे साथ चलकर कहां-कहां भटकोगी। इसलिए अभी यहीं ठहरो। मैं काम पूरा करके जल्दी ही लौटूंगा।"

राजकुमारी ने कहा, "यहां से थोड़ी दूर पर एक महात्मा तपस्या कर रहे हैं। उन्हें मोर का अता-पता मालूम है। वे इस काम में जरूर तुम्हारी सहायता करेंगे; पर सुना है, उन्हें प्रसन्न करना बड़ा कठिन है।"

राजकुमारी को जल्दी लौटने का आश्वासन देकर राजकुमार चल दिया। आगे जाने पर उसे वही महात्मा दिखाई दिये। वह समाधि लगाये बैठे थे। उनके शरीर पर मिट्टी का ढेर लग गया था। जगह-जगह चींटे लगे हुए थे। राजकुमार उसी दिन से महात्मा की सेवा में जुट गया। सेवा करते-करते छः महीने बीत गये। एक दिन राजकुमार देखता क्या है कि महात्माजी ने आंखें खोल दीं। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उनके चरणों में गिर गया।

महात्मा ने कहा, "बेटा, सेवा कभी अकारथ नहीं जाती। मैं तुमसे बहुत खुश हूं। मैं जानता हूं तू मोर की तलाश में निकला है। पर वह तो दैत्यों की राजधानी में है। वहां जाकर कोई जीवित नहीं लौटता। तो भी मैं तुझे वहां पहुंचने का उपाय जरूर बताऊंगा।" यह कहकर उन्होंने राजकुमार को एक रील दी और कहा कि इसका डोरा अपने आगे-आगे छोड़ते जाना। तुम बिना किसी विघ्न-बाधा के दैत्यों की राजधानी में पहुंच जाओगे। दैत्यराज के महल में एक राजकुमारी रहती है। उसकी मदद से तुम्हारा सारा काम बन जायगा। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। अब तुम निर्भय होकर चले जाओ।"

राजकुमार रील को आगे छोड़ता हुआ बढ़ता गया और दैत्यों की राजधानी में आ पहुंचा। उसने आंखों में काजल लगाया और पेड़ों पर चढ़कर बगीचे के फल तोड़-तोड़कर खाने

लगा।

उसी बाग में एक बारहद्वारी थी। उसमें सजे हुए सिंहासन पर एक राजकुमारी लेटी हुई थी। राजकुमार ने बड़े जोर से कहा, "सुन्दरी, मैं तुम्हारा उद्धार करने के लिए आया हूं।"

राजकुमारी हक्की-बक्की होकर इधर-उधर देखने लगी, पर उसे कुछ भी दिखाई न दिया। वह भयभीत होकर बोली, "इस निर्जन दैत्य-नगरी में मनुष्य का स्वर कहाँ और किधर से आ रहा है ?"

राजकुमार ने तुरन्त अपना काजल पोंछ डाला और अपने वास्तविक रूप में राजकुमारी के सामने आ खड़ा हुआ।

राजकुमार के रूप पर राजकुमारी मोहित हो गई, लेकिन उसी समय उसे दैत्यराज का ध्यान आया। वह काँपती आवाज में बोली, "तुम यहाँ क्यों आये हो ? तुम अभी, इसी क्षण यहाँ से चले जाओ। दैत्यराज आने ही वाला है। वह तुम्हें जीवित न छोड़ेगा। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, पाँव पड़ती हूँ तुम यहाँ से भाग जाओ।"

राजकुमार ने काजल लगाया और वह फिर अदृश्य होगया।

थोड़ी देर में दैत्यराज आया। राजकुमारी ने उसे खूब शराब पिलाई और फिर प्यार से उसके बालों में अपनी उंगलियाँ उलझाती हुई बोली, "पिताजी, आप बुड्ढे होते जा रहे हैं, अगर आपको कुछ हो गया तो अकेली मैं यहाँ कैसे रहूंगी ? इसी सोच में मैं घुलती रहती हूं।"

दैत्य ने हँसते हुए कहा, "पगली, मेरी जिन्दगी को कौन खतम कर सकता है ? एक बात बताता हूं, उसे ध्यान से सुन। अपने पीछे वाले बगीचे में जो फुव्वारा है न, उसपर एक सफेद मोर बैठा हुआ है। वह मोर, जानती है, कैसा है ? वह हँसता है तो रेशम के लच्छे निकलते हैं, रोता है तो मोती झरते हैं। उस मोर को वहाँ से हटाने पर एक टोंटी दिखाई देती है। उस टोंटी के अन्दर एक मेंढक बैठा है। उसे टोंटी को खोले बिना

कोई भी नहीं देख सकता। बस उसी मेंढ़क में मेरी जान है। अब तू ही बता कि है न तेरी चिन्ता व्यर्थ की? न कोई उस मेंढ़क का पता पा सकेगा और न मेरी मृत्यु होगी।"

बातें करते-करते दैत्यराज सो गया। दूसरे दिन सवेरे ही वह शिकार की खोज में चला गया।

राजकुमार ने अदृश्य होकर दैत्यराज और राजकुमारी के बीच होनेवाली सारी बात सुन ली थी। दैत्य के जाते ही वह बगीचे में पहुंच गया। पहले तो उसने फुव्वारे पर बैठे हुए सफ़ेद मोर को खूब प्यार किया, फिर उसे नीचे उतार लिया। उसके नीचे वास्तव में एक टोंटी थी। राजकुमार ने ज्योंही उसे खोला कि एक मेंढ़क उछलता हुआ बाहर निकल आया। मेंढ़क के बाहर निकलते ही बड़े जोर की आँधी शुरू हो गई। दैत्य हाँफता हुआ राजकुमार की ओर दौड़ा आ रहा था। राजकुमार ने जब यह देखा तो मेंढ़क की एक टाँग तोड़ दी। अब दैत्य लगड़ाता-लंगड़ाता दौड़ने लगा। राजकुमार ने उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ डाली। तब भी वह लुढ़कता-पुढ़कता राजकुमार की ओर बढ़ रहा था। राजकुमार ने तुरन्त मेंढ़क की गर्दन मरोड़ डाली। दैत्यराज कराहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा और खतम हो गया।

मोर को लेकर राजकुमार बहुत खुश हुआ। वह राजकुमारी के पास पहुंचा और बोला, "अब तुम इसे हँसाकर और रुलाकर दिखाओ।"

राजकुमारी ने कहा, "मोर भैया, मोर भैया, राक्षस मर गया।"

मोर हँस पड़ा और रेशम के लच्छों का ढेर लग गया। फिर राजकुमारी ने कहा, "मोर भैया, मोर भैया, मैं तुझे छोड़कर राजकुमार के साथ जा रही हूं।"

मोर रो उठा और मोती झरने लगे।

राजकुमार बहुत प्रसन्न हुआ। उसने राजकुमारी और मोर को साथ लिया और अपने राज्य की ओर वापस चल दिया।

रास्ते में राजकुमारी ने कहा, "देखो, इस मोर के रोने से जो मोती झड़ते हैं वे बड़े काम के हैं। अगर उन्हें किसी मरे हुए आदमी की हड्डियों पर बिखेर दिया जाय तो वह तुरन्त जिन्दा हो जायगा।"

राजकुमार को लगा, जैसे वह स्वप्नलोक में हो। अब एक ही बात उसके दिमाग में घूम रही थी कि कैसे वह नागिनवाली राजकुमारी के पास पहुँचे और अपने भाइयों को जिन्दा देखे। उसके पैरों में शक्ति आगई और वह शीघ्र ही वहाँ पहुंच गया। वह कोठरी में गया और उसने हड्डियों पर मोती बिखेर दिये। सब राजकुमार 'हरे-हरे' कहते हुए उठ पड़े।

राजकुमार ने अब नागिनवाली राजकुमारी और अपने भाइयों को भी साथ ले लिया। चलते-चलते वे सब अनबोला रानी के यहाँ पहुंचे। अनबोला रानी ने राजकुमार के लिए एक उड़नखटोला बनवा रक्खा था। राजकुमार ने सबको उड़नखटोले में बिठा दिया। जैसे ही वह ख़ुद चढ़नेवाला था कि उसके भाइयों ने उससे फिर दग़ा की और उड़नखटोला उड़ाकर आसमान में ले गये। वे सबको लेकर घर पहुंचे और अपने पिता से कहा कि उनका बताया हुआ मोर ले आये हैं।

छोटे राजकुमार के वियोग में दोनों रानियां बड़ी दुःखी थीं। मोर भी गुमसुम हो गया था। राजा ने देखा कि मोर न हँसता है, न रोता है तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने धोखा देने के अपराध में सब राजकुमारों को सूली पर चढ़ाने की सजा दी। जिस समय राजकुमार सूली पर चढ़ाये जाने को थे, उसी समय छोटा राजकुमार भी भटकते-भटकते वहाँ आ पहुंचा। उसे देखते ही मोर बड़े जोर से हँस पड़ा। चारों ओर इतने रेशम के लच्छे इकट्ठे होगये कि उठाये न उठे।

राजा की निगाह जब छोटे राजकुमार पर पड़ी तो उसने नाराज होकर हुक्म दिया, "इसे भी सूली पर चढ़ाओ।"

यह सुनकर मोर रो पड़ा और मोतियों की वर्षा-सी

रानियों का काम बन गया।

समय पूरा होने पर छोटी रानी के दर्द उठा।,राजा शिकार खेलने गये थे। सातों रानियां बड़े उछाह से दौड़ी आईं। उन्होंने दासी से एक कुठिया मंगवाई। रानी की आंखों पर पट्टी बंधवा दी। फिर बोलीं, "अब इस कुठिया में अपना मुंह डाल लो, हमारे यहां बच्चा होते समय ऐसा ही रिवाज है।"

छोटी रानी उनकी चाल को क्या समझती? उसने बड़ी रानियों के कहने पर कुठिया में मुंह दे दिया। रानियों ने कुठिया के मुंह से अच्छी तरह कपड़ा लपेट दिया। छोटी रानी ने एक लड़की और एक लड़का दो जुड़वा बच्चों को जन्म दिया। रानियों ने एक लकड़ी के सन्दूक में दोनों बच्चों को रक्खा और चुपचाप नदी में फिकवा दिया। इसके बाद शोर मचा दिया कि रानी के ईंट-पत्थर पैदा हुए हैं। रानी ने कुठिया से मुँह निकाला तो वास्तव में वहां कोई बच्चा नहीं था। राख में सने हुए कुछ ईंट और पत्थर पड़े हुए थे। छोटी रानी का दिल रो उठा। उसने ऐसी बात कभी कानों से भी न सुनी थी। इतने में राजा शिकार से लौट आया। सातों रानियां उसे हँस-हँस कर छोटी रानी के महल में ले गईं और ईंट-पत्थरों को दिखाती हुई बोलीं, "अपनी लाड़ली के करतब देखिये। ईंट-पत्थर जनके बैठी है।"

राजा यह सब देखकर भौंचक्का रह गया। उसे बड़ा क्रोध आया और अपनी रानियों के कहने से उसने उस बेकसूर रानी को कागविड़ारनी बना दिया। फटे चिथड़े पहनकर वह छत पर बैठी-बैठी कौवे उड़ाया करती। इसके बदले में उसे सेर भर जौ खाने को दिय[illegible]। रानी पर कटे पंछी की तरह छटपटाती, पर वहां उसकी सुनने को था ही कौन [illegible] उस ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता था। रानियाँ भी [illegible] कुलच्छिनी कहकर पुकारती थीं। इधर तो महल में रंगरेलिय[illegible] होतीं, उधर छत पर रानी के आँसुओं की झड़ी लग जाती।

"जाको राखे साइयां मारि न सकिहै कोय।" लकड़ी [illegible]

सन्दूक वहा चला जा रहा था कि नदी में स्नान करते हुए एक साधु की निगाह उसपर पड़ी। उसने सन्दूक उठा लिया। किनारे पर लाकर उसे खोला तो देखता क्या है कि उसमें बहुत ही सुन्दर दो बच्चे अपने अंगूठे चूस रहे हैं। साधु बड़ा हैरान हुआ। उनका क्या करे? न रखते बनता था, न फेंकते। थोड़ी देर मन में द्विविधा रही, अन्त में वह बच्चों को अपनी कुटिया में ले आया। उसके पास एक गाय थी। वह उसका दूध कमण्डल में निकालता और फाये से बच्चों को पिला देता। बच्चे दिन-ब-दिन बड़े होने लगे। अब साधु भीख मांगकर आटा लाता और रोटियाँ बनाकर बच्चों को खिला देता। फूल से कोमल बच्चों को सूखी रोटी देते हुए साधु को बुरा लगता। वह मन-ही-मन कहता, "देखो, इन बच्चों के भाग! राजमहल की शोभा बढ़ानेवाले, कहां पड़े हैं बेचारे।"

पालते-पालते जब साधु को बारह बरस हो गये तो उसने एक दिन उनसे कहा, "बच्चो, अब तुम बड़े हो गये हो। मुझे कबतक मोह-माया में फंसाये रखोगे? जाओ, कहीं शहर में चले जाओ। शायद कोई औलाद का भूखा रईस तुम्हें अपनी संतान बना ले। मैं तो तुम्हें यहां कुछ भी सुख नहीं दे सकता।"

दोनों बच्चे साधु के गले से लिपट गये और रोने लगे। साधु ने उन्हें बहुत समझाया-बुझाया और जिस सन्दूक में उसने उन्हें पाया था, उसमें एक माला रखकर उन्हें देते हुए कहा, "मेरे प्यारे बच्चो, तुम चिन्ता मत करो। जबतक यह माला तुम्हारे पास रहेगी, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।" बच्चे रोते-धोते साधु से विदा होगये।

चलते-चलते वे एक नगर में पहुंचे और राजा के महल के सामने आकर रहने लगे। राजा उधर से गुजरता तो उसकी आंखें इन बच्चों पर टिक जातीं, पर वह उनसे बातचीत न करता। भाई कमा कर लाता, बहन घर का काम-काज करती। धीरे-धीरे वह लड़का एक बड़ा व्यापारी बन गया और उसने

राजा के महल के सामने राजा से भी ऊंचा महल वनवा लिया। सातों रानियों की निगाह जव इस महल पर पड़ी तो वे वड़ी जलीं कि तीन कौड़ी का आदमी आज राजा की वरावरी करने पर तुला है। महल की छत पर जव वे लड़की को खड़ी देखतीं तो उसकी सुन्दरता से चकाचौंध हो जातीं और कहतीं, "कैसी अनोखी वात है? वहन-भाई दोनों की सूरत हूवहू एक-सी है!"

उसी समय वड़ी रानी का माथा ठनका, वोली, "कहीं ये कागविड़ारनी के वच्चे तो नहीं हैं! मैंने कई वार देखा है कि वह वच्चों की ओर टकटकी लगाये रहती है। तुम चाहे मानो या न मानो, मेरा तो जी यही कहता है कि ये उसीके वच्चे हैं।"

दूसरी रानी वोली, "न मानने की कौनसी वात है? हो सकता है कि वह सन्दूक किसीके हाथ पड़ गया हो और वच्चे वच गये हों।"

तीसरी ने कहा, "जो इनको वचाता, वह इन्हें रास्ते का भिखारी वनाकर न छोड़ता।"

चौथी वोली, "तुम लोग तो वेकार के झंझट में पड़ गई। अरे, अगर होंगे भी कागविडारनी के वच्चे तो अव वह क्या कर सकती है! राजा तो अव हमारी मुट्ठी में है।"

यह वात सोचकर उस समय उन्होंने संतोप कर लिया, पर मन का काँटा चुभा ही रहा। वे उन दोनों को खतम कराने की तरकीवें सोचने लगीं। उन्होंने एक दिन दो दूतियाँ वुलाकर अलग-अलग उनके गुण पूछे। पहली वोली, "मैं ऐसी होशियार हूँ कि वादल फाड़ सकती हूँ।"

दूसरी वोली, "मैं इतनी चतुर हूँ कि वादल फाड़कर थेगड़ी लगा आऊँ।"

दूसरी दूती रानियों को पसन्द आगई और उसे उन्होंने अपने काम के लिए चुन लिया।

उसी दिन से वह दूती सामनेवाले महल में आने-जाने लगी। लड़की से उसने वूआ का रिश्ता जोड़ लिया। एक दिन

बातों-ही-बातों में वह उससे बोली, "बेटी, महल तुम्हारा बड़ा सुन्दर है, बाग-बगीचा भी बड़ा अच्छा है, पर जबतक इसमें परियों के देश के आम के पेड़ न हों तबतक कुछ रौनक नहीं। अपने भाई से कहकर दो पेड़ मँगवा लो और तब देखना कि बगीचा कैसा बढ़िया लगता है!"

लड़की भोली थी। वह दूती की बातों में आगई। भाई के आते ही खटपाटी लेकर पड़ रही। बहन की उदासी देखकर भाई बोला, "बहन, आज क्या बात है?"

लड़की ने कहा, "भैया, मुझे परियों के देश के दो आम के पेड़ ला दो।"

लड़का बोला, "बहन, यह तो बड़ा मुश्किल काम है। वहाँ जाने में एक दानव का घर पड़ता है। वह मुझे जिन्दा न छोड़ेगा।"

लड़की बोली, "भैया, बहाने क्यों लगाते हो? मैं सब समझती हूँ। तुम मुझे प्यार नहीं करते।"

लड़के ने कहा, "कैसी पगली है! कहती है कि मैं प्यार नहीं करता। अरे, तुझे छोड़कर मेरा है ही कौन इस दुनिया में? अच्छा, नहीं मानती तो सवा मन मलीदा करके मेरे साथ रख दे। मैं चला जाता हूँ।"

मलीदा लेकर लड़का चल दिया। रास्ते में उसे दाना मिला। वह बोला, "लड़के, मैं तुझे खाऊँगा।"

लड़के ने कहा, "मामा-मामा, मुझे क्यों खाते हो? मैं तुम्हारे लिए मलीदा लाया हूँ।"

'मामा' सम्बोधन पर दानव ने उसे प्यार से गोद में उठा लिया और बोला, "ला, कहाँ है मलीदा? हम तुम दोनों मिल-कर खायेंगे।"

लड़के ने मलीदा दानव को दे दिया। दानव बड़ा खुश हु[illegible]

राजकुमार वहां से चला तो उसे वही साथ मि[illegible] बोला, "बच्चा, मौज में है न! इधर कहाँ जा रहा

लड़के ने कहा, "बाबा, बहन को धुन लगी है कि परियों के देश के ग्राम के पेड़ लाकर दो।"

साधु ने कहा, "कोई बात नहीं है। दानव को तो तू खुश कर ही ग्राया है। अब रास्ते में कोई विघ्न नहीं ग्रावेगा। यहाँ से कुछ दूर पर एक मानसरोवर तालाब है। उसमें रात को रोज परियाँ नहाने ग्राती हैं। वे एक से दूसरा गोता नहीं लगातीं ग्रौर न पीछे मुड़कर ही देखती हैं। सो जब वे गोते लगा रही हों, तू पौधा उखाड़कर भाग ग्राना।"

लड़का प्रसन्न होकर वहाँ से चल दिया। रात को मान-सरोवर पर परियों के ग्राने की बाट देखने लगा। सब परियों के हाथ में एक-एक ग्राम का पौधा था। वे पौधों को किनारे पर रखकर गोता लगाने लगीं। राजकुमार दो पौधे उठाकर साधु के पास भाग ग्राया। सारी परियाँ कौवे बनकर लड़के के पीछे भागीं। साधु ने लड़के को मक्खी बनाकर दीवार से चिपका दिया। परियाँ साधु की कुटिया में ग्राईं ग्रौर लड़के को इधर-उधर ढूंढकर निराश होकर वापस चली गईं। लड़का ग्राम के पेड़ लेकर अच्छी तरह से बहन के पास लौट ग्राया। बहन बड़ी खुश हुई। उसने उन ग्राम के पौधों को बाग में लगा दिया। ज़मीन में लगाते ही वे पौधे बड़े घने पेड़ बन गये। अब बाग की शोभा देखते बनती थी। कहाँ तो रानियाँ इस टोह में थीं कि लड़के को दानव खा जायगा ग्रौर कहाँ वे अब ग्रपनी ग्राखों देख रही थीं कि उनका वैरी फल-फूल रहा है। उन्होंने फिर दूती को लड़की के यहाँ भेजा।

दूती लड़की के पास गई वह बड़ी खुश होती हुई बोली, "देख, मैंने कैसी ग्रच्छी बात बताई तुझे। अब बाहर निकल-कर जरा महल की शोभा देख, रानियाँ भी जलन करती हैं इन पेड़ों को देख कर। बस, अब एक बात की ग्रौर कसर है।"

लड़की ने पूछा, "क्या?"

दूती का तीर ठीक जगह लगा। वह बोली, "ग्रपने भैया

से कहकर दो पिंजड़े और मंगवा। जब रिमझिम मेंह बरसेगा और आम के पेड़ पर बैठी हुई कोयल कूकेगी, तो यह महल स्वर्ग बन जायगा।"

लड़की के मुँह में पानी भर आया। वह बोली, "बुआ, तुम तो सो-सोकर जागती हो। पहले ही क्यों नहीं बता दिया तुमने ? अब जो कुछ महल में चाहती हो वह एक बार कह दो। मैं बार-बार भैया को तंग नहीं करूंगी।"

दूती ने कहा, "बेटी, अच्छी याद दिला दी तूने ! बिना भाभी के महल सूना-सूना लगता है। भैया से कहना कि हँसन-परी को व्याह लाये।"

दूती यह कह कर चली गई और लड़की फिर खटपाटी लेकर पड़ रही। भाई के आते ही वह मुँह ढक कर सो गई। भाई ने बहुत मनाया तब वह बोली, "भैया, आम के पेड़ों पर लटकाने के लिए दो कोयल के पिंजड़े चाहिए और घर में मन बहलाने के लिए हँसन-परी भाभी।"

लड़के ने कहा, "बहन, तुझे हो क्या गया है। रोज मेरे लिए नये-नये काम सोच कर रखती है। क्या तुझे मेरी जान का बिलकुल डर नहीं है ?"

लड़की ने कहा, "भैया, तुम कुछ भी कहो। जबतक तुम मेरे ये दोनों काम नहीं करोगे, मैं अन्न-जल नहीं करूँगी।"

लड़का लाचार हो गया और सवा मन मलीदा लेकर फिर चल दिया। रास्ते में फिर वही दानव मिला। वह तो उसका मामा हो ही चुका था। मलीदा खाकर खुश हो गया। बोला, "बेटा, तू बार-बार यहाँ क्यों आता है ?"

लड़के ने हँसनपरी और कोयल के पिंजड़ों की बात उसे बता दी।

दानव ने कहा, "बेटा, परियों के बीच में पड़ना ठीक नहीं है। अगर वे तुझे देख लेंगी तो जिन्दा न छोड़ेंगी।"

लड़के ने कहा, "मामा, मैं क्या करूं ? मेरी बहन तो

खटपाटी लिये पड़ी है।"

दाने ने कहा, "अच्छा, जब तू मुझे मामा कह चुका है तो मैं इस भेद को तुझे जरूर बताऊंगा। मानसरोवर तालाब पर रोज परियां नहाने आती हैं। उनमें एक हँसनपरी भी है। उसकी पहचान यह है कि वह अपने दोनों हाथों में कोयल के पिंजड़े लिये रहती है। जब वह किनारे पर पिंजरे रखकर पानी में गोता लगाये तब तू उन्हें उठाकर भाग आना।"

लड़का मानसरोवर की ओर चल दिया। रास्ते में साधु को भी उसने यह बात बता दी। रात को जब परियां नहाने आई तो वह ओट में छिप गया। अब की बार वह पहले से ज्यादा चौकन्ना था। परियों ने जैसे ही गोते लगाये कि वह पिंजरे उठाकर भाग आया। वे चील बनकर उसके पीछे हो लीं। लड़का साधु की झोंपड़ी में घुस गया और उसने उसे फिर मक्खी बनाकर दीवार से चिपका दिया। परियों ने साधु की बड़ी खुशामद की, पर उसने उन्हें झोंपड़ी में न घुसने दिया। आखिर हँसनपरी की मां ने साधु से प्रार्थना की कि वह उस लड़के को उसे दिखा दे। वे उसे नुक्सान नहीं पहुंचावेंगी।

साधु ने कहा, "अगर हँसनपरी की शादी इस लड़के से करने को तैयार हो तो मैं तुम्हें दिखा सकता हूं।"

हँसनपरी की मां परेशान थी, क्योंकि कोयल के पिंजरे के बिना हँसनपरी एक दिन भी नहीं रह सकती थी। हारकर उसने साधु की बात मान ली। साधु ने परी से चिवाचा भरवाने के बाद लड़के को परियों के आगे कर दिया। हँसनपरी क्रोध के मारे कांप रही थी, पर जब उसने लड़के को देखा तो उसकी सुंदरता पर अवाक् रह गई। इधर उसे मां का वचन भी पूरा करना था। हँसनपरी की शादी उस लड़के से होगई। हँसनपरी की मां ने लड़के से कहा, "बेटा, जब तुमपर कोई मुसीबत आए, तो सवा हाथ धरती लीपकर उसपर चौक पूर कर मेरी याद करना, मैं तुरन्त तुम्हारी मदद को पहुंच जाऊंगी।"

साधु बोला, "बेटा, मैं भी उसी समय तुम्हारी रक्षा के लिए तैयार रहूंगा।"

हँसनपरी और कोयल के पिंजड़ों को लेकर लड़का अपने महल में पहुंच गया। लड़की ने जब देखा कि भैया उसकी दोनों इच्छाएं पूरी करके लौटा है तो खुशी के मारे कूदने लगी।

लड़के ने कोयल के पिंजरे आम के पेड़ों पर लटका दिये। उसी समय रिमझिम वर्षा होने लगी। कोयल कुहक उठी। दूती यह सब देखकर बड़ी चकित हुई। उसके सभी वार खाली चले गये। वह रानियों के डर से नगर छोड़कर भाग गई।

लड़के ने अपने विवाह की खुशी में नगर-भोज किया। राजा को भी निमंत्रण दिया। राजा अपनी सातों रानियों सहित बड़ी धूमधाम से आया। कागबिड़ारनी का किसीने नाम भी नहीं लिया। लड़की कागबिड़ारनी को रोज छत पर से देखा करती थी, सो उसने राजा से हठ करके उसको भी बुला लिया।

लड़के का इतना बड़ा काम करने का यह पहला ही मौका था। बहन भी हैरान थी कि कैसे-क्या होगा। तभी लड़के ने आंगन में डेढ़ हाथ लीपा और चौक पूरकर हँसनपरी की मां और साधु बाबा को याद किया। वे तुरन्त आ गए और उन्होंने भोजन आदि की सारी व्यवस्था कर डाली। छत्तीसों प्रकार के व्यंजन सबके सामने परोसे गए, पर राजा और रानियों के थालों में खाने-पीने की कोई चीज़ नहीं थी। उनके थालों में रंग-बिरंगे कंकड़-पत्थर सजाकर रखे हुए थे।

लड़का सबके सामने आया और बोला, "अब आप लोग खाना शुरू करिये।"

राजा यह सुनकर आगबबूला हो उठा। उसने अपने सिपाहियों से कड़ककर कहा, "सिपाहियो, देखते क्या हो? कर दो छोकरे का सिर धड़ से अलग।"

सिपाहियों की तलवारें म्यान से बाहर निकल आईं। तभी साधु बाबा ने रोककर राजा से पूछा, "महाराज, यह मौत की सज़ा इस बेकसूर बालक को आप किसलिए दे रहे हैं ?"

राजा दाँत पीसकर बोला, "बाबाजी, हट जाइये सामने से। देखते नहीं मेरा और रानियों का अपमान हो रहा है और आप पूछ रहे हैं कि इस लड़के को क्यों सज़ा दी जा रही है ! इन कंकड़-पत्थरों को देखो न ? क्या ये खाये जा सकते हैं ?"

साधु हाथ जोड़कर बोला, "राजन्, क्षमा करें, अगर राजा के लिए कंकड़-पत्थर खाना संभव नहीं है तो सोचने की बात है कि रानी के लिए ईंट-पत्थर जनना कैसे संभव होसकता है ?"

कागविड़ारिनी की आँखें चमक उठीं। सातों रानियां डर से थरथर काँपने लगीं। राजा घबराकर बोला, बाबा, मैं आपकी बात समझा नहीं। आप क्या कह रहे हैं ?

साधु ने कहा, "राजन्, अब भी समझने को कुछ बाकी है तो कान खोल कर सुनो—ये दोनों बच्चे आपके बच्चे हैं और कागविड़ारनी इनकी मां है।"

राजा जैसे आसमान से नीचे गिर पड़ा हो। सातों रानियों ने हिम्मत करके काँपते हुए कहा, "क्या आप इसका सबूत दे सकते हैं ?"

साधु वह लकड़ी का सन्दूक उठालाया, जिसमें रखकर उन बच्चों को वहाया गया था। इसके बाद उसने आदि से अन्त तक सारा किस्सा कह सुनाया।

राजा को विश्वास हो गया। फिर भी उसने कहा, "महाराज इतना सबूत काफी नहीं है।"

साधु को गुस्सा आगया, उसने लाल-लाल आँखें निकाल कर कहा, "अच्छी बात है। सबके बीच तुम्हें अपनी और रानियों की किरकिरी करानी है तो मैं इसका सबूत दूंगा।"

साधु ने सब लोगों को एक घेरे में खड़ा कर दिया और बीच

में खड़ी कर दी कागविड़ारनी। सब लोग देखते क्या हैं कि उसके स्तनों से दूध की धारें छूट रही हैं। एक की धार लड़के के और दूसरे की लड़की के मुँह में जा रही है। सब आश्चर्य-चकित रह गये। राजा ने गद्गद् होकर अपने बेटे और बेटी को हृदय से लगा लिया। कागविड़ारनी की आँखों में हर्ष के आंसू छलछला आये। राजा ने उसी समय सातों रानियों को महल के फाटक पर जिन्दा गड़वा दिया और कागविड़ारनी से माफी माँग कर आदर से उसे महलों में ले गया। छोटी रानी अपने बच्चों और पति को पाकर अपने पिछले सब दुःख भूल गई।

: ८ :

जनमपत्री का लेखा

किसी गांव में एक ब्राह्मण रहता था। वह इतना नेक और ईमानदार था कि सारा गांव उसका मान करता था। आस-पास के गांवों में भी कथा, हवन आदि करने के लिए वही बुलाया जाता था। लालच उसे छू भी न गया था। जो कुछ मिल जाता, उसीमें संतुष्ट रहता। परन्तु उसकी स्त्री को संतोष नहीं था। इसका कारण रुपये-पैसे की तंगी नहीं, बल्कि संतान की चाह थी। वह सोचती कि चिराग़ तले अंधेरा है। पंडित सारे गाँव के सुख-दुख का निपटारा करता है और निपूता होने का अपना कलंक नहीं मिटाता। नित्य वह भगवान सूर्य को जल और शिवजी पर बेल-पत्र चढ़ाती, परन्तु ऐसा लगता था कि दोनों देवता कान में रुई लगाकर बैठे हों। फिर भी वह निराश नहीं हुई और रात-दिन पूजा-पाठ में बिताने लगी।

ऐसे ही बारह बरस बीत गये। तब भगवान ने उसके मन की साध पूरी की। उसके एक बहुत सुन्दर पुत्र पैदा हुआ। वह बड़े लाड़-चाव से उसे पालने लगी। जबसे बेटा हुआ, ब्राह्मण बड़ा उदास रहता था। न कभी उसकी ओर देखता और न हँसकर बात करता। मन-ही-मन ब्राह्मणी को पति के ऊपर बड़ा गुस्सा आता, पर वह पूछने का साहस न कर पाती। इधर तो लड़का बड़ा हो रहा था, उधर ब्राह्मण की परेशानी बढ़ती जा रही थी। ब्राह्मणी को भी अब चैन नहीं था। सारा गांव उसके लड़के के उत्पात से तंग आ गया था। वह अपने साथ के बच्चों के कभी खिलौने चुरा लेता, तो कभी किताब, और कभी कलम। ब्राह्मण उसके लिए नई-नई चीजें लाकर देता, पर

लड़के ने दूसरों की चीजें चुराना बन्द नहीं किया। पंडित ने तंग आकर एक दिन पत्नी से कहा, "अब तुम समझ गई न मेरी उदासी का कारण ? जिस दिन यह सपूत पैदा हुआ था, मैंने ग्रह देखकर समझ लिया था कि यह पक्का चोर होगा। आज तुम अपने बेटे के करतब अपनी आंखों देख रही हो।"

ब्राह्मणी ने कहा, "पंडितजी, करतब तो देख रही हूं, पर करूं क्या ? न हो तो इसे किसी आश्रम में भेज दो। शायद वहां रहकर सुधर जाय।"

बात ब्राह्मण को जंच गई। वह बेटे को लेकर दूसरे ही दिन एक आश्रम में रख आया। आश्रम के संचालक को उसने अपने लड़के की खोटी आदत भी बता दी, जिससे वह सतर्क रहें और उसे प्यार से ठीक रास्ते पर लाने का प्रयत्न करते रहें। आश्रम के सब लोग धीरज के साथ उसकी शैतानियों को देखते रहे। जब वह चीजें चुराता तो वे कुछ न बोलते। रात को उसके सो जाने पर उसकी चुराई हुई सब चीजों को चुपचाप निकाल लेते और जिनकी होतीं उन्हें दे देते। लड़का अपनी चीजें गायब देखता तो बड़ा खीझता, पर शिकायत कैसे करता। उसने सोचा कि यहां तो ऐसे चोर हैं जो उसके भी गुरु हैं। एक दिन रात को उसने एक मोटा-सा सोटा लिया और उसे अपने बिस्तर के नीचे छिपाकर सो गया। सो क्या गया, सोने का स्वांग बना लिया। जब आश्रम के संचालक उसके सामान में से चोरी की चीजें ढूंढ रहे थे, वह चुपचाप उठा और उनकी पीठ पर कसकर एक सोटा जमाया। संचालक वहीं अचेत होकर गिर पड़े। लड़का चट वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया और अपने घर आगया।

ब्राह्मण और ब्राह्मणी बड़े दुःखी हुए। उन्होंने निश्चय किया कि चोर बेटे को वे घर में न रक्खेंगे। ब्राह्मण का बेटा चोर हो, यह कितने दुःख की बात थी। ब्राह्मण एक दिन सैर कराने के लिए उसे एक नगर में ले गया और आंख बचाकर उसे छोड़कर अपने घर लौट आया। लड़का दिन-भर बाप की तलाश में भटकता

रहा। अन्त में निराश होकर सड़क के किनारे बैठ कर रोने लगा। तभी उधर होकर राजा की सवारी निकली। राजा ने इस छोटे-से लड़के को बिलखते देखा तो उसका जी भर आया। उसने उसे अपने पास बुलाया और प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फिराते हुए बोला, "बेटा, तू क्यों रोता है।"

लड़के ने सिसकते हुए कहा, "मेरे पिताजी मुझे सैर कराने के लिए लाये थे। यहां छोड़कर भाग गये।"

राजा ने उसे चुप करते हुए कहा, "ऐसे कैसे छोड़कर भाग सकते हैं? हम तुझे उनके पास पहुंचा देंगे।"

लड़के ने रोते हुए कहा, "राजासाहब, अब मैं उनके घर कभी नहीं जाऊंगा। वह, मुझे घर में नहीं रक्खेंगे।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों?"

लड़के ने उत्तर दिया "मेरी जनमपत्री में लिखा है कि मैं पक्का चोर बनूंगा। इसीलिए वह अब मुझे अपने घर में नहीं रखना चाहते।"

राजा लड़के की बात से बड़ा प्रभावित हुआ। उसने लड़के को हृदय से लगा लिया और कहा, "बेटा, आज से तू मेरा बेटा है। मैं भी देखूंगा कि राजकुमार बनकर तू कैसे पक्का चोर बनता है? मैं जनमपत्री की बात झूठी करके दिखाऊंगा।"

राजा लड़के को अपनी गाड़ी में बिठाकर महल में ले गया। उसका लालन-पालन राजकुमारों की तरह होने लगा। वह उस समय भी छोटी-मोटी चीजें चुराता रहा, पर राजकुमार की शिकायत करने की हिम्मत कौन करता?"

होते-होते वह काफ़ी बड़ा हो गया। अब वह शिकार के बहाने दूसरे नगरों में जाता और अपना चोरी का शौक पूरा करता। चालाक इतना कि कभी भी पकड़ में न आता। पर बात कहाँतक छिपी रहती? राजा को धीरे-धीरे उसकी सब बातें मालूम हो गईं। उसने सोचा कि एक बार इसके साथ चलना चाहिए। जब वह शिकार के लिए जाने को तैयार हुआ तो राजा

ने कहा "बेटा, मैं भी आज तेरे साथ चलूंगा।"

लड़के ने कहा, "अच्छा।"

राजा लड़के के साथ चल पड़ा। दिन भर तो वे दोनों शिकार खेलते रहे। रात को एक नगर में आये। लड़के ने राजा से कहा, "पिताजी, इस नगर की राजकुमारी मुझे बड़ा प्रेम करती है। मैं सोचता हूँ कि रात हो गई। घर चलना इस समय ठीक नहीं है। इसलिए राजकुमारी के यहाँ ही रात क्यों न बितावें?"

राजा मान गया। लड़के ने महल में सेंध लगाई और राजा को लेकर राजकुमारी के कमरे में पहुँच गया। राजकुमारी चौंक कर सोते से उठ बैठी और उसने जब इस लड़के को देखा तो सोचने लगी की यह सपना है या सचमुच वह किसी राजकुमार को देख रही है। लड़के की सुन्दरता ने उसे मुग्ध कर लिया। वह उसकी बातों में आगई और हँस-हँसकर उससे बातें करने लगी। राजकुमारी सोते समय अपने जेवर उतारकर सिरहाने रख लिया करती थी। लड़के ने चुपचाप डिब्बा लिया और राजकुमारी से बोला, "अब सवेरा होने को है, मैं जाता हूँ। कल रात को फिर मिलूंगा।"

लड़के के बाहर होते ही राजा भी सूराख में होकर बाहर निकलने लगा। अब राजकुमारी चिल्लाई, "चोर, चोर।" शोर सुनते ही सिपाही दौड़ पड़े।

घबराहट में राजा महल से नीचे गिर पड़ा और वहीं ढेर हो गया। लड़का बड़ा दुखी हुआ, पर पकड़े जाने के डर से उसने मरे हुए राजा का सिर काट लिया और भाग गया।

तलाशी होने पर महल के नीचे आदमी का धड़ पड़ा हुआ मिला। इधर राजकुमारी ने देखा कि उसके गहनों का डिब्बा गायब है। राजा को जब यह खबर मिली तो उसने कहा, "जब राजकुमारी के जेवर गायब हैं तो यह मानी हुई बात है कि इसका साथी कोई और भी आया होगा। यह आदमी बुड्ढा दिखाई देता है। मेरे ख्याल से बाप-बेटे चोरी करने निकले होंगे। लड़का

भाग गया और बाप रह गया। खैर, कोई बात नहीं। उसकी लाश सारे नगर में घुमाओ। जो इसका बेटा होगा, वह उसको देखकर बिना रोये नहीं रह सकेगा।"

लड़के को राजा की बातें मालूम हो गई। उसने बुड्ढी लकड़हारिन का भेस बनाया और लकड़ी का गट्ठर लेकर श्मशान की ओर चल पड़ा। सिपाहियों ने उससे लकड़ियों का मोल-भाव किया। वह लकड़ी बेचने को कैसे भी राजी न हुआ, बोला, "हजूर, दो दिन से घर में ईंधन के बिना रोटी नहीं बनी। बाल-बच्चे सब भूखे बैठे मेरी राह देख रहे होंगे। मुझे लकड़ी किसी भी मोल नहीं बेचनी।"

सिपाहियों ने जबरदस्ती लकड़ियाँ गिरवा लीं और पैसे भी न दिये। वह वहीं बैठकर सिर धुन-धुनकर रोने लगी पर सिपाहियों ने ललकारकर उसे भगा दिया। असलियत का किसीको भी पता न लगने दिया।

जब राजा ने देखा कि लाश का हकदार कोई नहीं आया तो उसने कहा, "कोई बात नहीं। चिता में वह अपने बाप का सिर जलाने के लिए जरूर लायगा और पकड़ा जायगा।"

रात हो चुकी थी। उन्हीं लकड़ियों से चिता तैयार की गई। आग देते ही चिता धू-धू करके जल उठी। उसी समय ब्राह्मण के लड़के ने भिखारिन का भेस रक्खा और थाली में आटा लेकर चिता के पास पहुंच गया। पहरे पर खड़े सिपाहियों ने उसे डांटते हुए कहा, "अरे, यह आटा लिये किधर जारही है ?"

उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "कहीं नहीं भैया, दिन भर भीख मांगने पर यह आटा मिला है। यहाँ आग जलती देखकर चली आई। सोचा दो अंगा सेक खाऊंगी। भगवान तुम्हारा भला करे, दो अंगा सेक लेने दो।"

सिपाहियों ने कड़ककर कहा, "पगली, हट यहां से। देखती नहीं कि यह चिता जल रही है। बड़ी चली है अंगा सेकने!"

उसने कहा, भैया, भूख में तो किवाड़ भी पापड़ लगते हैं।

मैं इसी आग में सेक लूंगी।"

सिपाहियों ने कहा, "नहीं मानती तो मर। हमारा क्या जाता है।" वह राजा का सिर आंचल में छिपाये हुए था। अंगा सेंकने के बहाने वह चिता के पास बैठा रहा और सिपाहियों की आंख बचाकर चुपचाप राजा का सिर चिता में डाल आया।"

रात भर पहरा रहा, लेकिन चोर न पकड़ा गया। राजा बड़ा हैरान हुआ। अबकी बार उसने दरोगा को बुलाकर कहा, "दरोगा-जी, इस चालाक चोर को पकड़ना अब मामूली सिपाहियों का काम नहीं है। सिर कब चिता में रक्खा गया, इनको पता नहीं लगा और सवेरे देखा तो वहां खोपड़ी की हड्डियां मौजूद थीं। इस बार आप खुद पहरे पर रहिये। चोर फूल बीनने जरूर आयगा।"

दरोगा को अपनी होशियारी पर पूरा भरोसा था। उसने ठाठ से श्मशान में अपना डेरा लगवाया। गाने-बजाने का भी प्रबन्ध किया, जिससे नींद न आये। शराब का दौर चल रहा था और सब मस्ती में झूम-झूमकर गा-बजा रहे थे। तभी ब्राह्मण का लड़का नर्तकी का रूप बनाकर छमछम करता हुआ वहां से निकला। दरोगासाहब नर्तकी को देखते ही बौखला उठे, "कहां जा रही हो?"

वह बड़ी अदाओं के साथ बारीक आवाज बनाकर बोला, "आपसे मतलब? मैं राजा की नर्तकी हूं। मुझे जाने दो। राजा साहब मेरा इन्तजार कर रहे होंगे।"

दरोगा ने कहा, "हम भी राजा के ही आदमी हैं। पहले हमें नाच दिखाओ, फिर राजा के पास जाना।"

यह कहकर दरोगा ने उसका पल्ला पकड़ लिया। इस जोरा-जोरी में नर्तकी की माला टूट गई और उसके मोती जमीन पर बिखर गये। उसने दरोगा का हाथ झटक दिया और स्त्री की आवाज बनाकर बोला, "चलो हटो, रहने भी दो। तुमने मेरी माला तोड़ डाली।"

इतना कहकर वह मोती बीनने लगा। मोतियों के बहाने

वह फूल बीन ले गया। सवेरे दरोगा को पता लगा कि नर्तकी के भेस में चोर आया था। वह अपनी लापरवाही पर बड़ा पछताया।

राजा ने जब देखा कि दरोगा भी चोर को नहीं पकड़ सका तो उसने निश्चय किया कि वह खुद पकड़ेगा। अब तो हड्डियां पानी में बहाने का काम ही बाकी रह गया था। उसने सोचा कि जब चोर इतना चालाक है तो गंगाजी में पिता के फूल गिराने अवश्य जायगा। राजा रात में घूमघूमकर पहरा दे रहा था। लड़के ने रास्ते में एक छोटी-सी मड़ैया डाली और पिसनहारी का भेस बनाकर चक्की पीसने बैठ गया। राजा उधर होकर निकला तो उसने पूछा, "इतनी रात गये तू क्यों पीस रही है ?"

उसने कहा, "मैं राजा के घोड़ों के लिए दाना दल रही हूं। अगर सवेरे तक पीस कर न दिया तो राजा नाराज हो जायगा और मेरी रोजी जाती रहेगी।"

राजा ने पूछा, "तूने किसी आदमी को इधर जाते तो नहीं देखा ?"

उसने कहा, "देखा क्या, अरे वह तो मेरे पास बैठकर अभी-अभी चिलम पी के गया है। अभी तो मैंने आग भी ठंडी नहीं की।"

राजा पहरा देते-देते थक गया था। उसने पूछा, "क्या तू उसे अच्छी तरह पहचान सकती है ?"

उसने कहा, "पहचान क्यों नहीं सकती ? मैंने कहा न वह अभी-अभी यहां से गया है। कह रहा था कि अपने बाप के फूल सिराने जा रहा है।"

राजा ने कहा, "तब तो काम बन गया। वही चोर है।"

उसने कहा, "तो देर क्यों करते हो। जल्दी जाकर चोर को पकड़ो न ?"

राजा ने कहा, "मैं बहुत थक गया हूं। मैं तेरी चक्की चलाता हूँ तू जा और उसे फुसलाकर यहां ले आ। इसके बदले में मैं तुझे बहुत इनाम दूंगा।"

लड़के ने फूल अपनी कमर में बांध रक्खे थे। वह मन-ही-मन

खुश होता हुआ गंगाजी पर पहुंच गया और फूल सिराकर उसने चैन की सांस ली। उधर राजा मड़ैया में बैठा-बैठा दाना दलता रहा और चोर के पकड़े जाने की बाट देखता रहा। सवेरे वहां जाकर सिपाहियों ने देखा कि राजासाहब चक्की पीस रहे हैं। राजा अपनी हालत पर बड़ा लज्जित हुआ और बोला, "वास्तव में चोर बड़ा नम्बरी है। वह मुझे भी चकमा दे गया।"

राजा ने हार मानकर डौंड़ी पिटवाई कि जो कोई चोर हो निडर होकर मेरे सामने आ जाय। उसे कोई दण्ड नहीं दूंगा। मैं उसकी होशियारी का लोहा मानता हूं। मैं उसके साथ अपनी बेटी का ब्याह करूंगा और आधा राज्य उसे सौंप दूंगा।

लड़का प्रसन्न होता हुआ राज-दरबार में पहुंचा और राजा के आगे सिर झुकाकर बोला, "राजन्, क्षमा करें, आपसे चक्की पिसवाने का कसूर मैंने ही किया है।"

राजा सब समझ गया। उसने खूब धूमधाम से अपनी बेटी का ब्याह उसके साथ कर दिया और आधा राज्य दे दिया। लड़के ने उस दिन से फिर कभी चोरी नहीं की। उसने अपने बुड्ढे माता-पिता को भी अपने पास बुला लिया और सुख से रहने लगा।

: ९ :

राजा ढोलन

एक था राजा, एक थी रानी। रानी के जब कोई सन्तान नहीं हुई तो राजा ने दूसरी शादी कर ली। होनहार की बात कि पहली रानी गर्भवती हो गई। छोटी रानी बड़ी चिन्तित हुई। उसने पण्डित को बुलाकर बहुत-सा इनाम दिया और कहा कि जाकर राजा से कह दे कि बड़ी रानी से जो पुत्र उत्पन्न होगा उसके होते ही उनका सारा धन नष्ट हो जायगा। इसलिए राजा को चाहिए कि बड़ी रानी को देश-निकाला दे दे।

राजा को जब रानी के गर्भवती होने की बात मालूम हुई तो वह बड़ा खुश हुआ और ग्रह आदि पूछने के लिए पंडित को बुलवाया। पंडितजी लग्न देखकर उदास हो गये। बोले, "राजन्, है तो पुत्र का योग, पर यह पुत्र आपके लिए अनिष्ट का कारण होगा। धन-सम्मान सबकी हानि होगी।"

राजा ने कहा, "तो पंडितजी, अनिष्ट की शान्ति के लिए कोई उपाय बताइये।"

पंडितजी बोले, "महाराज, न रहे बांस, न बजे बांसुरी। कहते में तो दुःख होता है, पर आप रानी को देश-निकाला दे दें, जिससे उसकी संतान का असर आप पर न हो।"

राजा रानी को बहुत चाहता था, पर पण्डितजी की बात से डर गया। रात को उसने रानी से कहा, "रानी, तुम कुछ दिनों के लिए मायके रह आओ। नई रानी तुमसे ईर्ष्या करती है और यह बात तुम्हारे और बच्चे के लिए अच्छी नहीं है।"

बड़ी रानी ने राजा की बात मान ली। छोटी रानी ने कहारों को समझा दिया कि वे बड़ी रानी को जंगल में छोड़ आवें।

कहार रानी को घने जंगलों में छोड़कर चम्पत हो गये। शेरों की दहाड़ से रानी के प्राण सूख रहे थे, पर वह करती क्या? भगवान से प्रार्थना करने के सिवा उसके पास कोई चारा भी तो नहीं था।

जंगल में गंगा नदी बहती थी। वहां होकर एक सौदागर नाव में बैठकर निकला। वह अपना माल देश-विदेश में बेचने को ले जाता था। इधर तो रानी के लड़का पैदा हुआ और उधर से सौदागर का निकलना हुआ। बच्चे की आवाज सुनकर सौदागर ने नाव किनारे लगाई और कहने लगा, "कोई भूत हो, प्रेत हो, भाई हो, बहन हो, मेरे सामने आ जाओ।"

रानी ने झाड़ी की ओट में से कराहते हुए कहा, "भाई, न मैं भूत हूं, न प्रेत। मुसीबत की मारी एक औरत हूं।"

सौदागर उसके पास आया। रानी ने सारा हाल कह सुनाया। सौदागर उसे धर्म बहन बनाकर अपने गांव ले गया। उसने रानी और बच्चे को नाव में छोड़ दिया और खुद घर चला गया। घर आकर अपनी स्त्री से बोला, "आज मैंने जंगल में एक बड़ी सुन्दर स्त्री देखी। उसके इसी समय बच्चा हुआ था। वह बिलकुल अकेली और बेसहारे थी। जी चाहा नाव में बिठाकर घर ले चलूं, पर तुम्हारे डर से ऐसा नहीं किया और उसे हिंसक पशुओं का शिकार बनने के लिए वहीं छोड़ आया।"

सेठानी बोली, "हाय, कैसा पत्थर का कलेजा है तुम्हारा। अभी चलो, हम दोनों वहां जाकर मां-बेटे को घर ले आयें।"

सौदागर हंस पड़ा। बोला, "मैं तुम्हारा मन लेना चाहता था। वह स्त्री जंगल में नहीं, मेरी नाव पर है।"

सौदागर सेठानी के साथ जाकर रानी को घर ले आया। सौदागर के कोई संतान नहीं थी। इसलिए रानी के बेटे को उसने अपना बेटा मानकर उसका लालन-पालन किया। उसका नाम रखा ढोलन।

पास ही के नगर में एक बड़ा प्रतिभाशाली राजा राज्य

करता था। उसने अपनी बेटी की शादी राजा इन्द्र से करने का निश्चय किया था, पर कोई पीली चिट्ठी इन्द्रपुरी को ले जाने को तैयार नहीं था। अन्त में एक हंस राजी हो गया और राजा ने हँस के गले में पीली चिट्ठी बांध दी। हँस उड़ते-उड़ते राजा ढोलन के नगर में जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही बड़े जोर की वर्षा होने लगी। हंस ने देखा कि एक चूहा पानी में डूबा जा रहा है। उसे उस पर दया आ गई और उसने चूहे को अपने पंखों में छिपा लिया। चूहे ने अन्दर-ही-अन्दर उसके पर कुतर डाले। वर्षा बन्द हुई तो हंस ने अपने पंख फैलाये और देखा कि उसके पर गिरते चले जा रहे हैं। उसे चूहे कि नीचता पर बड़ा क्षोभ हुआ। वह उड़ नहीं सका और पैरों पर ही चलने लगा। राजा ढोलन ने जब इस सुन्दर पक्षी का हाल-बेहाल देखा तो उसे वह अपने घर ले गया और उसकी सेवा करने लगा। एक दिन उसे स्नान कराते समय उसने देखा कि उसके गले में चिट्ठी बंधी हुई है। ढोलन ने वह चिट्ठी संभालकर रख ली। एक साल बाद हंस के नए पर निकल आये और वह उड़ने योग्य हो गया। राजा ने वह पत्र उसे दिया और कहा कि इस पत्र को इन्द्र महाराज के पास पहुंचा दो।

हंस बोला, "मैं चूहे की तरह नीच नहीं हूं। आपने मेरी रक्षा की है। मैं इस चिट्ठी को इन्द्र के पास नहीं ले जाऊंगा। अब इस पत्र को आप ही रखिये और समझ लीजिये कि राजकुमारी से आपकी शादी पक्की हो गई।"

हंस अपने देश लौट गया और राजा को सब हाल कह सुनाया। राजा ने प्रसन्न होकर राजकुमारी की शादी ढोलन के साथ कर दी।

थोड़े दिन बाद सौदागर और उसकी स्त्री का स्वर्गवास हो गया। ढोलन की मां भी कुछ दिन बाद चल बसी। ढोलन के कोई संतान नहीं हुई। रानी बड़ी दुखी रहने लगी। एक दिन उसने ढोलन से कहा, "आपके पास किसी चीज की कमी नहीं, पर पुत्र

के बिना यह सब सुख फीका है। संतान के बिना हमारा कोई न नामलेवा रहेगा, न पानीदेवा। इसलिए ऐसा कोई काम करो, जिससे आपका नाम अमर हो जाय।"

राजा ढोलन को रानी की बात जंच गई और उसने डौंड़ी पिटवा दी कि जो सामान पैंठ में बिकने आयगा और शाम तक नहीं बिकेगा उसे राजा खरीद लेगा। दूर-दूर से सौदागर माल बेचने आने लगे। जिसका माल न बिकता, राजा खरीद लेता।

एक लुहार बारह साल से सनीचर देवता की लोहे की मूर्ति बना रहा था। जब वह बनकर तैयार हो गई तो उसे राजा की पैंठ में ले गया। सारी चीजें बिक गईं, पर उस लोहे की मूर्ति को किसीने भी न खरीदा। राजा की आज्ञानुसार राजकर्मचारियों ने उसका मोल पूछा।

लुहार ने कहा, "एक लाख रुपया।"

उन्होंने पूछा, "भाई, उसमें ऐसा क्या गुण है जो उसका दाम एक लाख रुपया है?"

लुहार ने कहा, "यह मूर्ति अपने गुण आप ही बखान करेगी।"

कर्मचारियों ने मूर्ति से उसके गुणों के बारे में पूछा।

मूर्ति ने कहा, "जो कोई मुझे खरीदकर घर ले जायगा, मेरे पहुंचते ही उसके घर का एक कोना गिर जायगा, पांच दिन में उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो जायगी और बारह साल तक उसे विपत्तियां झेलनी पड़ेंगी। इसके बाद उसके एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा।"

मूर्ति ने जब यह कहा तो सब कर्मचारी राजा के पास पहुँचे और सारा हाल कह सुनाया। रानी ने सुना तो राजा से बोली, "राजन्, जवानी में किसी तरह दुःख झेल लेंगे, पर बुढ़ापे में तो बेटा सुख देगा। इसलिए मूर्ति खरीद लेनी चाहिए। वैसे भी तो आपने जो वचन दिया है, उसे पूरा करना ही है।"

मूर्ति के घर में आते ही महल का एक कोना ढह गया। पांच दिन के अन्दर हाथी-घोड़े, फौज-फर्रा और खजाना सब

खतम हो गये। राजा के पास बस एक अंगूठी रह गई। उस अंगूठी को नष्ट न होने का वरदान था। राजा-रानी दोनों जंगल में चले गये और विपत्ति के दिन काटने लगे। उसी जंगल में गढ़पिंजर का राजा हारुन आ पहुंचा। वह वेश्या से जुए में अपना सबकुछ हार गया था। राजा ढोलन को उसके हाल पर बड़ा दुःख हुआ। उसने हारुन को अपनी अंगूठी दी और कहा कि जाओ, उस वेश्या के साथ फिर जुआ खेलो। जब अपना दाव लगाओ तब कहना, "चल राजा ढोलन के पांसे पौ बारह।"

राजा हारुन अंगूठी लेकर फिर वेश्या के यहां जुआ खेलने पहुंच गया। अंगूठी के प्रताप से उसकी खोई हुई सब सम्पत्ति वापस मिल गई। वह खुशी-खुशी ढोलन के पास आया और बोला, "लो यह अंगूठी। आज से हम दोनों पक्के मित्र बन गये। यदि तुम्हारे लड़का हो और मेरे लड़की तो मैं अपनी लड़की तुम्हारे लड़के से ब्याह दूंगा। अगर इसका उल्टा हो तो तुम अपनी बेटी मेरे बेटे से ब्याह देना।"

ढोलन ने खुशी-खुशी कहा, "ठीक है। पक्की रही बात।"

बारह वर्ष बाद ढोलन के भाग्य ने पल्टा खाया और वह फिर पहले की तरह अपने राज्य में ठाठ से राज करने लगा। ढोलन के हुआ लड़का और हारुन के हुई लड़की।

ढोलन ने बेटे का नाम रक्खा नल। नल बड़ा पराक्रमी था। उसे कुश्ती लड़ने का बड़ा शौक था। उसने एक अखाड़ा बनवाया और उसमें नीम का एक पेड़ लगाया। उस पेड़ में वह रोज एक सेर दूध और एक सेर पानी डालता था। वह पेड़ बढ़कर खूब घना हो गया। राजकुमार नल उसीकी छांह में बैठना-उठना था।

गढ़पिंजर गांव में रेवा-परेवा नाम की दो माली की लड़कियां रहती थीं। वे थीं जादूगरनी। जब वे अखाड़े से होकर गुजरीं तो नीम के सुन्दर पेड़ पर उनकी निगाह पड़ी। उसके नीचे सोते हुए नल को देखकर सोचने लगीं कि जो नीम के पेड़ से इतना प्रेम करता है वह मनुष्य से न जाने कितना प्यार करेगा।

उन्होंने निश्चय किया कि किसी-न-किसी तरह इस राजकुमार को अपने फंदे में फंसाना चाहिए। उन्होंने अपने जादू के बल से उस नीम को सुखा दिया।

दूसरे दिन जब नल ने वह सूखा हुआ पेड़ देखा तो उसका कलेजा धक रह गया। वह बोला, "हाय नीम, तुम्हें क्या हो गया? क्या तुम्हें कोई रोग हो गया, या जेठ की धूप लग गई?"

नीम ने कहा, "न तो मुझे कोई रोग हुआ है और न जेठ की धूप ही लगी है। रेवा-परेवा की बुरी निगाह ने मेरा ऐसा हाल कर दिया है।"

राजकुमार नल रंज के मारे उसी सूखे नीम के नीचे पड़ा रहा। जब घर न पहुंचा तो राजा और रानी वहां आये। बेटे का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर बोले, "बेटा, तुम्हें क्या चिन्ता है?"

नल ने कहा, "अगर आप मेरी चिन्ता दूर करना चाहते हैं तो आप मेरी शादी रेवा-परेवा के साथ कर दीजिए।"

बात ढोलन की समझ में नहीं आई। वह बोला, "कहां मालिन और कहां राजकुमार! यह शादी कैसे हो सकती है? फिर तुम नहीं जानते कि वे दोनों बहनें कितनी कुटनी हैं।"

नल ने कहा, "इसीसे तो मैं उन्हें शादी करके अपनी पकड़ में रखना चाहता हूं। उन्होंने मेरे हरे-भरे लहलहाते नीम को नजर लगाई है। मैं इसका बदला लिये बिना न रहूंगा।"

जाकर रहना होगा और वह कोई काम उनसे बगैर पूछे नहीं कर सकेगा।

ढोलन का मन डांवाडोल था, पर नल अपनी बात पर अटल था। रेवा-परेवा की बात मानकर नल उनके साथ गढ़पिंजर चला गया और इस तरह उसका अपने घर से संबंध बिलकुल टूट गया।

इधर राजा हारुन को बेटी ब्याहके योग्य हो रही थी। हारुन ने राजा ढोलन के पास संदेश भेजकर उसे उसके वचन की याद दिलाई। पर नल अब वहां कहां था। उसने राजा हारुन के दूतों को टाल दिया।

राजा हारुन को बड़ा दुःख हुआ और उससे ज्यादा दुःख हुआ उसकी बेटी को। उसने बेटी को उदास देखकर दूसरा पत्र भेजा, पर ढोलन ने फिर टाल दिया।

गढ़पिंजर में राजा ढोलन के नगर नरवरगढ़ के बहुत-से व्यापारी माल बेचने आया करते थे। हारुन की बेटी महल की छत पर चढ़कर आस लगाये देखा करती थी कि कहीं उसके लिए कोई गुप्त सन्देशा न हो। रोज ही उसे निराश होना पड़ता था। एक दिन उसने संकोच छोड़कर एक व्यापारी से पूछा, "तुम यह सब माल कहां से लाते हो भाई?"

व्यापारी ने उत्तर दिया--"नरवरगढ़ से।"

इसपर राजकुमारी ने उसको बहुत-सा सोना और धन दिया। सामान लादने के लिए पांच सौ मजबूत बैल दिये।

व्यापारी बहुत खुश हुआ, पर राजकुमारी के उदास मुख को देखकर बोला, "राजकुमारी, तुम्हें क्या दुःख है? तुम्हारे पति का क्या नाम है? क्या तुम्हें उन्होंने छोड़ दिया है, या वह कहीं परदेस गये हैं?"

राजकुमारी ने कहा, "मेरी सगाई नरवरगढ़ के राजा ढोलन के बेटे नल से हो गई है। अब कुछ पता नहीं कि नल कहां-किस विपदा में फंसा हुआ है!"

व्यापारी ने कहा, "राजकुमारी, तुम्हें कुछ भी पता नहीं!

अरे, नल की शादी तो राजा ढोलन ने रेवा-परेवा नाम की मालिनों से कर दी है।"

राजकुमारी अचरज में भरकर बोली, "रेवा-परेवा से ? क्या मेरे ही नगर की जादूगरनियों से ? यह कैसे हो गया ? क्या मेरी एक चिट्ठी राजा नल के पास पहुंचा दोगे ?"

व्यापारी ने चिट्ठी ले ली और चल दिया। रास्ते में उसे रेवा-परेवा मिल गईं और उन्होंने यह पत्र उससे छीनकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

थोड़े दिन बाद एक भिखारी गढ़पिंजर में भीख मांगता हुआ आया। राजा हारुन की बेटी ने उसे बुलाया और कहा, "मैं तुम्हें जिन्दगी भर के लिए भोजन और कपड़े दूंगी। तुम मेरी एक चिट्ठी राजा नल को दे आओ।"

भिखारी राजी हो गया और चिट्ठी लेकर चल दिया।

रास्ते में रेवा-परेवा राक्षसियों का रूप रखकर भिखारी को खाने के लिए दौड़ीं। रेवा ने अपना मुंह इतना खोला कि आकाश-पाताल नाप लिये। भिखारी भी जादूगर था। वह भिनगा बनकर उनके मुंह में घुस गया और उनके कान में होकर बाहर निकल गया। रेवा को पता भी न चला। वह मुंह फाड़े खड़ी थी। भिखारी ने राजा नल के पास पत्र पहुंचा दिया। रेवा-परेवा हारकर घर लौटीं तो उन्होंने राजा नल को चिट्ठी पढ़ते हुए पाया। उन्होंने चिट्ठी छीनकर फाड़ डाली। लेकिन अब क्या था ? राजा नल को यह तो पता चल ही गया कि उसकी मंगेतर उसकी बाट देख रही है। वह रेवा-परेवा के कठिन पहरे से निकलने का उपाय सोचने लगा।

और, नल की शादी तो राजा ढोलन ने रेवा-परेवा नाम की मालिनों से कर दी है।"

राजकुमारी अचरज में भरकर बोली, "रेवा-परेवा से ? क्या मेरे ही नगर की जादूगरनियों से ? यह कैसे हो गया ? क्या मेरी एक चिट्ठी राजा नल के पास पहुंचा दोगे ?"

व्यापारी ने चिट्ठी ले ली और चल दिया। रास्ते में उसे रेवा-परेवा मिल गई और उन्होंने यह पत्र उससे छीनकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

थोड़े दिन बाद एक भिखारी गढ़पिंजर में भीख मांगता हुआ आया। राजा हारुन की बेटी ने उसे बुलाया और कहा, "मैं तुम्हें जिन्दगी भर के लिए भोजन और कपड़े दूंगी। तुम मेरी एक चिट्ठी राजा नल को दे आओ।"

भिखारी राजी हो गया और चिट्ठी लेकर चल दिया।

रास्ते में रेवा-परेवा राक्षसियों का रूप रखकर भिखारी को खाने के लिए दौड़ीं। रेवा ने अपना मुंह इतना खोला कि आकाश-पाताल नाप लिये। भिखारी भी जादूगर था। वह भिनगा बनकर उसके मुंह में घुस गया और उसके कान में होकर बाहर निकल गया। रेवा को पता भी न चला। वह मुंह फाड़े खड़ी थी। भिखारी ने राजा नल के पास पत्र पहुंचा दिया। रेवा-परेवा हारकर घर लौटी तो उन्होंने राजा नल को चिट्ठी पढ़ते हुए पाया। उन्होंने चिट्ठी छीनकर फाड़ डाली। लेकिन अब क्या था ? राजा नल को यह तो पता चल ही गया कि उसकी मंगेतर उसकी बाट देख रही है। वह रेवा-परेवा के कठिन पहरे से निकलने का उपाय सोचने लगा।

जाकर रहना होगा और वह कोई काम उनसे बगैर पूछे नहीं कर सकेगा।

ढोलन का मन डांवाडोल था, पर नल अपनी बात पर अटल था। रेवा-परेवा की बात मानकर नल उनके साथ गढ़पिंजर चला गया और इस तरह उसका अपने घर से संबंध बिलकुल टूट गया।

इधर राजा हारुन की बेटी ब्याहके योग्य हो रही थी। हारुन ने राजा ढोलन के पास संदेश भेजकर उसे उसके वचन की याद दिलाई। पर नल अब वहां कहां था। उसने राजा हारुन के दूतों को टाल दिया।

राजा हारुन को बड़ा दुःख हुआ और उससे ज्यादा दुःख हुआ उसकी बेटी को। उसने बेटी को उदास देखकर दूसरा पत्र भेजा, पर ढोलन ने फिर टाल दिया।

गढ़पिंजर में राजा ढोलन के नगर नरवरगढ़ के बहुत-से व्यापारी माल बेचने आया करते थे। हारुन की बेटी महल की छत पर चढ़कर आस लगाये देखा करती थी कि कहीं उसके लिए कोई गुप्त सन्देशा न हो। रोज ही उसे निराश होना पड़ता था। एक दिन उसने संकोच छोड़कर एक व्यापारी से पूछा, "तुम यह सब माल कहां से लाते हो भाई ?"

व्यापारी ने उत्तर दिया--"नरवरगढ़ से।"

इसपर राजकुमारी ने उसको बहुत-सा सोना और धन दिया। सामान लादने के लिए पांच सौ मजबूत बैल दिये।

व्यापारी बहुत खुश हुआ, पर राजकुमारी के उदास मुख को देखकर बोला, "राजकुमारी, तुम्हें क्या दुःख है? तुम्हारे पति का क्या नाम है ? क्या तुम्हें उन्होंने छोड़ दिया है, या वह कहीं परदेस गये हैं ?"

राजकुमारी ने कहा, "मेरी सगाई नरवरगढ़ के राजा ढोलन के बेटे नल से हो गई है। अब कुछ पता नहीं कि नल कहां-किस विपदा में फंसा हुआ है !"

व्यापारी ने कहा, "राजकुमारी, तुम्हें कुछ भी पता नहीं :

जाकर रहना होगा और वह कोई काम उनसे बगैर पूछे नहीं कर सकेगा।

ढोलन का मन डांवाडोल था, पर नल अपनी बात पर अटल था। रेवा-परेवा की बात मानकर नल उनके साथ गढ़पिंजर चला गया और इस तरह उसका अपने घर से संबंध बिलकुल टूट गया।

इधर राजा हारुन की बेटी ब्याह के योग्य हो रही थी। हारुन ने राजा ढोलन के पास संदेश भेजकर उसे उसके वचन की याद दिलाई। पर नल अब वहां कहां था। उसने राजा हारुन के दूतों को टाल दिया।

राजा हारुन को बड़ा दुःख हुआ और उससे ज्यादा दुःख हुआ उसकी बेटी को। उसने बेटी को उदास देखकर दूसरा पत्र भेजा, पर ढोलन ने फिर टाल दिया।

गढ़पिंजर में राजा ढोलन के नगर नरवरगढ़ के बहुत-से व्यापारी माल बेचने आया करते थे। हारुन की बेटी महल की छत पर चढ़कर आस लगाये देखा करती थी कि कहीं उसके लिए कोई गुप्त सन्देशा न हो। रोज ही उसे निराश होना पड़ता था। एक दिन उसने संकोच छोड़कर एक व्यापारी से पूछा, "तुम यह सब माल कहां से लाते हो भाई?"

व्यापारी ने उत्तर दिया--"नरवरगढ़ से।"

इसपर राजकुमारी ने उसको बहुत-सा सोना और धन दिया। सामान लादने के लिए पांच सौ मजबूत बैल दिये।

व्यापारी बहुत खुश हुआ, पर राजकुमारी के उदास मुख को देखकर बोला, "राजकुमारी, तुम्हें क्या दुःख है? तुम्हारे पति का क्या नाम है? क्या तुम्हें उन्होंने छोड़ दिया है, या वह कहीं परदेस गये हैं?"

राजकुमारी ने कहा, "मेरी सगाई नरवरगढ़ के राजा ढोलन के बेटे नल से हो गई है। अब कुछ पता नहीं कि नल कहां-किस विपदा में फंसा हुआ है!"

व्यापारी ने कहा, "राजकुमारी, तुम्हें कुछ भी पता नहीं!

अरे, नल की शादी तो राजा ढोलन ने रेवा-परेवा नाम की मालिनों से कर दी है।"

राजकुमारी अचरज में भरकर बोली, "रेवा-परेवा से? क्या मेरे ही नगर की जादूगरनियों से? यह कैसे हो गया? क्या मेरी एक चिट्ठी राजा नल के पास पहुंचा दोगे?"

व्यापारी ने चिट्ठी ले ली और चल दिया। रास्ते में उसे रेवा-परेवा मिल गईं और उन्होंने यह पत्र उससे छीनकर टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

थोड़े दिन बाद एक भिखारी गढ़पिंजर में भीख मांगता हुआ आया। राजा हारून की बेटी ने उसे बुलाया और कहा, "मैं तुम्हें जिन्दगी भर के लिए भोजन और कपड़े दूंगी। तुम मेरी एक चिट्ठी राजा नल को दे आओ।"

भिखारी राजी हो गया और चिट्ठी लेकर चल दिया।

रास्ते में रेवा-परेवा राक्षसियों का रूप रखकर भिखारी को मारने के लिए दौड़ीं। रेवा ने अपना मुंह इतना खोला कि आकाश-पाताल नाप लिये। भिखारी भी जादूगर था। वह भिनगा बनकर उनके मुंह में घुस गया और उनके कान में होकर बाहर निकल गया। रेवा को पता भी न चला। वह मुंह फाड़े खड़ी थी। भिखारी ने राजा नल के पास पत्र पहुंचा दिया। रेवा-परेवा हारकर घर लौटीं तो उन्होंने राजा नल को चिट्ठी पढ़ते हुए पाया। उन्होंने चिट्ठी छीनकर फाड़ डाली। लेकिन अब क्या था? राजा नल को यह तो पता चल ही गया कि उनकी मंगेतर उनकी बाट देख रही है। वह रेवा-परेवा के कठिन पहरे से निकलने का उपाय सोचने लगा।

हारुन के महल की ओर चल दिया। वहां से उसका नरवरगढ़ तीन सौ साठ कोस था। वह पहले अपने पिता ढोलन के पास जाना चाहता था और उसके पास बस एक घंटा बाकी था। वह चुपचाप राजा हारुन की घुड़साल और हथसार में गया, पर वहां कोई भी घोड़ा-हाथी उसे बहुत तेज चलनेवाला न मिला। तब एक घोड़े ने उससे कहा कि हमारे राजा ने एक सिंहनी अपनी बेटी के दहेज के लिए रख छोड़ी है। वह पाताललोक में है। वही तुम्हें तुम्हारे देस इतनी जल्दी पहुंचा सकती है।

राजा नल ने मिस्त्रियों को बुलाकर जमीन खुदवाई, संयोग से वह भिखारी वहीं खडा था। उसने जमीन में पैर मारा। पैर मारते ही जमीन फट गई और नल सिंहनी के पास जा पहुंचा। राजा नल ने सिंहनी को अपनी बात कह सुनाई। सिंहनी ने कहा, "राजन्, मैं बारह साल से उपवास कर रही हूं। मुझमें अभी इतनी ताकत नहीं है कि इतनी बड़ी मंजिल तय कर सकूं। मेरी पीठ पर सवार होकर मुझे गंगा-स्नान के लिए ले चलो।" राजा सिंहनी को गंगा के किनारे ले गया। सिंहनी जल में जाते ही इन्द्रलोक जा पहुंची और इन्द्र से वरदान मांगा कि वह पहले जैसी ताकतवर हो जाय। खूब तन्दुरुस्त होकर सिंहनी राजा के पास लौट आई।

रेवा-परेवा राजा नल का पीछा करती हुई सिंहनी के पास आ पहुँची। उसे उन्होंने बड़ा लालच दिया, पर सिंहनी नल की सहायता करने पर तुली हुई थी। तब रेवा-परेवा ने उसे मारने का प्रयत्न किया, पर सिंहनी को अमर होने का वरदान था, इसलिए रेवा-परेवा अपना-सा मुंह लेकर लौट गई।

सिंहनी नल को पीठ पर बिठाकर नरवरगढ़ की ओर चल दी। उसने नल से कहा, "रास्ते में किसी तरह का लालच मत करना। रास्ते में एक नदी पड़ेगी। उसमें घुसते ही रेवा-परेवा मेरी पूंछ पकड़कर लटक जायंगी। तुम डरना मत और तलवार से मेरी पूंछ काटकर फेंक देना।"

रास्ते में रेवा-परेवा ने जादू से सुन्दर बाग-बगीचे लगाये।

नल का जी ललचाने लगा, पर सिहनी ने उसे उतरने नहीं दिया। आगे चले तो एक नगरी मिली, जिसमें एक बड़ा आलीशान महल बना हुआ था। राजा सिहनी के मना करने पर भी उतर पड़ा और सैर करने लगा। जबतक सिहनी की रस्सी राजा के हाथ में रही सब ठीक रहा, पर जैसे ही रस्सी हाथ से छूटी कि राजा नल उसी समय मर गया। सिहनी व्याकुल होकर इन्द्रलोक पहुंची। और इधर रेवा-परेवा राजा के शव को लेकर गढ़पिंजर भाग गईं।

इन्द्रलोक से अमृत लाकर सिहनी गढ़पिंजर गई और नल को जिला दिया। फिर उसे पीठपर बिठाकर चुपचाप निकल भागी। रेवा-परेवा भी उसके पीछे-पीछे दौड़ीं। रास्ते में एक नदी पड़ी। सिहनी उसमें उतर गई। रेवा-परेवा ने उसकी पूंछ पकड़ ली। राजा को सिहनी की बात याद हो आई। उसने तलवार से सिहनी की पूंछ काट दी। रेवा-परेवा नदी के किनारे ताड़ के पेड़ बनकर खड़ी हो गईं। राजा नल नरवरगढ़ पहुँच गया और उसने राजा ढोलन को सब आपबीती कह सुनाई। राजा ढोलन ने नल को विश्वास दिलाया कि वह अब निडर होकर रहे। ब्याह आनंद से हो जायगा। धूम-धाम से बरात लेकर राजा ढोलन गढ़पिंजर की ओर चल दिया। रास्ते में नदी मिली तो सब बराती कलेऊ करने के लिए वहां ठहर गये। पास ही एक शेर और शेरनी खड़े थे। शेर ने नल को दिखाते हुए शेरनी से कहा, "कैसा सुन्दर राजकुमार है। आज मैं तुम्हारे लिए इसे मारकर लाऊंगा।" शेर को अपनी ओर आते हुए देखा तो नल ने कटारी दाग दी। शेर वहीं ढेर हो गया। शेरनी दहाड़ती हुई आई और बोली, "राजकुमार, तुमने मेरे पति को मारा है। मैं इसका बदला जरूर लूंगी।"

जानती थी कि उसी दिन वह किसी तरह भी नहीं लौट सकेगा।

हारुन ने जल्दी-जल्दी फेरे समाप्त किये और लड़की को विदा कर दी। नल को वही सिहनी दहेज में मिली। वह नल और उसकी रानी को लेकर हवा से बातें करनी लगी। रास्ते में रेवा-परेवा, जो ताड़ के पेड़ बन गई थीं, नल को दिखाई दीं। वे उसे देखते ही राक्षसी बनकर उसे खाने दौड़ीं। राजा ढोलन ने इसके लिए पहले से ही तैयारी कर रखी थी। वह अपने साथ एक तेलिन को लाया था, जो कि रेवा-परेवा से भी भयंकर जादूगरनी थी। वह रेवा-परेवा से भिड़ गई और ऐसे जोर की गुत्थमगुत्था हुई कि रेवा-परेवा और तेलिन के दांत एक दूसरे की देह में घुस गए। राजा नल ने रानी से कहा, "अच्छा मौका है। कहो तो अभी तीनों को खत्म कर दूं।"

रानी बोली, "हां-हां, जल्दी करो, नहीं तो फिर कोई-उत्पात न कर बैठें।"

राजा नल ने तीनों को मौत के घाट उतार दिया। तेलिन ने मरते समय राजा नल को शाप दिया, "ए राजा, तुमने भलाई का बदला बुराई से दिया है, इसलिए तुम यह भूल जाओगे कि तुम्हारा विवाह हारुन की लड़की से हुआ है।"

नल ने तेलिन की बहुत खुशामद की तो उसने कहा, "अच्छा जब तुम्हारा पैर अनजान में तुम्हारी रानी के आंचल पर पड़ेगा तो सब याद आ जायगी।"

सिहनी पर सवार होकर राजा नल रानी के साथ उसी दिन नरवरगढ़ आ गया। घर आकर नल ने रानी की कोई खबर-सुध नहीं ली। रानी बड़ी हैरान रहने लगी, पर लाचार थी। एक रात को नल बाहर सो रहा था कि बड़े जोर की आंधी और तूफान आए। वह उठकर अन्दर आया तो उसका पैर रानी के आंचल पर पड़ गया। उसे एकदम चेत हुआ और वह रानी से इतने दिन अलग-अलग रहने के लिए क्षमा मांगने लगा। उसके बाद वे दोनों सुख से रहने लगे।

सारंगा रानी

एक हंस-हंसिनी का जोड़ा जंगल में बड़े सुख से रहता था। एक बार पूरे साल वर्षा नहीं हुई। पेड़-पौधे, नदी तालाब सब सूख गये। जंगल के पशु-पक्षी सब भाग गये, पर हंस और हंसिनी मेह बरसने की आस लगाये वहीं बने रहे। एक दिन भूख से व्याकुल होकर हंसिनी ने हंस से कहा, "इस तरह कबतक भूखों मरते रहोगे? अब यहां किसी तरह गुजारा नहीं हो सकता।"

हंस बोला, "कहती तो तुम ठीक हो, पर जायं तो कहां जायं?

हंसिनी ने कहा, "कहीं भी चलो, पर यहां रहना अब नहीं हो सकेगा।"

हंस और हंसिनी दोनों उड़ चले। उड़ते-उड़ते वे एक पोखर के पास आये। प्यासे तो थे ही, सो पानी को देखकर उनकी जान लौट आई। पर दोनों ने जैसे ही पानी पिया कि छटपटाने लगे और वहीं मर गये। उसी समय एक तीसरा हंस भी उड़ता हुआ

जानती थे; साथ ही खाते और साथ ही पढ़ते। लिलीसागर पर होकर सत्यव्रत सारंगा को खूब सैर कराता।

दिन बीतते-होते सारंगा ब्याह के योग्य हो गई। अब राजा को नल और का सत्यव्रत के साथ मिलना-जुलना और सैर-सपाटे करना खटकने लगा। राजा ने सोचा कि अब सत्यव्रत को ऐसी जगह भेजना चाहिए, जहां से वह जल्दी वापस न आ सके और इसी बीच सारंगा का विवाह कर देना चाहिए। राजा ने सत्यव्रत को बुलाया और हुक्म दिया कि वह दैत्य-राज्य में जाकर कर वसूल कर लावे।

वजीर ने जब यह सुना तो बड़ा घबराया। वह जानता था कि राजाओं की रीति ही होती है कि चाहे तो किसीको हाथी पर चढ़ादें और चाहें तो गदहे पर बिठा दें। पर वह क्या करता? लाचार था। सत्यव्रत लिलीसागर पर बैठकर दैत्य-राज्य की ओर चल दिया। रास्ते में उसे एक मित्र मिला। उसने उसे सब हाल कह सुनाया। उसने कहा, "दोस्त, तुम बेफिकर होकर जाओ। राज्य की हर बात की खबर मैं तुम्हें पहुँचाता रहूंगा।"

सत्यव्रत ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपने मित्र को गले लगा लिया, फिर आगे चल दिया। आठ दिन भी न हुए होंगे कि सत्यव्रत को खबर मिली कि सारंगा का विवाह होनेवाला है। उसका मन सारंगा से मिलने के लिए बेचैन हो उठा। वह भेस बदलकर तत्काल वहां से चल दिया और अपने नगर में आ पहुँचा। उसने देखा कि नगर में चारों ओर बड़ी चहल-पहल हो रही है और सारा नगर जगमगा रहा है। वजीर ने सत्यव्रत को पहचान लिया और उसे लेजाकर चुपचाप अपने घर में छिपा दिया।

उधर सारंगा की धाय को सत्यव्रत के आने का पता लग गया। उसने यह समाचार जाकर सारंगा को सुनाया। सारंगा ने सत्यव्रत के लिए उसके हाथ एक पत्र भिजवाया, जिसमें लिखा था कि वह आधी रात को उससे मिलने आयगी।

सत्यव्रत सारंगा की प्रतीक्षा कर ही रहा था कि उसने दर-

वाजे पर किसीके पैरों की आहट सुनी। वह उठा और चुपके से किवाड़ खोल दीं। रात भर वे दोनों अपना सुख-दुःख सुनाते रहे और ताश खेलते रहे।

इधर सारंगा ताश खेलने में लगी थी, उधर महल में फेरों के लिए उसकी तलाशी हो रही थी। बदनामी के डर से राजा ने पुरोहित से कहलवा दिया कि हमारे यहां लड़की चौक पर नहीं बैठती। लड़की की चुनरी से भाँवरें पड़ जाती हैं। यह प्रबंध तो हो गया, पर राजा मन-ही-मन चिन्तित था कि विदा के समय वह क्या जवाब देगा।

सवेरा होने को हुआ तो सारंगा को होश हुआ। वह घबराकर सत्यव्रत से बोली, "अब मैं घर कैसे वापस जाऊं? कोई देखेगा तो क्या कहेगा?"

सत्यव्रत ने कहा, "तुम चिन्ता क्यों करती हो? मैं सब ठीक किये देता हूं।"

उसने सारंगा के जेवर और कपड़े एक पोटली में बांध दिये और उसे दरोगा की पोशाक पहनादी और निलीसागर पर सवार कराकर विदा कर दिया।

पर उसने अपनी वियोग-गाथा लिख डाली। इसके बाद वह डोले में वापस आगई। डोला चल दिया। सारंगा ससुराल में आ पहुँची।

उधर सत्यव्रत का सारंगा के वियोग में बुरा हाल था। वह पागल की तरह जंगलों में भटकने लगा। घूमते-घूमते वह एक दिन उसी शिवालय में आया। वहां सारंगा के हाथ की लिखावट देखकर उसकी आँखों में आँसू भर आये। उसने शिवजी के सामने प्रतिज्ञा की कि वह सारंगा को प्राप्त करके ही दम लेगा। उसने अपने कपड़े गेरुए रंग लिये और जोगी का भेस रखकर भिक्षा मांगने लगा।

एक दिन सारंगा अपने महल की खिड़की से झांक रही थी कि उसपर सत्यव्रत की नजर पड़ गई। उसने उसे तुरंत पहचान लिया, परन्तु सारंगा सत्यव्रत को न पहचान पाई। सत्यव्रत ने दाढ़ी बढ़ा ली थी और सिर पर जटाएं रख ली थीं। सारंगा को देखकर वह गा-गाकर भीख मांगने लगा। भेस बदला हुआ था, पोशाक बदली हुई थी, पर सत्यव्रत की आवाज में वही ओज था, वही दर्द था, जिसे सुनकर सारंगा कभी दीवानी हो जाया करती थी। सत्यव्रत को पहचाना तो उसका मन हुआ कि खिड़की से कूद पड़े, पर उसके सामने लोकलाज थी, रानी होने की मर्यादा थी, जिसको तोड़ना उसके लिए आसान नहीं था। वह पागल की तरह सत्यव्रत को टकटकी बांधकर देखती रही। इतने में उसकी सास मोतियों से भरा थाल लेकर आई और बोली, "बहू, जोगी को भिक्षा दे-आ।"

सारंगा की आँखें डबडबा आईं। वह बोली, "मां, मुझसे यह काम नहीं हो सकेगा। मुझे लज्जा आती है।"

सास ने समझाया, "बेटी, जोगी से शरम किस बात की! जाओ, भिक्षा दे आओ।"

सारंगा दरवाजे पर पहुँची और कांपते हाथों से मोतियों भरा थाल सत्यव्रत के चरणों पर रख दिया। सत्यव्रत की निगाह

सारंगा के आंसुओं से तर चेहरे पर गड़ गई। वह बोला, "सारंगा, क्या तुम अपने सत्यव्रत को भूल गई? मैं मोतियों की भिक्षा मांगने नहीं आया। मैं तो तुम्हारे प्यार की भीख मांगने आया हूं।"

सारंगा ने कहा, "सत्यव्रत, जरा धीरे बोलो। दीवारों के भी कान होते हैं।"

सत्यव्रत ने कहा, "सारंगा, तुम मेरे साथ भाग चलो।"

सारंगा बोली, "पागल न बनो, सत्यव्रत। मैं इस तरह कैसे तुम्हारे साथ चल सकती हूं? तुम कोई ठीक प्रबन्ध करो तो मैं चलने को तैयार हूं।"

सत्यव्रत बोला, "अच्छी बात है।"

यह कहकर वह चला गया और सारंगा को लाने का उपाय सोचता रहा। जंगलों में रहते-रहते उसकी मित्रता एक सपेरे से हो गई। पांच मोहरें देकर उसने उससे कुछ जड़ी-बूटी और एक सांप ले लिया। ये चीजें एक थैली में बन्द करके वह सारंगा के महल की ओर चल दिया।

तैयार की गई और जैसे ही चिता में आग देने को हुए कि बड़ी भयानक आवाज आई, "खबरदार, जो किसीने चिता को हाथ लगाया! अभी सब जलकर भस्म हो जाओगे।"

डरके के मारे सब भाग गये।

इसके बाद सत्यव्रत ने सारंगा को चिता से बाहर निकाला और जड़ी-बूटी सुंघाकर उसे होश में ले आया। उस दिन से वे जंगल में सुखपूर्वक रहने लगे। एक दिन सत्यव्रत सारंगा की गोद में सो गया। उसने सारंगा की उंगली अपने मुँह में दे रक्खी थी। उसी समय एक राजा शिकार खेलता हुआ वहां आ निकला। सारंगा को देखते ही वह उसपर मुग्ध हो गया। उसने अपना घोड़ा वहीं रोक दिया और अपना रूमाल जमीन पर गिरा दिया। सारंगा से बोला, "देवी, कष्ट तो होगा, जरा मेरा रूमाल उठाकर मुझे दे दो।"

सारंगा ने कहा, "देखते नहीं, मेरी उंगली मेरे पति के मुँह में है। मेरे उठने से उनकी नींद टूट जायगी।"

राजा ने कहा, "लो, यह सुपारी उनके मुँह में दे दो और इस तकिये को उनके सिरहाने लगा दो।"

सारंगा ने वैसा ही किया, पर जैसे ही वह राजा को रूमाल पकड़ा रही थी कि राजा ने उसे चट अपने घोड़े पर बिठा लिया और सरपट घोड़ा दौड़ा दिया। सारंगा ने बहुत चीख-पुकार की, पर सत्यव्रत की नींद नहीं खुली। सारंगा राजा के महल में पहुँच गई। रास्ते में वह अपनी कण्ठी के मूंगे गिराती आई।

सत्यव्रत की आँख खुली तो सारंगा का वहां कोई पता नहीं था। जमीन पर कुछ मूंगे बिखरे हुए देखे तो वह समझ गया कि जरूर उसे कोई उड़ा ले गया है। वह मूंगों के सहारे-सहारे उसी राजा के राज्य में पहुँच गया।

सारंगा ने राजा से वचन ले लिया था कि जबतक उसके लिए अलग महल नहीं बन जाता, वह उसकी रानी बनकर नहीं रह सकती। राजा ने देश-विदेश से हजारों राज-मजूर महल बनाने

के लिए बुला लिये। सत्यव्रत भी उन्हींमें जा मिला। दिन-पर-दिन बीत रहे थे, पर महल का काम चौथाई भी नहीं हुआ था। जितनी राजा को जल्दी थी उतनी ही ज्यादा देर होती जारही थी। एक दिन राजा सारंगा को लेकर महल देखने के लिए गया। उसने मजूरों से पूछा कि इतनी देर क्यों हो रही है?

उन्होंने कहा, "महाराज, इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। एक नया मजूर जबसे काम पर आया है तबसे हमारा काम ढीला हो गया है। वह ऐसे दर्दीले गीत गाता है कि सुनकर हमारे हाथ-पैर ढीले हो जाते हैं।"

राजा ने कहा, "उसको मेरे सामने लाओ।"

सत्यव्रत मस्ती में झूमता हुआ राजा के सामने आया और सारंगा को देखते ही चिल्ला उठा, "सारंगा, मेरी सारंगा।"

सारंगा भी चीख उठी, "सत्यव्रत!"

यह कहते-कहते वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

राजा यह सब देखकर आश्चर्य-चकित रह गया। उसी समय सत्यव्रत ने देखा कि लिलीसागर उसके सामने खड़ा है। वह सारंगा को लेकर घोड़े पर सवार हुआ और उसे इतना तेज दौड़ाया कि राजा के सिपाही मात खा गये।

सारंगा और सत्यव्रत के पिता बूढ़े हो गये थे। दोनों अपने बेटा और बेटी के बिछोह से बेहाल थे। राजा ने सारंगा और सत्यव्रत की खोज में चारों ओर सिपाही भेज दिये। सौभाग्य की बात है कि लिलीसागर पर सवार सत्यव्रत और सारंगा उन्हें रास्ते में ही मिल गये।

: ११ :

संत-बसंत

एक राजा था। उसके दो बेटे थे। बड़े का नाम था संत, छोटे का बसंत। दोनों राजा-रानी की आँखों के तारे थे। रानी के सोने के कमरे में एक चिड़िया ने घोंसला बना रक्खा था। चिरौटा और चिड़िया दोनों बड़े प्यार से रहते थे। कुछ दिनों में चिड़िया ने अण्डे दिये और रानी के देखते-देखते उन अण्डों में से दो बच्चे निकले। चिड़िया और चिरौटा उनके लिए चुगा लाते और अपनी चोंच बच्चों के मुंह में देकर उन्हें खिलाते। रानी अपनी छोटी-सी गृहस्थी की तुलना इस चिड़िया की गृहस्थी से किया करती थी। जैसी हरी-भरी उसकी गृहस्थी थी, वैसे ही चिड़िया अपने परिवार में उल्लास से भरकर चहका करती थी।

एक दिन रानी पलंग पर लेटी हुई थी कि उसने देखा, चिड़िया घोंसले में वापस नहीं आई है, बच्चे चीं-चीं करके मां की प्रतीक्षा कर रहे हैं और चिरौटा उदास बैठा है। रात बीत गई, पर चिड़िया नहीं लौटी। रानी एक मिनट भी नहीं सोई। चिन्ता के मारे हैरान रही कि आखिर ऐसा हुआ क्या, जो चिड़िया नहीं आई। उसे फिर विचार आया कि इसी तरह मैं भी न रहूं तो मेरे बच्चों का क्या होगा?

दो-चार दिन बाद चिरौटा दूसरी चिड़िया ले आया और उजड़ा हुआ घर फिर बस गया। चिरौटा बड़ा खुश था। बच्चे भी प्रसन्न हुए, पर जैसे ही वे चीं-चीं करके अपनी मां की ओर प्यार से चोंच ले जाते, चिड़िया रोष में भरकर उनको अपनी चोंच मार देती। बच्चे सहमे-से रह जाते। उनका जीवन नीरस और उदास हो गया। न उन्हें समय पर चुगा मिलता, न पानी

चिरौटा भी अपने बच्चों की ओर से लापरवाह हो गया।

एक दिन रानी ने देखा कि दोनों बच्चे मरे हुए जमीन पर पड़े हैं और चिड़िया की आँखें हर्ष से भरी हुई हैं। रानी के हृदय को बड़ा धक्का लगा। वह संत-वसंत के लिए सोचने लगी कि यदि मैं मर जाऊँ और राजा दूसरा विवाह कर लें तो उनकी भी ऐसी ही दुर्गति होगी। उसी समय राजा आया और रानी को दुखी देखकर हैरान होकर बोला, "क्यों, क्या तबीयत ठीक नहीं है?"

रानी ने कहा, "नहीं।"

राजा ने वैद्य को बुलाने का हुक्म दिया, पर रानी ने रोक दिया। बोली, "मेरी एक बात मानोगे?"

राजा ने कहा, "कभी ऐसा हुआ है कि मैंने तुम्हारी बात न मानी हो। कहो तो सही, क्या बात है?"

रानी बोली, "अगर मैं मर जाऊं तो तुम दूसरी शादी मत करना। देखो न इस चिरौटे को। पहली चिड़िया मर गई तो दूसरी ले आया और उसने इन बच्चों को इतना सताया कि वे बेचारे मर गए। पहली चिड़िया के सामने तो चिरौटा भी इनके लिए मरता-जीता था, पर चिड़िया के मरने के बाद यह भी इस दूसरी चिड़िया का गुलाम हो गया। अगर यही चिन्ता करता तो बच्चे क्यों मर जाते! इसीलिए मैं हाथ जोड़कर कहती हूँ कि तुम दूसरी शादी कभी मत करना।"

राजा ने हँसकर कहा, "तुम भी खूब हो, जी। इन परिन्दों को देखकर अपने अनर्थ की बात सोचने लगीं। तुम क्यों मरो? भगवान करे, चिरायु हो।"

बात आई-गई हो गई, पर रानी के मन में चिन्ता घर कर गई। वह दिन-दिन सूखने लगी और एक दिन ऐसा आया कि वह बीमार पड़ गई और राजा की हजार कोशिश करने पर भी किसी तरह न बच सकी। बच्चे बिना मां के रह गए।

रानी के मर जाने पर चारों ओर से राजा की सगाइयां

आने लगीं, पर राजा चिड़िया वाली बात सोचकर हमेशा मना कर देता। होनहार की बात कि एक बार सबके जोर देने पर वह शादी करने को तैयार हो गया। दूसरी रानी के आने से घर की उजड़ी खुशी फिर लौट आई। संत-बसंत भी मां को पाकर प्रसन्न हुए। राजा को परम संतोष हुआ।

एक दिन बच्चे बाहर गेंद खेल रहे थे। रानी आंगन में स्नान कर रही थी। अकस्मात् गेंद उछलकर आंगन में आ गिरी। रानी 'हाय-हाय' चिल्लाने लगी। बच्चे दौड़े-दौड़े आए, पर रानी को रोते देखकर वे सहमे रह गए। रानी कोपभवन में जा लेटी। राजा के आने पर भी वह औंधे मुँह पड़ी रही। राजा ने पूछा, "क्या बात है ?"

रानी तुनककर बोली, "तुम्हारे इन लाड़ले संत-बसंत ने मेरे पेट में गेंद मारी है। दर्द के मारे प्राण निकले जा रहे हैं। अगर तुम्हें मेरी परवाह नहीं है तो फिर ब्याह करके क्यों लाये थे ? या तो इन्हें प्यार करो या मुझे ही। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। ये दोनों मेरी आँखों के कांटे हैं, जो मुझे हमेशा सताते रहते हैं।"

राजा बोला, "धीरज रक्खो, रानी। अगर ये तुम्हारे चुभते हैं तो मैं दूसरे महल में इनका प्रबन्ध करा दूंगा।"

रानी क्रोध से बोली, "दूसरे महल में रहकर भी क्या ये मुझे छोड़ देंगे ? मैं अपनी आस्तीन में सांप नहीं पालना चाहती। अगर मुझे प्यार करते हो तो इन दोनों का कलेजा निकलवाकर मेरे सामने रखवा दो। तभी मुझे शान्ति मिलेगी।"

राजा की आँखों में आँसू छलछला आए और वह क्रोध और दुख से कांपने लगा। बोला, "रानी, तुम अच्छी तरह सोच-विचारकर कहो। ऐसा करके तुम मेरे हृदय को टुकड़े-टुकड़े करना चाहती हो ?"

रानी बोली, "इसमें सोचने की क्या बात है ? जबतक मेरी इच्छा पूरी नहीं होगी, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी।"

राजा ने रानी को बहुत समझाया, पर वह किसी तरह न पसीजी। तब राजा ने जल्लादों को बुलाया और दोनों राजकुमारों को उनके सुपुर्द करके हुक्म दिया कि जल्दी-से-जल्दी इनका कलेजा निकाल कर रानी के सामने हाजिर करो।

जल्लाद संत-वसंत को जंगल में ले गए। फूल से सुकुमार राजकुमारों पर किसी प्रकार उनके हाथ नहीं उठे। वे दोनों को वहीं छोड़कर चल दिये और सियार और कुत्ते का कलेजा ले जाकर उन्होंने रानी के सामने रख दिया। रानी का कलेजा ठण्डा हो गया और वे लोग खूब आमोद-प्रमोद में मग्न रहने लगे।

इधर संत-वसंत जंगल में भटकते फिरे। एक दिन अचानक वसंत कुएं में गिर पड़ा। संत बेचारा क्या करता! रोते-रोते वह वहां से चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद उस कुएं पर एक कुम्हारिन पानी भरने आई। जैसे ही उसने कुएं में डोल फांसा कि वसंत ने रस्सी पकड़ ली। कुम्हारिन ने कुएं में झांका तो वह डर गई। वसंत बोला, "डरो मत, मैं राजकुमार हूँ। मुझे बाहर निकाल लो।"

कुम्हारिन ने वसंत को बाहर निकाल लिया। उसके अपना कोई बच्चा नहीं था, इसलिए उसे पाकर वह बहुत खुश हुई। एक दिन एक राजा शिकार खेलता हुआ उसी गांव में आ निकला। वसंत पर उसकी निगाह गई तो वह हैरान रह गया कि कुम्हार के घर में ऐसा सुन्दर बच्चा कहां से आया? राजा ने कुम्हार से उस बच्चे को मांगा, पर वह किसी तरह तैयार नहीं हुआ। अन्त में कुम्हारिन ने कुम्हार से कहा, "हमारे भाग्य में मेहनत-मजूरी बदी है, सो करते हैं, इस राजकुमार को जब राजा मुंह करके मांग रहे हैं तो दे क्यों न दें? यह तो राजा के घर में ही शोभा देगा।" दोनों ने विचार किया और आखिर कुम्हारिन ने वसंत को राजा के हवाले कर दिया। राजा घोड़े पर बिठाकर उसे महल में ले गया।

आने लगीं, पर राजा चिड़िया वाली बात सोचकर हमेशा मना कर देता। होनहार की बात कि एक बार सबके जोर देने पर वह शादी करने को तैयार हो गया। दूसरी रानी के आने से घर की उजड़ी खुशी फिर लौट आई। संत-वसंत भी मां को पाकर प्रसन्न हुए। राजा को परम संतोष हुआ।

एक दिन बच्चे बाहर गेंद खेल रहे थे। रानी आंगन में स्नान कर रही थी। अकस्मात् गेंद उछलकर आंगन में आ गिरी। रानी 'हाय-हाय' चिल्लाने लगी। बच्चे दौड़े-दौड़े आए, पर रानी को रोते देखकर वे सहमे रह गए। रानी कोपभवन में जा लेटी। राजा के आने पर भी वह औंधे मुँह पड़ी रही। राजा ने पूछा, "क्या बात है?"

रानी तुनककर बोली, "तुम्हारे इन लाड़ले संत-वसंत ने मेरे पेट में गेंद मारी है। दर्द के मारे प्राण निकले जा रहे हैं। अगर तुम्हें मेरी परवाह नहीं है तो फिर व्याह करके क्यों लाये थे? या तो इन्हें प्यार करो या मुझे ही। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। ये दोनों मेरी आँखों के कांटे हैं, जो मुझे हमेशा सताते रहते हैं।"

राजा बोला, "धीरज रक्खो, रानी। अगर ये तुम्हारे चुभते हैं तो मैं दूसरे महल में इनका प्रबन्ध करा दूंगा।"

रानी क्रोध से बोली, "दूसरे महल में रहकर भी क्या ये मुझे छोड़ देंगे? मैं अपनी आस्तीन में सांप नहीं पालना चाहती। अगर मुझे प्यार करते हो तो इन दोनों का कलेजा निकलवाकर मेरे सामने रखवा दो। तभी मुझे शान्ति मिलेगी।"

राजा की आँखों में आँसू छलछला आए और वह क्रोध और दुख से कांपने लगा। बोला, "रानी, तुम अच्छी तरह सोच-विचारकर कहो। ऐसा करके तुम मेरे हृदय को टुकड़े-टुकड़े करना चाहती हो?"

रानी बोली, "इसमें सोचने की क्या बात है? जबतक मेरी इच्छा पूरी नहीं होगी, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी।"

राजा ने रानी को बहुत समझाया, पर वह किसी तरह न पसीजी। तब राजा ने जल्लादों को बुलाया और दोनों राजकुमारों को उनके सुपुर्द करके हुक्म दिया कि जल्दी-से-जल्दी इनका कलेजा निकाल कर रानी के सामने हाजिर करो।

जल्लाद संत-वसंत को जंगल में ले गए। फूल से सुकुमार राजकुमारों पर किसी प्रकार उनके हाथ नहीं उठे। वे दोनों को वहीं छोड़कर चल दिये और सियार और कुत्ते का कलेजा ले जाकर उन्होंने रानी के सामने रख दिया। रानी का कलेजा ठण्डा हो गया और वे लोग खूब आमोद-प्रमोद में मग्न रहने लगे।

इधर संत-वसंत जंगल में भटकते फिरे। एक दिन अचानक वसंत कुएं में गिर पड़ा। संत बेचारा क्या करता! रोते-रोते वह वहां से चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद उस कुएं पर एक कुम्हारिन पानी भरने आई। जैसे ही उसने कुएं में डोल फांसा कि वसंत ने रस्सी पकड़ ली। कुम्हारिन ने कुएं में झांका तो वह डर गई। वसंत बोला, "डरो मत, मैं राजकुमार हूँ। मुझे बाहर निकाल लो।"

कुम्हारिन ने वसंत को बाहर निकाल लिया। उसके अपना कोई बच्चा नहीं था, इसलिए उसे पाकर वह बहुत खुश हुई। एक दिन एक राजा शिकार खेलता हुआ उसी गांव में आ निकला। वसंत पर उसकी निगाह गई तो वह हैरान रह गया कि कुम्हार के घर में ऐसा सुन्दर बच्चा कहां से आया? राजा ने कुम्हार से उस बच्चे को मांगा, पर वह किसी तरह तैयार नहीं हुआ। अन्त में कुम्हारिन ने कुम्हार से कहा, "हमारे भाग्य में मेहनत-मजूरी बदी है, सो करते हैं, इस राजकुमार को जब राजा मुंह करके मांग रहे हैं तो दे क्यों न दें? यह तो राजा के घर में ही शोभा देगा।" दोनों ने विचार किया और आखिर कुम्हारिन ने वसंत को राजा के हवाले कर दिया। राजा घोड़े पर बिठाकर उसे महल में ले गया।

कुम्हार और कुम्हारिन को राजा ने अपने नगर में बुला लिया। उन्हें रहने को अच्छा-सा घर दिया और जिन्दगी भर के लिए पालना बांध दिया।

वसंत को राजा ने पढ़ाया-लिखाया, तीर चलाना सिखाया और बड़े हो जाने पर एक सुन्दर राजकुमारी से उसका व्याह कर दिया। अपना आधा राज्य भी उसे दे दिया।

एक दिन वसंत अपनी चित्रसारी पर लेटा हुआ था कि उसने एक भिखारी की दर्द-भरी आवाज सुनी—

"राजा चितरंजन के बेटा रे प्यारे !

संत- वसंत दोउ भाई रे !"

इतना सुनना था कि वह अपनी रानी के रोकते-रोकते दरवाजे पर जा पहुँचा और उस भिखारी को हृदय से लगा लिया। रानी भौंचक्की-सी खड़ी रही। यह भिखारी उसका बड़ा भाई संत था, जो ठोकरें खाते-खाते इस नगर में भीख मांगने आ पहुँचा था। वसंत को अपने भाई की दुर्दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ। महल में ले जाकर उसने चन्दन से उसका उबटन करवाया और सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहनवाए।

कुछ दिन वहां रहकर संत-वसंत अपनी राजधानी को चल दिये। वसंत के ससुर ने अपनी बेटी को खूब धन-दौलत और माल-मता देकर विदा किया।

संत-वसंत अपनी राजधानी में लौटे। वहां आकर देखते क्या हैं कि राजा अन्धे हो गए हैं और रानी राग-रंग में मस्त है। वसंत को बड़ा क्रोध आया और उसने गड्ढा खुदवाकर रानी को जीवित गड़वा दिया। फिर वे सब आनन्द से रहने लगे।

: १२ :

अनारज़ादी

एक राजा था। उसके चार बेटे थे। तीन ब्याहे हुए थे। सबसे छोटा अभी कुंआरा था। इसी बीच एक दिन राजा मर गया। बड़ा राजकुमार गद्दी पर बैठा। वह छोटे भाइयों को अपने प्राणों से भी ज्यादा प्यार करता था, परन्तु उसकी स्त्री बड़े चिड़चिड़े स्वभाव की थी। और राजकुमारों से तो उसका ज्यादा काम नहीं पड़ता था, पर सबसे छोटा तो बड़े भाई के ही ऊपर था। उसे वह रोज ही ताने दिया करती थी। किसी काम के लिए कहता तो कह देती, "ले आओ न अपनी अनारजादी को, जो तुम्हारे हुक्म पर नाचा करे।" छोटा राजकुमार उसके दुर्व्यवहार से तंग आ गया था। एक दिन वह चुपचाप घर से प्रतिज्ञा करके चल दिया कि इस घर में लौटूंगा तो अनारजादी के साथ, नहीं तो किसीको मुंह नहीं दिखाऊंगा।

चलते-चलते वह एक जंगल में पहुँचा। वहां एक साधु धूनी रमाये तपस्या कर रहा था। साधु को देखकर उसे कुछ तसल्ली हुई और उसने साधु को प्रणाम किया।

साधु ने पूछा, "बच्चा, यहां जंगल में भटकने क्यों आया है!"

राजकुमार ने उदास होकर कहा, "बाबा, मैं अनारजादी की खोज में निकला हूं।"

साधु ने कहा, "इसमें चिन्ता करने की क्या बात है, बेटा। मैं तो तेरे लिए आसमान के तारे भी तोड़कर ला सकता हूं। तू यहां बेफिक्र होकर रह। मैं तेरी सहायता करूंगा।"

राजकुमार को बड़ा ढाढस बंधा। उसने मन-ही-मन सोचा

कि हो-न-हो, यह कोई पहुँचा हुआ साधु है। वह उसके पैरों पर गिरकर बोला, "बाबा, मैं अब तुम्हारी ही शरण में हूं, चाहे मारो, चाहे तारो।"

साधु ने कहा, "बेटा, तुम हारे-थके हो। थोड़ी देर आराम करो। मैं बाजार जाकर तुम्हारे खाने-पीने का डौल करता हूं।"

साधु के जाने के बाद राजकुमार ने देखा कि जमीन पर चाबियों का एक गुच्छा पड़ा हुआ है। उसने वह उठा लिया। उसमें सात चाबियां थीं। राजकुमार एक-के-बाद एक कोठरी खोलता चला गया। किसीमें नाज था, किसीमें चावल थे, किसीमें गुड़ था। एक कोठरी खोली तो उसमें सोने की ईंटें निकलीं, दूसरी में चांदी की। फिर और खोली तो उसमें सुन्दर, सुन्दर रेशमी कपड़े निकले। अन्त में जब सातवीं खोली तो राजकुमार एकदम मूर्च्छित होकर गिरने को हुआ, पर उसने अपने को संभाल लिया। उस कोठरी में सैंकड़ों ठठरियां बन्द थीं। वे राजकुमार को देखते ही खिलखिलाकर हँस पड़ीं। राजकुमार हिम्मत करके बोला, "ठठरी-ठठरी, तुम मुझपर क्यों हँस रही हो?"

वे बोलीं, "हम भी तुम्हारी तरह कभी राजकुमार थे और अनारजादी की तलाश में घर से निकले थे। अनारजादी की तो छाया भी नहीं मिली, ऊपर से जो दुर्गति हुई, सो तुम देख ही रहे हो। यही सोचकर हमें हँसी आ गई कि कुछ देर में तुम्हारी भी यही हालत होनेवाली है।"

राजकुमार घबराकर बोला, "अब मैं क्या करूं? बचने का कोई उपाय हो तो बताओ।"

एक ठठरी बोली, "यह साधु बड़ा पापी है। पहले इसके पास जो कोई आता है, उसकी खूब खातिर करता है, फिर उसे भरमा कर उसकी जान ले लेता है।"

राजकुमार ने पूछा, "कैसे?"

ठठरी ने कहा, "दूसरी ओर आंगन में एक भट्टी जल रही

है। उसपर एक तेल से भरा हुआ कढ़ाव रक्खा है। तुम्हें खिलाने पिलाने के बाद साधु तुम्हें यह देखने भेजेगा कि कढ़ाव का तेल खौल गया या नहीं। जैसे ही तुम कढ़ाव के पास पहुँचोगे कि वह तुम्हें जलते हुए तेल में पटक देगा। अब इससे आगे बताने की जरूरत नहीं है। सब तुम्हारी आँखों के आगे है। बचना चाहते हो तो एक काम करना। जब साधु तुमसे कढ़ाव देखने को कहे तो तुम कह देना कि मैं तो राजकुमार हूं। मैंने ऐसा काम नहीं किया और न मैं यह जानता ही हूं कि तेल कैसे खौलता है। तुम आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चला चलूंगा। कढ़ाव के पास पहुँचते ही तुम साधु को उसमें ढकेल देना।"

राजकुमार के जी में धुकर-पुकर होने लगी। वह जल्दी-जल्दी सब नाले बन्द करके अपनी जगह आ लेटा। इतने में साधु आया और उसने राजकुमार को खूब प्यार से भोजन कराया। इसके बाद उसने कहा, "बच्चा, देखना तो, बाहर तेल गर्म हो रहा है। वह खौला या नहीं?"

राजकुमार ने तत्काल उत्तर दिया, "बाबा, राजमहलों में रहनेवाला राजकुमार मैं क्या जानूं कि तेल कैसे खौलता है? पहले आप चलो, आपके पीछे-पीछे मैं चलता हूं।"

साधु राजकुमार को औरों की तरह ही भोला-भाला समझ रहा था। वह हँसता हुआ आगे-आगे चलने लगा। जैसे-ही वह कढ़ाव के पास पहुँचा, राजकुमार ने उसे उठाकर खौलते तेल में पटक दिया। साधु चिल्लाने लगा, "हाय मरा, हाय जला।"

राजकुमार उसे छटपटाते देखकर बोला, "अरे दुष्ट, आज तुझे अपने किये का फल मिला है। अब तुझे कौन बचायेगा।"

इसके बाद राजकुमार ने चैन की सांस ली और आगे चल दिया। कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि एक और साधु समाधि लगाये बैठा है। पहले का डरा हुआ था, इसलिए

उसको देखकर भी उसने सोचा कि होगा यह भी कोई रंगा सियार। जब उसके पास आया तो उसके तेज से राजकुमार की आँखें चकाचौंध हो गई। उसने साधु को प्रणाम किया। साधु प्रसन्न होकर बोले, "बच्चा यहां कैसे आया ?"

राजकुमार ने कहा, "बाबा, मैं अनारजादी से व्याह करने निकला हूं।"

साधु ने आश्चर्य से कहा, "बच्चा, तू यहांतक जिन्दा कैसे आ गया ? रास्ते में एक राक्षस साधु के वेश में रहता है। उससे तूने किस प्रकार जान बचाई ?"

राजकुमार ने सारी बात कह सुनाई। उस साधु के मरने की बात सुनकर यह साधु बड़े खुश हुए, बोले, "बच्चा, तेरी हिम्मत की तारीफ करता हूं। ले सुन, अब मैं तुझे अनारजादी को पाने का उपाय बतलाता हूं।"

साधु ने कहा, "यहां से थोड़ी दूर पर एक तालाब है। उसके किनारे एक अनार का पेड़ है। आधी रात गये रोज एक परी उस तालाब में नहाने आती है। जैसे ही वह नहाने जाय, तू अनार के पेड़ से एक फूल तोड़कर अपनी जेब में रख लेना। परी चाहे तुझे कितना ही पुकारे, पर तू न तो उत्तर देना और न पीछे मुड़कर देखना। आगे की बात कल जब तू लौटकर आवेगा तब बताऊंगा।"

आधी रात को राजकुमार उसी तालाब पर पहुँचा और जैसे साधु ने बताया था, उसने अनार का फूल तोड़कर अपनी जेब में रख लिया। इतने में परी ने बड़े प्यार से पुकारा, "ओ राजकुमार, क्या मुझे अपने साथ नहीं ले जाओगे ?"

राजकुमार साधु की बात भूल गया और पीछे मुड़कर परी की ओर देखने लगा। परी को देखते ही वह अनार के पेड़ के नीचे गिर पड़ा और मर गया।

इधर साधु तीन-चार दिन तक उसकी राह देखते रहे, पर राजकुमार न लौटा तो उन्होंने सोचा कि जरूर वह किसी

मुसीवत में फंस गया। उसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह उसी तालाव के किनारे आये। देखते क्या हैं कि राजकुमार की वेजान देह पड़ी हुई है। राजकुमार की लापरवाही पर उन्हें वड़ा क्रोध आया, पर उन्होंने मंत्र के वल से उसे जिला दिया। उन्होंने राजकुमार से कहा, "वेटा, मैं तो चलता हूं, तू रात को यहीं रह। पर अव की वार सावधान रहना और मेरी वात याद रखना।"

राजकुमार ने कहा, "वावा, आगे की वात भी मुझे अभी ही वताते जाइये।"

साधु ने कहा, "अनार का फूल तोड़कर अपनी जेव में रख लेना और अपने नगर की तरफ चल देना। चलते-चलते रास्ते में तुझे प्यास लगेगी। पानी तो पी लेना, पर याद रखना कि थककर सो मत जाना, नहीं तो अनर्थ हो जायगा।"

साधु तो चले गये, राजकुमार वहीं रह गया। रात को उसने फूल तोड़ा और जेव में रख लिया। परी वहुतेरी चिल्लाई, परन्तु राजकुमार ने तनिक भी ध्यान न दिया। रास्ते में उसे प्यास लगी और कुएं से पानी खींचकर उसने पिया। थकान के मारे वुरा हाल था। इसलिए उसने सोचा कि थोड़ी देर पेड़ की छांह में वैठकर आराम कर लूं। ठण्डी-ठण्डी हवा लगते ही उसे नींद ने आ घेरा और थोड़ी देर में ही वह खुर्राटे भरने लगा। अचानक उसकी जेव का फूल एक रूपवती स्त्री के रूप में वदल गया। यही सुन्दरी थी राजकुमार की चहेती अनारजादी। वह राजकुमार के पास ही लेट गई। पर उसे नींद नहीं आई तो थोड़ी दूर घूमने निकल गई। उसने देखा कि कुएं के पास एक स्त्री प्यास से तड़प रही है। वह अनार-जादी से वोली, "वहन, तू कितनी सुन्दर है। तेरा राम भला करे, मुझे थोड़ा पानी पिला दे।"

अनारजादी ने कहा, "कुंआ सामने है, लोटा-डोर भी वहीं है, अपने आप खींचकर क्यों नहीं पी लेतीं ?"

वह वोली, "खींचने लायक होती तो तुमसे क्यों कहती।

मैं जाति की चमार हूं और चमार बड़े आदमियों के कुंए पर चढ़ कैसे सकते हैं ?"

अनारजादी को दया आ गई। उसने कुएं में लोटा फाँस दिया। इतने ही में उस चमरिया ने अनारजादी के गहने कपड़े छीन लिये और उसे कुंए में धकेल दिया। इसके बाद खुद आकर राजकुमार के पास लेट गई। राजकुमार की आँख खुली तो उसने पूछा, "तू कौन ?"

वह बोली, "मैं अनारजादी"

राजकुमार ने अपनी जेब में हाथ डाला तो फूल गायब था। उसे विश्वास हो गया कि फूल से यह अनारजादी बन गई है। यह देखकर वह बड़ा निराश हुआ कि जिस अनारजादी के रूप की उसने इतनी प्रशंसा सुनी थी वह तो साधारण स्त्री से भी गई-बीती है। खैर, उसने संतोष कर लिया कि उसकी नींद ने ही अनारजादी का रूप बिगाड़ दिया होगा।

उस चमरिया को अनारजादी समझकर जब वह महलों में लाया तो सब उसका मजाक बनाने लगे।

उधर अनारजादी कुएं में गिरते ही गुलाब का फूल बन गई थी। एक दिन राजकुमार अपने बड़े भाइयों के साथ वहां आया। पहले सबसे बड़े भाई ने कुएं में सुन्दर गुलाब का फूल तैरते देखा। उसने लोटा फाँस दिया। जितनी ही वह फूल को लोटे में लाने की कोशिश करता था, फूल उससे उतना ही दूर हट जाता था। बारी-बारी से सबने फूल निकालने की कोशिश की, पर सब बेकार। अन्त में छोटे राजकुमार ने लोटा फाँसा और आश्चर्य की बात कि उसके लोटे में एक बार में ही वह फूल आ गया। राजकुमार ने वह फूल अपनी टोपी में रख लिया और घर ले आया। फूल को देखते ही चमरिया सब समझ गई। वह मक्कड़ बनाकर पड़ी रही कि पेट में दर्द है। हकीम-वैद्य बुलाये गये, पर किसीकी दवा से उसे आराम नहीं हुआ। तब उसने कहा, "पहले भी मेरे पेट में इसी तरह

का दर्द होना था और कुएं में पैदा हुए गुलाब के फूल के अर्क से ठीक हो जाता था।"

राजकुमार के मन में कोई छल-कपट नहीं था। उसने कहा, "लो, यह फूल तो मेरे पास है। तुम्हारी तकलीफ से बढ़कर थोड़े ही है यह फूल।"

चमरिया बोली, "नहीं महाराज, रहने दो। इस फूल को तुम बड़े शौक से लाये हो।"

राजकुमार नहीं माना और वह फूल उसने चमरिया को दे दिया। चमरिया की मुराद पूरी हो गई। उसने उस फूल को पैरों से कुचलकर महल के पीछे फेंक दिया। जहां फूल गिरा वहां अनार का पेड़ उग आया। उसपर बड़े-बड़े अनार लगे। राजकुमार को इसका कुछ पता नहीं था। चमरिया तो पहले से ही सतर्क थी। जब उसने फलों से लदे हुए इस अनार के पेड़ को देखा तो जलन के मारे बेहाल हो गई। उसने हुक्म दिया कि इस पेड़ को जड़ से उखाड़ दिया जाय। हुक्म की देर थी कि पेड़ पर खटाखट कुल्हाड़ों की चोट पड़ने लगी। खटपट सुनकर राजकुमार भी वहां पहुँच गया। पेड़ में से आवाज आई, "धीरे-धीरे काटियो, अगल-बगल काटियो बीच में न काटियो।"

राजकुमार ने यह सुनकर हुक्म दिया कि आहिस्ता-आहिस्ता काटना शुरू करो। जब पेड़ कटकर गिरा तो उसके तने से एक सुन्दर अनार का फूल निकला। चमरिया को कानों-कान पता न चला और राजकुमार ने वह फूल गेहूँ की कुठिया में छिपा दिया। दूसरे दिन जब उसने कुठिया में झांका तो वहां एक बड़ी सुन्दर राजकुमारी को देखा। राजकुमार ने उसे बाहर खींच लिया और उसके साथ विवाह कर लिया। चमरिया उससे बहुत जलती थी और उसे मरवाने के उपाय सोचती रहती थी। घुड़साल का एक घोड़ा वह रोज मरवा डालती और उसका खून सोती हुई अनारज़ादी के मुँह पर लगा देती। धीरे-धीरे घुड़साल में दो-चार घोड़े रह गये। राजकुमार को

बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने घर में जिक्र किया। अनारजादी तो चुप रही, पर चमरिया राजकुमार को एकान्त में ले गई और उसने कहा, "महाराज, आप बड़े भ्रम में हैं। जिस छोटी रानी को आप इतना चाहते हैं वह तो डायन है। अगर मेरी बात न मानो तो कल मैं इसे साबित करके दिखा दूंगी। मैंने तो बहुत बार अपनी आंखों से देखा है, पर डर के मारे आपसे कुछ नहीं कहा।"

राजकुमार परेशान होकर चला गया। दूसरे दिन रात को चमरिया ने एक घोड़ा मरवाया और खून में लथपथ उसका कलेजा अनारजादी के मुंह के पास रख दिया। उसका सारा मुंह खून में सन गया। फिर वह राजकुमार को बुला लाई। राजकुमार ने उसका वह घिनौना रूप देखा तो सन्न रह गया। अपनी आँखों पर उसे विश्वास नहीं होता था पर विश्वास करना पड़ा। उसने जल्लादों को बुलाकर हुक्म दिया कि इस डायन को ले जाओ और टुकड़े-टुकड़े करके इसका मांस चील-कौवों को खिला दो।"

राजकुमार का हुक्म था। अनारजादी खूब रोई-चिल्लाई, राजकुमार के पैरों पड़ी, पर राजकुमार का दिल न पसीजा। जल्लाद उसे जंगल में ले गये और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

जल्लाद जब लौटकर आये तो चमरिया ने उन्हें खूब इनाम दिया।

जंगल में जहां अनारजादी का खून गिरा था वहां फिर अनार का पेड़ उग आया। उसी पेड़ के पास झोंपड़ी में एक गरीब ब्राह्मण का लड़का रहता था। वह अपनी झोंपड़ी की मरम्मत के लिए मिट्टी खोद रहा था कि अचानक पेड़ गिर पड़ा। उसमें से एक सुन्दर स्त्री प्रकट हुई और लड़के के कंधे पर हाथ रख कर बोली, "आज से तू मेरा भाई और मैं तेरी बहन। हम दोनों अब साथ-साथ रहेंगे।"

लड़का सकपका गया, बोला, "मैं तो दिन-रात मजूरी करके अपना पेट भी नहीं पाल सकता। तुम्हें कैसे रखूंगा?"

अनारजादी बोली "भैया, इसकी चिन्ता तू क्यों करता है! मैं बड़े सुन्दर रूमाल बुनना जानती हूं। मैं रूमाल बुना करूंगी और तू उन्हें राजा के यहां बेच आया करना। उससे हम दोनों का खूब अच्छी तरह गुजारा हो जायगा।"

उस दिन से अनारजादी रूमाल बुनती और लड़का उन्हें राजकुमार के हाथ बेच आता।

राजकुमार यह जानने के लिए बड़ा उत्सुक हो उठा कि ऐसे सुन्दर रूमाल यह लड़का कहां से लाता है। एक दिन जब वह आया तो राजकुमार ने पूछा, "तुम ये रूमाल कहां से लाते हो?"

लड़के ने उत्तर दिया, "राजासाहब, मेरी बहन बुनती है।"

जब वह लड़का गया तो राजकुमार उसके पीछे हो लिया। रास्ते भर सोचता आया कि जो इतने सुन्दर रूमाल तैयार करती है, वह खुद न जाने कितनी सुन्दर होगी। चलते-चलते वह लड़के की झोंपड़ी तक आ गया। वहां देखता क्या है कि अनारजादी रूमाल बुन रही है। वह उससे बोला, "मुझे एक रूमाल चाहिए।"

राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "तुमने कैसे जाना ?"

अनारजादी ने कहा, "उसे विना मारे अनारजादी को पाना असम्भव था।"

इसके बाद की कहानी भी अनारजादी ने विस्तार से सुना डाली। फिर बोली, "राजकुमार, तुम क्या आँख बन्द करके रहते थे, जो तुमने चमरिया पर विश्वास करके अनारजादी को मरवा डाला !"

राजकुमार के पैरों के बीच की जमीन सरक गई। वह अवाक् होकर अनारजादी को देखने लगा।

अनारजादी ने आँखों में आंसू भरकर कहा, "मैं ही वह अभागिन अनारजादी हूँ, जिसके लिए तुमने एक दिन जान की बाजी लगाई थी और उसे पाने के बाद उसके खून से अपने हाथ रंग लिये थे।"

राजकुमार अपने किये पर पश्चात्ताप करने लगा और अनारजादी के पैरों में गिरकर माफी माँगने लगा। बोला, "अनारजादी, मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हें अब कोई कष्ट नहीं दूंगा। जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा, वहां अपना खून वहा दूंगा। अब तुम मुझे क्षमा करो और मेरे साथ चलो।"

अनारजादी ने कहा, "राजन्, मुझे तुम्हारे पर पूरा भरोसा है। मैं जानती हूं कि तुम निर्दोष हो। पहले उस चमरिया को मरवाकर दरवाजे पर गड़वा दो तब मैं चलूंगी।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया। फिर अनारजादी का डोला सजाकर अपने महल में ले गया। नगर भर में खूब खुशियां मनाई गई।

: १२ :

शाप

बहुत दिनों की बात है। मधुवन में एक बहुत बड़ा महल था। उसमें एक बड़ा पराक्रमी राजा रहता था। एक बार उस राज्य में बड़े जोर का अकाल पड़ा। राजा ने अपना खजाना सबके लिए खोल दिया। कुछ दिनों तो लोग चैन से रहे, लेकिन जब सब नाज-पानी खत्म हो गया तो वे सब मधुवन छोड़कर भाग गये। राजा वहीं डटा रहा। एक दिन भूख से तड़पती हुई एक भिखारिन वहां आई। राजा ने तुरंत अपनी थाली का भोजन उसके सामने कर दिया। वह स्त्री भोजन पाकर संतुष्ट नहीं हुई, राजा के सिर पड़ गई कि वह उसीसे विवाह करेगी।

राजा अपनी मुसीबत का मारा था। उसने जब यह सुना तो बड़ा गुस्सा हुआ। बोला, "तुम तो उंगली पकड़ते पहुंचा पकड़ने लगीं। बड़ी चली हो शादी करने! निकल जाओ यहां से। शादी करने को तुम्हीं रह गई हो न अप्सरा!"

भिखारिन का दिल टूट गया। वह उसी समय एक सुन्दर स्त्री बन गई। उसने राजा को शाप दिया, "निर्दयी, तूने एक बेकस के दिल को ठेस पहुँचाई है, तू कभी सुख से नहीं रह सकेगा। आज तू जिसका तिरस्कार कर रहा है, कल उसीकी याद में तड़पेगा। मेरी तड़पती आत्मा की आवाज मुझसे कह रही है कि तू आदमी नहीं है, पशु है।"

यह कहकर वह सुन्दरी अंतर्धान हो गई। राजा उसी समय आदमी से शेर बन गया और व्याकुल होकर इधर-उधर दहाड़ने लगा। यह देखकर कैलाश पर्वत पर बैठे महादेवजी

हँसने लगे। पार्वती को उनका यह हँसना अच्छा न लगा, उन्होंने कहा, "स्वामी, यह आपने क्या किया ? ऐसी कठोर परीक्षा नहीं लेनी चाहिए। मैं हाथ जोड़कर विनय करती हूं कि आप इस वेचारे सिंह को शाप से छुड़ा दें।"

महादेव पार्वती की आदत जानते थे। पार्वती विना अपने मन की करवाये चैन नहीं लेने देती थीं, सो उन्होंने कहा, "अव तो जो होना था वह हो चुका। वारह वरस वाद जव उसी स्त्री के आँसू इस सिंह पर गिरेंगे तो यह पहले जैसा आदमी हो जायगा।"

उस स्त्री ने एक सौदागर के यहां जन्म लिया। सौदागर के दो लड़कियां और थीं, पर छोटी वेटी की सुन्दरता के सामने वे कहीं न टिकती थीं। सौदागर छोटी वेटी को सवसे ज्यादा प्यार करता था। इससे वड़ी वेटियां जलती थीं। छोटी लड़की अपनी वहनों से किसी तरह का द्वेष नहीं मानती थी। छोटी लड़की के पैदा होने के वाद सौदागर का व्यापार खूब चमका। वड़ी लड़कियां नित-नई मांगें करतीं, वे पूरी होतीं, फिर भी उन्हें संतोष न होता। छोटी लड़की कभी कोई मांग नहीं करती थी। हां, उसे फूलों से वड़ा प्यार था। वह दिन भर गुड़िया खेलती और वगीचे में जाकर माली के साथ खुरपी लेकर काम करती। फूलों के हार वनाकर गले में पहनती, मुकट वनाकर सिर पर लगाती और लटकन वनाकर कानों में पहनती। फूलों के कंगन और करधनी पहनकर वह हूवहू शकुन्तला लगती थी।

एक दिन सौदागर परदेस जा रहा था। उसने तीनों वेटियों को वुलाकर पूछा, "तुम्हारे लिए क्या-क्या लाऊं ?"

एक ने कहा, "हीरों से जड़ा हार।" दूसरी ने कहा, "गुलू-वंद।" पर छोटी लड़की ने कहा, "पिताजी, मेरे लिए मधुवन का गुलाव लेते आइये।"

सौदागर चला गया। दोनों लड़कियां रोज अपनी छोटी वहन की पसंद का मजाक वनातीं और उसे खूब तंग करतीं।

सौदागर ने हीरों का हार और गुलूबन्द खरीद लिया, पर अब रह गया छोटी लड़की का गुलाब का फूल। वह फूल की तलाश में मधुवन की ओर रवाना हो गया। तभी उसे खबर मिली के उसके जहाज समुद्र में डूब गये हैं। वह बड़ा दुखी हुआ, पर फूल लेने तो जाना ही था। चलते-चलते वह आगे पहुंचा। बड़े जोर की आंधी आई। भूख-प्यास के मारे उसका हाल-बेहाल था। ऐसी मुसीबत में उसका प्यारा घोड़ा भी बीच रास्ते में उसका साथ छोड़ कर परलोक सिधार गया। गिरते-पड़ते वह चला जा रहा था कि थोड़ी दूर पर उसे एक ऊँचा महल दिखाई दिया। रात हो रही थी। इसलिए उसने सोचा कि आज की रात उस महल में ही आराम किया जाय। उसके पांव तेजी से बढ़ने लगे। महल तक पहुँचा तो भगवान की दया से फाटक खुला मिला और वह अन्दर घुसा चला गया। अंदर जाकर देखता क्या है कि उस महल में मनुष्य तो दूर, कोई पक्षी भी दिखाई नहीं देता। उसने एक के बाद एक करके कई कमरे देख डाले। अन्त में वह खाने के कमरे में पहुँचा। वहां रत्नों से जड़ी चौकी बिछी हुई थीं। सोने-चांदी के बर्तनों में भोजन सजा हुआ रक्खा था। पहले तो सौदागर झिझका, पर उसे भूख इतने जोर की लगी थी कि ज्यादा देर इन्तजार न कर सका। छक-कर खाया, जहाज बरबाद होने की बात भी उसके दिमाग से उतर गई। इसके बाद सोने के कमरे में पलंग पर जा सोया। सवेरे उठा तो अपनी पोशाक को देखकर हैरान रह गया। ऐसे बहुमूल्य कपड़े कभी आंखों से भी न देखे थे। दरवाजे पर पहुँचा तो एक सजा-सजाया सुन्दर घोड़ा उसके लिए तैयार खड़ा था। सौदागर घोड़े पर सवार हो गया और चलने ही वाला था कि उसे गुलाब के फूल दिखाई पड़ गये। वह समझ गया कि हो-न-हो, बेटी ने यही फूल मंगवाये होंगे। उसने गुलाब का फूल तोड़ लिया। तोड़ने की देर थी कि वहां एक सिंह दहाड़ता हुआ पहुँचा। सौदागर के होश उड़ गये और फूल उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ा। सिंह गोद में भरकर बोला "यह फूल तुमने किसके हुक्म से तोड़ा है?"

सौदागर गिड़गिड़ाकर बोला, "जंगल के राजा, मेरी सब-से छोटी बेटी फूलों को बहुत प्यार करती है। उसीकी इच्छा पूरी करने के लिए मैंने आपको कष्ट पहुँचाया है।"

सिंह हँसा और मुँह बनाकर बोला, "तो इन फूलों से प्यार करनेवाली तुम्हारे कोई लड़की भी है? जाओ, उस लड़की को अभी यहां लेकर आओ। अगर आठ दिन के अन्दर-अन्दर वापस नहीं लौटे तो याद रखना मैं तुम्हारे घर का एक भी आदमी जिन्दा न छोड़ूंगा।"

बेचारा सौदागर क्या करता। उसने लौटने का वचन दिया और जान छुड़ाकर वहां से भाग निकला।

छोटी लड़की उसे जान से भी ज्यादा प्यारी थी। रास्ते भर वह सोचता रहा अब क्या करे। सोचते-सोचते उसे सूझा कि किसी और लड़की को सिंह के हवाले कर दे, पर कहीं सिंह जान गया तो किसीकी जान की भी खैर नहीं होगी।

जब सौदागर घर लौटा तो उसने तीनों लड़कियों को अपने सामने बुलाया और उनकी मंगवाई हुई चीजें उनको दीं। छोटी लड़की को फूल देते हुए उसने कहा, "रानी बेटी, तेरे फूल की खातिर मुझे बड़ी खाक छाननी पड़ी।"

लड़की ने कहा, "पिताजी, कहां-कहां भटकना पड़ा?"

सौदागर ने सारा किस्सा कह सुनाया।

दोनों लड़कियों ने छोटी बहन की ओर गुस्से से देखा और बोलीं, "तेरे ही मारे पिताजी आफत में फँसे। अगर उन्हें कुछ हो जाता तो हम क्या कर लेतीं? अब तू ही जाना उस शेर के मुंह में। हम पिताजी को कभी नहीं जाने देंगी तेरे साथ।"

सचमुच इस सब संकट का कारण छोटी लड़की ही थी। बहनों की बातें सुनकर उसकी आँखों में आंसू भर आये। सौदागर ने उसे गोद में लेकर खूब प्यार किया और बोला, "बेटी, रोती क्यों है? भगवान का नाम लेकर दोनों चलेंगे। बकने दे इन्हें।"

दिन जाते देर नहीं लगती। सौदागर को पता भी नहीं लगा

कि कब आठ दिन निकल गए, पर छोटी लड़की एक-एक दिन गिन-गिन कर काट रही थी। आठवें दिन सवेरे झुटपुटे ही वह चुप-चाप घुड़साल में उसी घोड़े के पास पहुँची। बोली, "भैया, अब तू ही मेरे दुःख-सुख का साथी है। जल्दी से मुझे अपने मालिक के पास ले चल।"

घोडे ने उसकी बात मान ली। लड़की उसपर सवार हो गई। वह मधुवन की ओर सरपट दौड़ने लगी।

महल के फाटक पर पहुँचकर लड़की घोडे से उतरी और अन्दर चली गई। वहां उसने देखा कि कोई नहीं था। अपने पिता की ही तरह उसके नहाने-धोने और खाने पीने का इन्तजाम हो गया। रात को जब वह सो रही थी, शेर उसके सिरहाने आ बैठा और अपना सिर उसके सिर से सटा दिया। लड़की की आँखें खुलीं। शेर देखकर वह बिलकुल नहीं डरी। बैठकर प्यार से उसके शरीर पर हाथ फेरने लगी। शेर की आंखें प्यार से भर आईं। तब से वे दोनों साथ रहते, साथ खाते और साथ-साथ सैर को निकलते। इस तरह रहते-रहते लड़की को बहुत दिन हो गये। एक दिन रात को वह गहरी नींद में सो रही थी कि यकायक चौंककर जग पड़ी। सिंह ने पूछा, "क्या बात है ?"

लड़की ने कहा, "मैंने बड़ा भयंकर सपना देखा है। मेरे पिताजी बहुत बीमार हैं और मेरी दोनों बहनें उनकी देखभाल नहीं कर रही हैं। पिताजी की सेवा करनेवाला कोई नहीं है। आप कहें तो कुछ दिन के लिए घर चली जाऊं।"

सिंह ने कहा, 'चली तो जरूर जाओ, पर मुझे डर है कि फिर तुम कहीं वहीं न रह जाओ और मुझे भूल जाओ।"

लड़की बोली, "ऐसा कैसे हो सकता है। मैं अब तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं रह सकूंगी। विश्वास रक्खो, मैं आठ दिन में लौट आऊंगी।"

सिंह का मन द्विविधा में पड़ गया। कभी सोचता, लौट आयगी। कभी सोचता कि चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर मुझे

धोखा देकर भाग रही है। अंत में उसने निश्चय किया कि कुछ भी हो, मैं उसे नहीं रोकूंगा और उसने इजाजत दे दी।

लड़की घोड़े पर सवार होकर अपने घर की ओर चल दी। घर पहुंची तो देखा कि सपना सच था। लड़की को देखकर पिता को बड़ी खुशी हुई। लड़की ने खूब सेवा की। उससे वह चार ही दिन में चंगा हो गया। आज और कल करते-करते लड़की को आठ दिन हुए, दस दिन हुए, फिर पन्द्रह और इस तरह महीना बीत गया।

इधर सिंह ने इन्तजार करते-करते समझ लिया कि लड़की अब नहीं लौटेगी। वह बिना भोजन और पानी के जंगलों में इधर-उधर भटकने लगा।

सौदागर की बेटी यों रुकने को तो रुक गई, लेकिन उसका जी अपने वादे की याद करके छटपटाने लगा। आखिर महीने भर बाद उसने अपने पिता से विदा ली और चल दी।

महल में लौटी तो चारों ओर ढूंढा, पर शेर का कहीं पता न चला। इधर-उधर घूमते-घूमते वह नदी के किनारे आई। वहां देखती क्या है कि वही शेर बेहोश पड़ा है, आखिरी सांसें ले रहा है। वह दौड़कर उसके पास पहुंची और उससे लिपटकर रोने लगी।

जैसे ही उसके आँसू शेर के शरीर पर गिरे कि वह सुन्दर राजकुमार बन गया। लड़की को देखकर बड़ा खुश हुआ। सौदागर की लड़की ने उसे सब भेद बता दिया कि कैसे वह उसके पास शादी करने आई थी और कैसे उसे शाप देकर चली गई थी, कैसे उसने सौदागर के घर जन्म लिया, आदि-आदि।

राजा ने सब बातें ध्यान से सुनीं और बाद में खुशी-खुशी उसके साथ ब्याह कर लिया। राजा के अच्छे दिन फिर लौट आये। अकाल के कारण जो लोग भाग गए थे वे सब वापस आ गये और फिर नगर में पहले जैसी चहल-पहल हो उठी।

पुण्य की जड़ हरी

बहुत दिनों की बात है। वीर विक्रमादित्य नाम के एक चक्रवर्ती राजा थे। चारों ओर उनकी धाक थी। क्या राजा क्या भिखारी, उनके दरबार में सब एक समान थे। वह प्रजा की भलाई का सदा ध्यान रखते थे। भेस बदलकर सारे राज्य में चक्कर लगाते और लोगों का दुःख-सुख अपनी आँखों देखते। ऐसे न्यायी और दयावान राजा के राज्य पर इन्द्र भी ईर्ष्या करने लगे। वह भगवान् के पास गये और बोले, "भगवन, विक्रमादित्य पाखण्डी है। उसने लोगों को भ्रम में डाल रखा है कि वह प्रजा का बड़ा भला चाहनेवाला है।"

भगवान् ने कहा, "इन्द्रदेव, तुम भूल कर रहे हो। विक्रमादित्य जैसा भला दूसरा राजा इस दुनिया में नहीं है।"

इन्द्र ने कहा, "तो भगवन्, उसकी परीक्षा ली जाय।"

भगवान् इस बात पर राजी हो गये। वह मूर्ति बनानेवाले का भेस बनाकर विक्रमादित्य के दरबार में पहुँचे। उन्होंने अपनी बनाई हुई शिव-पार्वती, शेषशायी विष्णु और कृष्ण की सुन्दर-सुन्दर मूर्तियां उन्हें दिखाई। विक्रमादित्य उन मूर्तियों पर रीझ गया। उसने आजतक ऐसी मूर्तियां नहीं देखी थीं। उसने मूर्ति बनानेवाले से वे सब मूर्तियां मुंह मांगे दाम पर खरीद लीं। आखिर में एक लोहे की चमकती हुई मूर्ति राजा को दिखाते हुए वह बोला, "महाराज, अब इस मूर्ति को लेकर मैं कहां-कहां फिरूंगा. इसे भी खरीद लें तो बड़ी दया हो।"

राजा ने वह मूर्ति भी खरीद ली। वह लोहे की मूर्ति थी शनीचर देवता की। उनके घर में आते ही राजमहल की सारी

शान-शौकत मिट्टी में मिल गई। सनीचर के प्रकोप से विष्णु और शिव-पार्वती आदि की मूर्तियां खण्ड-खण्ड हो गई, चारों ओर धूल उड़ने लगी, बाग-बगीचे उजड़ गये, फसल बरबाद हो गई, कुएं, बावड़ी, तालाब सब सूख गये, सैना विद्रोही होकर पड़ोसी राजा से जा मिली। जिस राज्य में एक दिन सोना बरसता था, वहाँ अब धूल भी नहीं ठहर रही थी।

रानी ने घबराकर राजा से कहा, "स्वामी, अब इस राज्य में कैसे रहा जा सकता है? न हो तो मेरे पिता के घर चले चलिए। कम-से-कम वहां खाने के लाले तो न होंगे।"

राजा ने फीकी हँसी हँसते हुए कहा, "तुम मायके चली जाओ, पर मैं इस बुरी हालत में उस दरवाजे क्या मुँह लेकर जाऊँगा। मैं तो भगवान् का नाम लेकर यहीं पड़ा रहूँगा। अपने घर मान है तो सब जगह मान है। बेइज्जती की रोटी खाने से भूखों मर जाना कहीं अच्छा है।"

रानी ने दुखी होकर कहा, "महाराज जहां आप हैं, वहीं मैं हूं। मैं आपको अकेली छोड़कर कैसे जा सकती हूँ? लेकिन अब यहां ठिकाना नहीं है।"

राजा विक्रमादित्य ने कहा, "ठीक है। कहीं परदेश में चले चलेंगे। मेहनत-मजूरी करेंगे और पेट भरेंगे।

रानी ने कहा, "अच्छी बात है। आज रात को ही चुपके से यहाँ से निकल चलें।"

अंधेरा होते ही राजा-रानी चल पड़े। न कोई बात का पुछैया, न धीर का धरैया। सोचने लगे कि जायं तो कहां जायं। चलते-चलते उनके पैर जवाब देने लगे। थोड़ी दूर पर उन्हें एक झोंपड़ी दिखाई दी। वे हिम्मत बांधकर उसी ओर बढ़ चले। झोंपड़ी के द्वार पर पहुँचकर उन्होंने दरवाजा खटखटाया। अन्दर से एक बुढ़िया बड़बड़ करती हुई बाहर आई और क्रोध से बोली, "क्यों, क्या बात है? रात में भी किसीको चैन से नहीं सोने देते!"

रानी ने नम्रता से कहा, "माँ, बडी मुसीवत के मारे हैं, आज की रात हमें अपने घर में टिक जाने दो, सवेरा होते ही हम चले जायंगे। पर वुढ़िया के ऊपर राजा-रानी की परेशानी का कोई असर नहीं हुआ। वह गरजकर वोली, "रात भर घर में टिका लो ! वडे चले हैं मेहमान वनने ! चले जाओ, अपना रास्ता नापो। यह कोई सराय नहीं है।"

इतना कहकर उसने दरवाजा वन्द कर लिया। राजा-रानी मुंह ताकते रह गये। हार-झख मारकर वे भूखे-प्यासे एक पेड़ के नीचे पड़ रहे। भूख के मारे उनकी आत्मा कुलवुला रही थी और जाडे के मारे शरीर थरथर कांप रहा था। वे पेट में घुटने दिये रात भर वहीं ठिठुरते रहे। सवेरा होते ही वे फिर चल पडे।

दर मंजिल, दर मुकाम, दर मंजिल दर मुकाम, वे एक नगर में आये। वहां के राजा का सतखण्डा महल वन रहा था। देस-विदेस के मजूर काम पर लगे हुए थे। उन्हींमें राजा-रानी भी जा मिले और ईंट-गारा ढोने लगे। दिन भर खून-पसीना एक करते तव कहीं जाकर सूखी रोटी नसीव होती।

भगवान् ने जव विक्रमादित्य की यह दुर्दशा देखी तो उनका जी भर आया। वह इन्द्र से वोले, "इन्द्रदेव, वस करो। अव हो चुकी परीक्षा।"

परन्तु इन्द्र को इससे संतोष न हुआ। उन्होंने कहा, "भगवन्, यह क्या परीक्षा हुई ? कुछ और कठिन परीक्षा लीजिए।"

इन्द्र की निर्दयता पर भगवान् को वड़ा क्षोभ हुआ, पर उन्हें अपने भक्त की महिमा दिखानी थी। सो वह ब्राह्मण का भेस रखकर विक्रमादित्य के दरवाजे पर गये और गिड़गिड़ाते हुए वोले, "मैं वड़ा गरीव ब्राह्मण हूँ। कल वेटी की वरात आनेवाली है और घर में भूंजी भांग भी नहीं है। मांग-जांचकर व्याह कर रहा हूं। जो श्रद्धा हो, दे दो। भगवान् तुम्हें उसका चौगुना करके लौटायंगे।"

राजा लाचार होकर वोला, "श्रद्धा तो वहुत है, महाराज,

पर पल्ले कुछ हो तभी तो दूं। हाथ-पैर से करने का काम हो तो मैं तैयार हूं।"

रानी खड़ी-खड़ी सब सुन रही थी। उसकी आँखों में आँसू भर आये। आज यह पहला दिन था, जब कोई मांगनेवाला उसके द्वार से खाली हाथ लौट रहा था। उससे न रहा गया। वह राजा के सामने आई और बोली, "ठहरिये, अभी हम कंगाल नहीं हुए हैं। यह लीजिए मेरा हार, ब्राह्मण देवता को दे दीजिए। सबकुछ तो चला गया, पर यह हार ब्राह्मण की कन्या के लिए बच रहा है।"

राजा ने कहा, "यह हार तुम्हारी मां की धरोहर है। इसे तुम अपने पास ही रक्खो।"

रानी ने हँसकर कहा, "मेरी मां की धरोहर अबतक मेरे पास रही और मैं अब अपनी बेटी को दे रही हूँ।"

हीरे-जवाहरात से जड़ा हुआ हार देखकर ब्राह्मण की आँखें चौंधिया गईं। रानी की उदारता ने उसे आश्चर्य में डाल दिया। वह हार लौटाने का साहस न कर सका और रानी को आशीर्वाद देता हुआ चला गया।

मेहनत-मजूरी करते बारह बरस होने को आगये, पर राजा की गरीबी में कोई अन्तर नहीं आया। ईंट और गारा ढोते-ढोते उसके हाथों में ठेकें पड़ गईं, पैरों की बिवाइयां फट गईं और शरीर जर्जर हो गया। एक दिन जब वह काम कर रहे थे तो एक मजूर ने उन्हें पहचान लिया। राजा को दुःख होगा, इसलिए उसने उन्हें कुछ न बताया। वह बोला, "भैया, तुमने एक बात सुनी है?" राजा ने पूछा, "क्या?"

मजूर ने कहा, "यहां से पचास कोस पर एक राज्य है। वहां का राजा पुण्य मोल लेता है। सो तुमने कोई बड़ा पुण्य किया हो तो जाकर बेच आओ। मैं सच कहता हूँ, जरासी देर में मालामाल हो जाओगे।"

राजा लम्बी सांस लेकर बोला, "भैया, ऐसा भाग्य कहां है?

तकदीर में सुख होता तो घर की धन-दौलत ही क्यों चली जाती ? और, वह गई-बीती बात है। उसे कहने से क्या फायदा।"

मजूर ने गड़े मुर्दे उखाड़कर राजा को दुःखी करना ठीक न समझा। हिम्मत दिखाते हुए बोला, "मेरी बात मानो और एक बार वहां हो जरूर आओ।"

राजा ने कहा, "अच्छा, सोचूंगा।"

मजूर तो चला गया, पर राजा के मन में पुण्य बेचने की बात चक्कर लगाने लगी। रात को जब लेटे तो बात उनके पेट में न टिकी और उन्होंने रानी से कह डाली।

रानी खुशी से उछल पड़ी, बोली, "राजन्, तुम्हारे जैसा धर्मात्मा मेरी निगाह में दूसरा नहीं आया। तुम जरूर जाओ और अपने पुण्य बेच आओ। अब ऐसा लगता है कि हमारे दिन फिरने वाले हैं। बारह बरस बाद तो घूरे के दिन भी फिरते हैं। हम तो फिर भी आदमी हैं!"

दूसरे दिन सवेरे उठकर रानी ने राजा के लिये कलेवा बांध दिया और राजा यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में उन्हें एक कोढ़ी मिला। उसकी सारी देह में घाव हो रहे थे और उसमें बदबू आ रही थी। मक्खियां भिनभिना रही थीं और ऐसी जमकर बैठती थी कि कोढ़ी के उड़ाये नहीं उड़ती थीं।

विक्रमादित्य ने जब आदमी का ऐसा घिनौना रूप देखा तो उन्हें बड़ी दया आई। वह उसके पास गए। उसके घावों को अच्छी तरह साफ किया और अपनी धोती में से पट्टियां फाड़कर उनपर बांध दीं। उसके शरीर पर से मक्खियां उड़ाते हुए बोले, "भैया, तुम्हें बड़ा कष्ट है।"

कोढ़ी ने कहा, "कष्ट तो है सो है ही, पर भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है। कुछ खाने को हो तो दे दो।"

राजा के पास चार रोटियां थीं। उन्होंने सोचा कि कोई बात नहीं, दो-दो बांट लेंगे। उन्होंने अपने हाथ से उसे रोटियां खिलाई, पर दो रोटियों में उसका पेट जब नहीं भरा तो बची

हुई दो रोटियां भी उन्होंने उसे खिला दीं। कोढ़ी ने राजा को बार-बार असीसें दीं। राजा भूखे ही वहां से चल दिये, पर कोढ़ी की सेवा से उनके पैरों में नई ताकत आ गई। उन्हें अपनी भूख का ध्यान भी न रहा।

चलते-चलते अचानक उनका हाथ आटे की पोटली पर पड़ा तो उन्हें याद आया कि उनके साथ कुछ आटा है। उन्होंने इधर-उधर से कुछ लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलाई और दो अंगे सेक लिये। जैसे ही वह खाने बैठे कि एक कुत्ता हांपता हुआ वहां आया और उनके सामने पूंछ हिलाने लगा। राजा ने एक अंगा उसके सामने डाल दिया। कुत्ता इतना भूखा था कि झट-पट उसे चट कर गया और फिर राजा की ओर ऐसे ताकने लगा, जैसे वह अभी और भूखा हो। राजा ने दूसरा अंगा भी उसे खिला दिया। कुत्ता चला गया। राजा का मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उन्होंने ठण्डा पानी पिया। उन्हें लगा, जैसे उनकी भूख-प्यास सब दूर हो गई। वह आगे चल दिये।

चलते-चलते उसी राजा के घर पहुंच गये। दरबान उन्हें राजा के पास ले गया। राजा ने विक्रमादित्य को एक डिबिया दी और कहा, "तुमने जो पुण्य किये हों, उन्हें सोच लो। इस डिबिया के शीशे में तुम्हें सब दिखाई पड़ेंगे। विक्रमादित्य ने मन्दिर, शिवाले और धर्मशालाएं बनवाने की बात सोची, साधु-महात्माओं की आवभगत की बात याद की, पर डिबिया के शीशे में कुछ भी दिखाई न दिया। वह बड़े लज्जित हुए और राजा से बोले, "राजन्, मैंने यहां आकर भारी भूल की है। मैंने कोई पुण्य नहीं किया। मुझे आज्ञा दीजिए। मैं चलता हूं।"

राजा ने कहा, "घबराते क्यों हो ? मैं अभी तुम्हारे पुण्यों को तुम्हारे सामने दिखाता हूँ।"

यह कहकर राजा ने वह डिबिया खोलकर विक्रमादित्य के हाथ में दे दी। विक्रमादित्य के अचरज का ठिकाना न रहा। उन्होंने देखा कि वह कोढ़ी की सेवा कर रहे हैं और कोढ़ी की

आँखों में शांति झलक रही है। उन्होंने यह भी देखा कि वह भूखे कुत्ते को खाना खिला रहे हैं। इसके बाद उन्होंने देखा कि रानी अपना जड़ाऊ हार ब्राह्मण को दे रही है। पुण्य खरीदनेवाले राजा ने जब यह सब आँखों से देखा तो वह अपने सिंहासन से नीचे उतर आया। उसने विक्रमादित्य के चरणों में सिर रख दिया। बोला, "आज तुम जैसे महात्मा के दर्शनों से मेरा जन्म सफल हो गया। इन तीन पुण्यों के बदले मैं अपना सारा राजपाट तुम्हें देने को तैयार हूं।"

राजा विक्रमादित्य जैसे नींद से जाग पड़े। अज्ञान का पर्दा उनकी आँखों से हट गया। उनकी समझ में आगया कि धन-दौलत, राजपाट, सुख-सम्पत्ति अच्छे क र्मों के मुकाबले में कुछ मूल्य नहीं रखते। उन्होंने निश्चय किया कि वह गरीब रहकर जीवन बिता देंगे, पर आगे अपने पुण्यों को नहीं बेचेंगे। राजा के बार-बार अनुरोध करने पर भी वह अपने निश्चय पर अडिग बने रहे और अपने घर की ओर चल दिये।

रानी के पास पहुँचे तो देखते क्या हैं कि उनके पुराने मंत्री वहां मौजूद हैं। राजा को देखते ही वे उनसे क्षमा मांगने और राज्य लौट चलने का आग्रह करने लगे। उनके बहुत कहने पर विक्रमादित्य खुशी-खुशी अपने राज्य में लौट आये। बाग-बगीचों में फिर फूल महकने लगे, फसल लहलहा उठी, नदी-तालाब लबालब भर गए और सारी सेना राजा के हुक्म पर नाचने लगी।

राजा इन्द्र अपनी करनी पर बड़े पछताए और भगवान् से बोले, "भगवन्, विक्रमादित्य के बराबर सचमुच इस दुनिया में कोई नहीं है।"

: १५ :

दिल्लगीबाज़

एक गांम में एक आदिमी सब सूं हर बखत दिल्लगी कत्तु रहतुओ। सब नैं वाका नाम दिल्लगीबाज रखि छोड़ौ ओ। वु इतनी जादा दिल्लगी कत्तुओ कै वाके हँसी-मजाक सूं सबरो गांम तंग आइ गयौ ओ। एक दिना सबनैं मिलिकैं सलाह करी कै कैसऊ जा दिल्लगीबाज की अकल ठिकाने लगामनी चैयैं। कै तौ जि दिल्लगी करिबौ छोडै, नईं तो हमारो गांम छोड़ि कैं अंत कहुं चलौ जाइ। जई बात सबने बाके चाचा सूं कैह दई, कै अपने भतीजे कूं समझाइ लेउ, नईं तो हम गांम ते निकार पानी पीइंगे।

दूसरे दिन चाचा दिल्लगीबाज के घर गए और बासूं सबरी बात कह डारी और बोले, "बेटा, गांम बारेनु सूं दुसमनी बांधिबे में का फाइदा ऐ? तू दिल्लगी करिबौ छोड़ि न दै।"

दिल्लगीबाज ने कई कै अबई का ऐ चाचा, अबतक तौ मैं झूठी दिल्लगी कत्तु रहौ ऊं। अब सौ रुपया दिब्बाओ तौ सांची दिल्लगी करिकैं दिखाउंगो।

चाचा ने दिल्लगीबाज की बात सबके सामने कै दई। गांम बारेन नै कई कै सौ रुपया तो खच्च हुंगेई, पर जेऊ देखि लें कै सांची दिल्लगी कैसो होइगी। सबनें जुरि मिलि कै सौ रुपैया दिल्लगीबाज के चाचा के हाथ पै धर दये और बोले कै, "कहियौ वा दिल्लगीबाज सूं, कै दिखावे अपनी सांची दिल्लगी को बानिगी।"

चाचा तुर्त ई मांसू दिल्लगीबाज के घर आये और सौ रुपया बाई दै कैं बोले, "बेटा, सबरो गांम तेरी सांची दिल्लगी देखिबेकूं राजी है गयौ ऐ। जि लै सौ रुपया और दिखाइ अपनी सांची दिल्लगी।"

दिल्लगीबाज मनईंमन भौत खुस भयौ और अच्छौ कै कें अपने

इकैं अपनी वहू सूं बोलौ, "सुन्ति नांऐ! चाचा सौ रुपया दै और कै गए ऐं अबकैं वू सबकूं सांची दिल्लगी करके दिखाइ देखि आज सांझ कूं जब पानी भरिबे जाइ तौ कूआ पै और ा के सामनें म्हौं बनाइ कैं ठाड़ी है जैओ। वे पूछेंगी कै भैना त ऐ, चौं उदास ऐ? तौ आंखिन में आंसू भरि कैं कहियो कै ाऊँ दिल्लगीवाज बीमार ऐं। उनकी हालति भौतु खराब भौतु जानौ जो रात अच्छी तरह कटि जाय।"

सांझ कू दिल्लगीवाज की वहू नें ऐसौई करौ। दिल्लगीवाज ोमारी की बात सुनि कै लुगाई कैन लगीं, "हाइ, दिल्लगीवाज रौ अच्छौ है जाय। बड़ौई अच्छौ आदिमी ऐ। ऐसौ हसोड़ कोई चांऐ कैसेऊ रंज-फिकिर में होइ, हँसाइ पीछौ तु ऐ।" दिल्लगीवाज की वहू अबि जोर-जोर सूं रोइबे लगी। समझायौ, "रोवति चौं औ, सान्ती रक्खौ, भगमान सब करैंगौ।"

रोवति-पीटति दिल्लगीवाज की वहू कलसा भरि कैं घर और सब हाल दिल्लगीवाज कूं कह सुनायौ।

राति है गई ई। खाइ-पी कैं सब पर रहे ए। दिल्लगीवाज रोस में एक मुसलमान भौतु दिनन ते दुखारी ओ। राति मरि गयौ। रातिई में सब जाइ कैं वाइ गाढ़ि आये। ल्लगीवाज कूं पतौ चलि गयौ। वु मुर्दा के संग चुपकैं-चुपकैं के संग लगि लयौ। जब वाने देखो कै सब मुर्दा कू गाढि कैं ट गए तो फावरौ लै कैं वाने कबर खोद डारी और मुर्दा बाहिर निकालै कैं अपने घर लै आयौ। मुर्दा कूं लाइ कै में पराइ दओ और उस्तरा निकारिकैं वाकी दाढ़ी-मोछें मूंड़ि डारीं। चारों लंगसूं वाके खूब अच्छी तरह कपड़ा उढ़ाइ ो। फिर अपनी वहू सूं बोलौ "कै मैं तो भीतर दुबकौ जातुऊं ोर तू खूबि चिल्लाय-चिल्लाय कै रोइबे लगि।"

दिल्लगीवाज की वहू खूब जोर-जोर सूं रोवन लगी। रोगा-पीटी सुनी तौ सब समझि गए कै दिल्लगीवाज खतम

है गयी। लुगाई कहवे लगीं कै दिल्लगीवाज की वहू सांचें कहतिई कै सवेरौ पकर लैं तौ भीति जानिग्रौ।

सब जनी दिल्लगीवाज के घर ग्राई ग्रौर ग्रांगन में बैठि कें रोइवे लगीं। दिल्लगीवाज की वहू छाती पीटि-पीटि कें रोइ रही ई। एक लुगाई नें रोवत-रोवत दिल्लगीवाज की चादर हटाइ कें ग्रखीरी वखत वाकौ म्हौं देखिवौ चाहौ, पर दिल्लगीवाज की वहू नें वाकौ हाथ पकर लयौ ग्रौर रोवत-रोवत बोली कै इनकौ म्हौं मति खोलौ। मत्ती वखत कह गए ऐं कै "मेरौ म्हौं कोई न देखै। जो मेरो मरे मराये कौ म्हौं देखैगौ, वाके घर कौ सत्यानास है जाइगौ।"

काऊ कूं ऐसी का परी ई ग्रपनौ सत्यानास करवाइवे की। वाने झट्टई चादर जौं की तौं उढ़ाई दई। ग्रादिमी जुरि ग्राये ग्रौर काठी बनाइ कै मुर्दा कूं फूकिवे लै गये। जैसें-तैसें दिल्लगीवाज की वहू कूं चुप करवाई कें सब जनी अपने-ग्रपने घर आई।

गांम सूं नैक दूर ई एक मंदर ग्रो। वामें एक पुजारिन रहतिई। राति को वखत ओ दिल्लगीवाज मंदर में पौंहचौ। पुजारिन सूं बोलौ, "पुजारिन काकी, नैक ग्रांच तौ दै। चिलम पीउंगो।"

पुजारिन की घिग्घी वँध गई डर कै मारें। फिर हांम समारि कै वोली "को ऐ, वेटा दिल्लगीवाज!"

"हां, काकी मैंई हूँ दिल्लगीवाज।"

पुजारिन अचंभे में वोली, "वेटा वु तो मरि गयौ ओ, फिर ग्रां कैसी आई गयौ?"

दिल्लगीवाज बोलौ "का वताऊं, काकी, मैं सूदौ वैकुंठ सूं आइ रहौ ऊं। अरे काकी, का कहूं वैकुंठ के ठाठ की वात। वड़े-वड़े पलिका विछे रहत ऐं, रोज छिरकाव होतु ऐ। खूब वाग-वगीचा ऐं। वारह वजे तक परी नाचति गावनि ऐं। और जव मैं पर रहतऊं तौ पांय दवावति ऐं। हाय काकी, गुदगुदे गद्दन पै ऐसे चैन की नींद ग्रावति ऐ कै एक नींद में सवेरो है जातु ऐ।"

पुजारिन कै म्हौं में वैकुंठ की वात सुनि कैं पानी भरि ग्रायौ ग्रौर वोली, "वेटा, मोऊं ऐ लै चलि वैकुंठ कूं। गांम वारे मोह ग्राएं

ई जातएं। कोई कहैगी काकी पानी प्याइ, कोई कहैगी काकी नैक आंच दै। मैं तो मरी जातिऊं जा भावई भोगत भोगत।"

दिल्लगीवाज बोलौ, "तूऊ कैसी बातें कत्तिऐ काकी। वैकुंठ में जगह ऐसे ई नांइ मिल जाति। सौ रुपैया दै तौ देखुंगो कोसिस करिकैं। खाली जगह भई तौ कल्लि जाई खन आइ कै बताइ जाऊं-गो।" इतनौ कहि कै दिल्लगीवाज चलौ गयो।

दिल्लगीवाज के जाइवे के नैक देर बाद मंदिर में दिल्लगी-वाज के चाचा आये। उन्हें देखत ई पुजारिन बोली, "लालाजी, एक वात सुनी तुमनै ? अबई ञ्यां दिल्लगीवाज आयौ ओ।"

चाचा वोले, "का पुजारिन तुमारी मति मारी गई ऐ! दिल्लगीवाज भला मरौ मरायौ ञां कैसै आइ सकतऐ!"

पुजारिन बोली, लाला, मैं झूठ चौं बोलूंगी। मोपै तो वु सौ रुपैया लै गयौ ऐ और कह गयौ ऐ कै मेरे लये वैकुंठ में जगह करवाइ देगौ। मैं ऊंनौंत हैरान है गई हूं। वु कहतुओ कै वैकुंठ में बड़े अराम

चाचा ने जब वैकुंठ के हाल सुने तो बोले, "तू कैसें जाइगी। पैलें मैं जाऊंगो। मैं तौ बाकौ सगौ चाचा ऊं। मोइ पैल जगह दिखावैगो।"

पुजारिन ने कई कै "लाला इत्तने गुस्सा चौं होत ओ। कल जाई वखत दिल्लगीवाज फिर आवैगौ, तब सब अपनी बात कह दीजौ।" चाचा चिलम भरि कैं मांसू चले गये।

दूसरे दिना राति कूं पुजारिन के घर पौंचे तो मां दिल्लगीवाज ऊ मौजूद ओ। खूब गुस्सा में भरि कैं दिल्लगीवाज कूं वोले "जि पुजारिन तेरी का सगी-सोदरी ऐ, जो जाइ तौ तू वैकुंठ कूं लै जागौ और मोसूं तैनैं जिकिर तक नांइ करी।"

दिल्लगीवाज ने चाचा कूं समझावौ कै, "चाचा जानै सौ रुपैया दए ऐ। बड़ी मुसकिलन तें बाके लयें जगह करवाइ कै आयौ हूं। तैनौं नाम न लिखवायौ होतो तौ तुम्हैं ई लै चलतो।"

"नाम-धाम की बात मैं कछु नांय जान्तु।" अंटी में सूं वो दो

सौ रुपैया निकारि कैं वोलौ, "जि लै दो सौ रुपैया। जानै सौ दयौ ऐं मैं दो सौ देतुऊं, पर जगह मेरे लयै वैकुंठ में तोड़ करवामनी परैगी।"

दिल्लगीवाज ने रुपैया अपनी गाँठि करे और वोलौ, "अच्छौ, कल्लि राति कूं ठीक वारह वजे तुम दोनों मोइ जाई जगह तैयार मिलियौ। मैं तुम्हैं वैकुंठ सूं लैवे आउंगो।" इतनी कहि कैं वु चलौ गयौ।

दूसरे दिना राति कूं पुजारिन और चाचा दिल्लगीवाज के आइवे कौ पैंड़ो देखि रहे एं।

सांझ कूं कुम्हार मट्टी के वासन बेचि-वाचि कै घर आयौ। गधा वानैं वाहिर छोड़ दये ए। अंधेरी राति ई। दिल्लगीवाज नें का काम करौ कै एक गधा पै गौन रखि कै मांसू चुपचाप चलतौ बनौ। कुम्हार कूं कछु पतौ ई न लगौ। ठीक वारह वजे दिल्लगीवाज मंदर के पास आयौ। गधा कूं वाहिर छोड़िवे कै मंदर में गयौ। पुजारिन और चाचा उहां सजे वैठे ए।

दिल्लगीवाज ने राम-राम करी और कही कै "जल्दी करौ, नई वैकुंठ में जगह घिर जाइगी। दिल्लगीवाज ने दौनोंनु की आंखिन सूं पट्टी वांधी दई और कई कै डरपियौ मती विमान में। विमान जव चलैगौ तौ दचका लगंगे, और कवहूं-कवहूं वामें से गधा की-सी अवाज निकरैगी।"

दौनोंनु की आंखिन सूं पट्टी वांधि-वांधि कै, उन्हैं विमान में वैठारवे कूं पकरिकै वाहिर लै आयौ। गौन के एक माँउ पुजारिन कूं वैठारि के गधा कौ कान वाके हाथ में दै दयौ। दूसरी ओर चाचा कूं वैठारि कै गधा की पूंछ वाके हाथ में पकरिवाइ कैं वोलौ, "जि विमान कौ डंडा ऐ, जाइ खूब कसि कै पकर रहियौ, कऊँ ऐसौ न होइ कै गिरिगिराय परौ।"

पुजारिन गधा के म्हों माँऊँ करि क वैठि गई और चाचा पूंछ माऊं म्हों करि कै वैठि गयौ।

अव दिल्लगीवाज गधा कूं रेदत-रेदत एक खेत में लै आयौ

और वाइ कूआ के भौरे पै लाइ कैं ठाड़ौ कर दयौ। अब दिल्लगीवाज ऊपर सूं गधा कूं मारै तो रैंकत-रैंकत नीचे कूं दौरे और नीचे सूं मारै तो ऊपर कूं दौरै। ऊपर सूं नीचै और नीचै से ऊपर कत्त कत्त चारि वजि गए। पुजारिन और चाचा कौ गधा पै वैठे-वैठे वुरो हाल है गयौ। दोनों वेर-वेर चिल्लात ए, "छेटा दिल्लगीवाज कितनी दूर और ए वैकुंठ ? हम तौ विमान में वैठे-वैठे हारि गये।"

दिल्लगीवाज वोलौ अव काए। अव तो मार लई लड़ाई। मांसू गधा कैं हांकि कूं चाचा की पौरि में लै जाइ के ठाड़ौ कर दयौ और दोनोंनु सूं वोलौ कैं वैकुंठ आइ गयौ। वैकुंठ के राजा धरमराज एं। अवाज देउ तुम्हें उतारि कै वैकुंठ में भीतर लै जांय।

पुजारिन और चाचा दोनों चिल्लाइ चिल्लाइ कैं धरमराज कूं वुलाइ रहे ऐ "ओ धरमराज ! हम विमान में वैठे एं, हमें वैकुंठ में लै जाओ। ओ धरमराज, जल्दी आओ।"

चाचा के लड़िका कौ नाम ऊ धरमराज ओ। अवाज सुनि कैं वाकी वहू जगि परी। धरमराज कूं जगाइ कैं वोली, "ऐसौ लगतुए कै तुमाए चाचा टेर रहे एं। वु नींद में ओ, सो वोलौ, "का वावरी ऐ ? राति में चाचा चौं आवाज दिगे।"

'धरमराज ! धरमराज' चिल्लावत-चिल्लावत दोनोंनु के गरे परि गये। चाचा कू वड़े जोर कौ गुस्सा आयौ और चिल्लाइ कैं फिर वोले, "ओ धरमा, हमें लै चौं नांइ जातु वैकुंठ में। विमान में वैठे-वैठें हम मरे जातएं।"

चाचा अपने वेटा सूं ऊ धरमा कहि कें वोलौ कत्त ए। वहू ने फिर अवाज सुनी तो वोली, "ऐसीऊ का नींद। कव की जगाइ रही ऊं, पर सुंतई नाएं। उठि कै देखौ तौ नैक चाचई की अवाज मालिम पत्ति ऐ।"

अवाज पहचानि कै धरमा वाहिर आयौ तौ पौरि में देखतु का ऐ कैं पुजारिन और चाचा आंखिन सूं पट्टी वांधे एक गधा की कान पकरैं और दूसरौ गधा की पूंछ पकरैं गधा के

ऊपर गौन में वैठे-वैठे चिल्लाइ रहे ऐं कि हमें जल्दी वैकुंठ में लै जाओ।

धरमा कूं गुस्सा आयौ और वाने दौनों जनेन की आंखें खोल दईं। वापकूं धक्का देकै वोलौ, "चौं सठियाइ गएऔ! गधा पै वैठिकै चिल्लात औ कै विमान में वैठे ऐं, वैकुंठ कूं लै जाओ। पुजारिन की ऊ वाँह पकरि कै गौन में सूं निकारौ और ढकेला देकैं वोलौ, "चलरी पुजन्निया अपने घर, चली है गधा पै वैठि कैं वैकुंठ कूं।"

पुजारिन और चाचा की आंखिन की पट्टी जव खुली तौ गधा कूं देखि कैं दौनों वड़े हैरान भये। पुजारिन रोइवे लगी कै हाय दिल्लगीवाज मोइ लूटि लै गयौ। पुजारी के अगार के मोपै वेई सौ रुपया ए, सोऊ कम्मखत ने मौपै न छोड़े।"

चाचा वोले, "हाय हाय, मेरे तो दो सौ रुपया ठगि लये।"

दूसरे दिना दिल्लगीवाज सवके सामनें आयौ तो सव वाके पीछें परि गए कै तुमने रुपिया चौं ठगे ?"

दिल्लगीवाज वोलौ-"कै मैंने तो पैलैंई कह दई ई कै मैं अव कै सांची दिल्लगी करिकें दिखाऊंगो। अव रुपया चौं दऊं। रुपिया अव मेरे है गये। गांम वारेन नें हार मान लई और वोले, "भइया हम हारे तुम जीते।"

दिल्लगीवाज हँसत-हँसत अपने घर आइ गयौ।

●